

Title: Discussion regarding proposal to set up Special Economic Zone in Nandigram, West Bengal and consequent large scale violence.

MR SPEAKER: Now I come to Item No.18 Hon. Members, we are now going to take up the Discussion under Rule 193 on the issues arising out of certain events in Nandigram in West Bengal. I am thankful to all the hon. leaders for taking the trouble of arriving at a consensus as to the text of the matter in response to my request to them. I deeply appreciate such cooperation.

There have been several notices on this issue given at the same time and according to rules, a ballot should have been held to determine who will initiate. However, in response to the wishes of the hon. Members of the major opposition party, I have decided to invite the hon. Leader of the Opposition to initiate the debate. I know that our hon. Members are fully conscious of the constitutional limitations in the subject matter of today's discussion. I appeal to all to discuss this matter in a manner which will help in the resolution of the issue. And, I am in no manner of doubt that the matter will be discussed with a full sense of responsibility. [R17]

My appeal to each hon. Member is that they make submissions and others should listen and then reply to it when their turns come and say whatever they want to say. Once again, I look forward to receiving cooperation from all sides in this House, especially during this discussion which is of highest public forum. The time allotted for this discussion, as usual, is two hours.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने इस महत्वपूर्ण चर्चा के लिए 'लॉट्स' डालने की सामान्य प्रवृत्ति को छोड़कर, विपक्ष की ओर से मुझे इस चर्चा को आरम्भ करने का अवसर दिया। इस महत्वपूर्ण चर्चा पर अपने विचार रखने से पहले मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूँगा क्योंकि आज प्रातःकाल जब मैंने अखबार देखे, प्रधानमंत्री ने नन्दीग्राम के बारे में कुछ कहा है। मैं उन्हें बधाई देना चाहूँगा कि विदेश जाते हुए उन्होंने विमान में इस प्रश्न के महत्व की ओर पूरे देश का और संसद का ध्यान आकृष्ट किया है। एक प्रकार से उनका यह वक्तव्य इस बात पर भी बल देता है कि इस प्रकार के प्रश्न पर संसद चर्चा करे, यह स्वाभाविक है और जरूरी है।

उन्होंने कहा है कि - "I sincerely hope that the State Government will be able to take necessary steps to restore confidence in the people through the effective deployment of security forces. I understand the spontaneous outpouring of grief and anguish over the issue as expressed by artists and intellectuals in Kolkata. I hope the State Government will take note of this." मुख्यमंत्री ने एक रिस्पांस भी दिया है, चाहे पार्टी ने कोई और रिस्पांस दिया हो। यहां पर उसकी अभिव्यक्ति हो जायेगी कि जो पार्टी वहां पर शासन कर रही है, वह मुख्यमंत्री के रिस्पांस से संतुष्ट है या पार्टी के प्रवक्ता ने जो बात कही है, उससे संतुष्ट है। लेकिन आपने इस चर्चा के लिए जो गाइडलाइंस अपनी ओर से बताई, मैं उनका पूरा पालन करने की कोशिश करूँगा।

MR. SPEAKER: Thank you.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं चाहूँगा कि इस चर्चा का उपयोग केवल एक-दूसरे पर मात्र प्रहार करने के लिए न हो, बल्कि इस प्रकार की स्थिति कहीं पर भी, कभी भी पैदा न हो, इसका क्या प्रबंध किया जा सकता है, यह चिंता करने की बात है। मैं समझता हूँ कि नन्दीग्राम में जाने पर सहज रूप से यह सबको लगता है।

यह एक साधारण बात नहीं है। वहां की घटनाएं कोई अभी की नहीं हैं, जो अक्टूबर-नवम्बर में हुईं। यह सिलसिला वहां कई महीनों से चल रहा है। वहां पर जो भी कुछ घटनाक्रम हुआ है, उसकी शुरुआत वर्ष के आरम्भ में हुई थी। मैं स्वयं मार्च के महीने में वहां गया था और अब फिर पिछले सप्ताह गया। दोनों बार की मेरी यात्रा में पूरे एन.डी.ए. की पार्टियों के साथी मेरे साथ गये थे। लेकिन इस बार एक बहुत बड़ा अंतर था कि जब मैं मार्च के महीने में वहां पर गया तो बहुत सारे लोग हमसे आकर मिलते थे। बातें करते थे और खुलकर बताते थे कि क्या हुआ, कैसे हुआ, कैसे हमारे ऊपर अत्याचार हुआ। इस बार आतंक का एक ऐसा वातावरण था कि अगर कोई आकर मिलता था तो उसे रोकने वाले उसके परिवार के ही लोग होते थे। मेरे साथ दूसरे सदन से सुषमा जी भी गई थीं, तो उनसे जब महिलाएं मिलती थीं और बलात्कार की चर्चा करती थीं तो एक महिला को उसके घर का लड़का उठाकर ले गया कि ऐसा क्यों करती हो [b18]? अपना नाम मत बताना, किसी टी.वी. वाले को या किसी प्रेस वाले को अपना फोटो मत लेने देना। यह जो आतंक का वातावरण इस बार मैंने देखा, उसके कारण मुझे लगा कि इस बार का मामला बहुत गंभीर हो गया है। कैसे हुआ है, उसका थोड़ा सा उल्लेख मैं करूँगा। मैंने जैसा कहा कि मैं नहीं चाहता हूँ कि यह केवल एक-दूसरे को दोष देने का एक प्रकरण बन जाए। यह मैं अपने साथियों को भी कहूँगा। मुझे आकर वामपंथी पार्टी के कई लोग कहते हैं कि आप लेफ्ट मत कहिए। आप सीपीएम का नाम लीजिए। आप लेफ्ट मत कहिए। मुझे ऐसा कहने वाले इस लेफ्ट एलायंस के अलग-अलग पार्टियों के लोग हैं... (व्यवधान)

SHRI GURUDAS DASGUPTA (PANSKURA): Can I know the name?

SHRI L.K. ADVANI : I will not name.

SHRI HARIN PATHAK (AHMEDABAD): It has come on television. ... (Interruptions)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : Anonymity is no virtue.

SHRI L.K. ADVANI : It is not anonymity. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Mr. Swain, this is not right.

MR. SPEAKER: I request all hon. Members to see that there is no cross talk.

SHRI L.K. ADVANI : Sir, he put a right question and he is justified in putting that question, but it is not right for me to name him. That is my limitation.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : But is it right for you to make that statement?

SHRI L.K. ADVANI : Yes, it is important. इसीलिए मैं लेफ्ट का नाम नहीं लूंगा। चाहे तो आपकी पार्टी का नाम ले सकता हूं...(व्यवधान)

श्री गुरुदास दासगुप्त : ले लीजिए।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं ले लूंगा। मैं इस बात पर आता हूं कि मैं जहां प्रधानमंत्री जी के वक्तव्य का स्वागत करता हूं वहीं मैं इस बात का भी जिक्र करूंगा कि परसों, सोमवार के दिन यहां सेन्ट्रल हॉल में श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्मदिन के अवसर पर पुष्प अर्पित करने के लिए हम सब लोग एकत्रित हुए थे, और सदन के नेता से तब मेरी पहली बात हुई। मैंने कहा कि नंदीग्राम के संदर्भ में एनडीए ने तय किया है कि हम एक स्थगन प्रस्ताव देंगे जोकि हमने दिया। और अध्यक्ष जी ने स्वयं कहा था कि स्थगन प्रस्ताव तो हो सकता है in respect of the failure of the Central Government, it cannot be in respect of the failure of a State Government. मैंने कहा कि सही बात है और उसकी ड्राफ्टिंग मैंने उसी हिसाब से करके अध्यक्ष जी को दिया था। मैं नहीं जानता हूं कि यह एडमिट होगा या नहीं होगा। उस पर सदन में कितने लोग समर्थन में खड़े होंगे कि नहीं होंगे। लेकिन मैंने अपने सहयोगी मल्होत्रा जी को यह भी कहा कि आप अध्यक्ष जी को यह भी बता दें कि हमारा कोई विधा पर आग्रह नहीं है। डिवाइस एडजर्नमेंट मोशन हो, इस पर आग्रह नहीं है। हमारा इस बात पर आग्रह है कि नंदीग्राम की चर्चा सदन में जरूर होनी चाहिए। वह चाहे किसी रूप में हो।

MR. SPEAKER: Advaniji, may I interrupt you for a second? As soon as this matter was raised even before the House started its proceedings on the 15th, I said, 'I will allow a discussion only in a proper form and please do not insist on an Adjournment Motion'.

SHRI L.K. ADVANI : This is exactly what I am saying.

MR. SPEAKER: Therefore I had said that.

SHRI L.K. ADVANI : This is what I had said from the very beginning. Otherwise, I could have come to you and pointed out to you why an Adjournment Motion is possible, but I did not go into it.

MR. SPEAKER: I am very happy that in this atmosphere this discussion is taking place now.

SHRI L.K. ADVANI : This is what I said from the very beginning and I had said that to Malhotraji. When Pranab da, the Leader of the House, spoke to me that very moment, he said that we also are of the opinion that a discussion must be held and, I believe, he took an initiative for that. He spoke to some other Parties also. Of course, he had to go away that night and the matter had been continued yesterday.[R19]

मुझे इस बात का संतोष है कि कल और परसों जो गतिरोध उत्पन्न हुआ, वह गतिरोध अब समाप्त हो गया है और इस विषय पर मैं चर्चा शुरू कर रहा हूं।

MR. SPEAKER: No more *gatirodh*!

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, मैं ऑब्जियेक्शनी यह कहूंगा कि जो बात कही गई कि किसी सूत्र में इस चर्चा के लिये नन्दीग्राम नाम नहीं आयेगा, तब मैंने कहा कि अगर किसी सूत्र में नन्दीग्राम नाम नहीं आयेगा तो गतिरोध किसी सूत्र में समाप्त नहीं होगा। मुझे खुशी है कि नन्दीग्राम का नाम इसमें आया है, चाहे जिस ढंग से आया हो। I would have liked it to be different. We are not discussing only SEZs. What has happened in Nandigram goes far beyond the issue or different view points on the question of SEZ. हम लोग SEZs पर डिस्कशन कर चुके हैं। लेकिन पार्टियामेंट में डिस्कशन के लिए केन्द्र से जुड़ा कोई न कोई पहलू होना चाहिए- चाहे सीआरपीएफ का उल्लेख हो, चाहे SEZs लाया जाये, या कोशिश यह हुई कि नन्दीग्राम का उल्लेख किये बिना, चाहे देशभर में नवसलवाद की समस्या या देश में फार्मर्स की समस्या पर चर्चा हो- तब मैंने कहा कि अगर ऐसा करना है तो गतिरोध समाप्त करने का यह कोई तरीका नहीं है। मुझे इसलिये खुशी है कि जिस-जिस ने इस ड्राफ्ट को बनाने में योगदान दिया, मैं उन सब के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : हमें भी थोड़ा कैंडिट दीजिये।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, मुझे क्षमा कीजिये। उसके बारे में मैं अलग से कहूंगा और मुझे जो कहना होगा, मैं कह दूंगा लेकिन मैं यह भी कहूंगा कि आपने कल जो बयान दिया था, उससे दुनिया को क्या लगता है। मैं सोचता हूं...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: That applies to all sections.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : चूंकि आपने बात की है, इसलिये मैं कह देता हूं कि अगर इस सदन में नन्दीग्राम पर चर्चा नहीं होती तो न केवल नन्दीग्राम में, न केवल पश्चिमी बंगाल में लेकिन देश के बहुत सारे भागों में बहुत लोगों में यह भावना होती कि नन्दीग्राम जैसा बड़ा कांड हो जाए और संसद में उस पर चर्चा न हो। They do not understand the rules. But the fact is that if this discussion had not taken place, it would have lowered the Parliament in the esteem of the people of the country. इसलिये संसद के सम्मान के लिये आवश्यक है कि यदि इस प्रकार की घटनायें कहीं भी हों, उन पर चर्चा जरूर होनी चाहिये और उस पर खुलकर चर्चा होनी चाहिये। यह कोई न कहे कि NANDIGRAM शब्द उस में नहीं होगा और यहां कहा गया कि अगर यह शब्द होगा तो हम मोशन स्वीकार नहीं करेंगे...(व्यवधान)

SHRI RUPCHAND PAL (HOOGHLY): Just a minute!

SHRI L.K. ADVANI : I am not yielding...(Interruptions)

MR. SPEAKER: He is not yielding.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं इतना कहूंगा कि यह सदन सत्य तक पहुंचना चाहेगा और हमारे यहां सत्य को 'शिव' कहते हैं। और शिव तक पहुंचने के लिये नन्दी को पार करना ही पड़ता है। सोमनाथ जी यहां बैठे हुये हैं।

अध्यक्ष महोदय : पर आप लोग ऐसा मत कीजिये कि हमें तांडव नृत्य करना पड़ जाए।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, मेरे जीवन में सोमनाथ नाम के व्यक्ति का ही नहीं, बल्कि सोमनाथ नामक स्थान का और मन्दिर का भी बहुत महत्व है।

अध्यक्ष महोदय : आपने हमें स्वीकार किया, उसी वास्ते यहां आये।

मोहम्मद सलीम (कलकत्ता - उत्तर पूर्व) : पहले सोमनाथ से अयोध्या तक, फिर सोमनाथ तक...(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, इन्होंने अयोध्या का जिक्र कर दिया। इसलिये जो बात मैं आखिर में अपने ऑपेरेटिव पार्ट में कहने वाला था, अभी कह देता हूं...(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : उसके बाद नन्दीग्राम..

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : क्योंकि हमारे मित्र श्री बसुदेव जी ने जिक्र किया है। इसलिये अभी कह देता हूं कि चाहे अयोध्या की समस्या हो, चाहे गोधरा की समस्या हो, चाहे गुजरात के दंगे हों, यहां सदन से ऑल पार्टी डेलीगेशन भेजे गये हैं...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: 1984 के दंगों के लिये...

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : 1984 के दंगों में वहां जाने की जरूरत नहीं पड़ी लेकिन इन तीन स्थानों के लिये ऑल पार्टी डेलीगेशन गये थे। इसलिये मेरा सुझाव होगा जिसे आखिर में रिपीट करूंगा कि इस बार नन्दीग्राम के बारे में पूरी सत्ताई जानने के लिये एक ऑल पार्टी डेलीगेशन जाना चाहिये ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: I am appealing to all sections of the House. He has made a suggestion. During your speech, you may respond or may not respond.

[r20] (Interruptions)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : It is not true. No All-Party Delegation was there....(Interruptions)

MR. SPEAKER: You reply to it when you will speak.

(Interruptions)

MR. SPEAKER: I would not allow any other interruption.

(Interruptions)

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA (SOUTH DELHI): I was a Member of that delegation....(Interruptions)

श्री बसुदेव आचार्य : आप सब नहीं बोल रहे हैं। अयोध्या में नहीं गया था आल पार्टी डेलीगेशन। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Hon. Members, if you have anything to say, you say while you speak.

(Interruptions)

श्री बसुदेव आचार्य : अयोध्या नहीं गया था डेलीगेशन। Do not mislead the House....(Interruptions)

MR. SPEAKER: Please listen to the Chair. He started well; let us hear. He has his views; he is entitled to have his views. If you have your views, you controvert them.

(Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA : We are trying to correct it....(Interruptions)

MR. SPEAKER: No intermediate correction; you correct it in your replies.

(Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैंने केवल आल पार्टी डेलीगेशन की बात की। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: There are some issues on which all the Parties should act together.

SHRI L.K. ADVANI : Therefore we are discussing this. हम सब मिलकर कर रहे हैं। मैं तो आपको भी कहने वाला हूँ और बहुत कुछ, लेकिन आलोचना करने के लिए नहीं। मुझे लगता है कि यह अवसर है आपके लिए ...*(व्यवधान)*

MR. SPEAKER: If all of you say it is a serious matter, do not make it flippant.

â€ (Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : जब वहां पर गए तो वहां पर एक हायर सैकेन्ड्री स्कूल है जिसको रिफ्यूजी कैम्प में कनवर्ट कर दिया गया था। गांवों में गए, तो गांव बिल्कुल सुनसान थे। They were deserted. Some elderly people were living there. उनसे मिलकर जितना उनसे पता लगता था, वे बताते थे। वे कहते थे कि लोग डर के मारे भाग गए हैं और बहुत सारे हमारे लोग नन्दीग्राम टाउन में रिफ्यूजी कैम्प में हैं। वहां रिफ्यूजी कैम्प में हम गए। वहां सबसे पहले लोगों ने देखा कि संसद के सदस्य आए हैं तो भागकर कई महिलाएँ एक साथ आई, आठ-दस होंगी, पैर पकड़कर रोने लगीं कि हमें तो खाली इतना पता लगे कि हमारे पति जीवित हैं या नहीं। हम खाली यह जानना चाहते हैं कि हमारे पति जीवित हैं या नहीं। It was such a spectacle that I felt literally miserable.â€
(Interruptions)

MR. SPEAKER: Do not do that; do not interrupt.

â€ (Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैंने कहा कि मैं आया हूँ। फिर उन्होंने उसी समय एक इंप्रॉम्प्टू सा मंच लगाकर कहा कि आप बोलिए। कोई माइक्रोफोन ले आए। मैं उस पर बोला। It became the public meeting. But it was there that I promised them that, with these happenings, I have come , as a Member of Parliament along with my other colleagues. We are certainly going to raise this matter in Parliament and talk about it; and through Parliament, tell the State Government that it is their duty to ensure that these queries whether their husband are alive or not, are they there or not, these should be properly tackled and answered. It happens that in the meanwhile, other things have happened. मैं आज इस बात को स्वीकार करूंगा कि साधारणतः इस संसद में कोई राज्य के मामले डिसकस नहीं होते। अगर कोई साधारण लॉ एंड ऑर्डर का राज्य का मामला माना जाए तो फिर डिसकशन जरिफाइड नहीं है। लेकिन यह वर्यो जरिफाइड हुआ, मैं इसका जिक्र करना चाहूंगा जिसके कारण प्रधान मंत्री को भी कहना पड़ा कि संसद में चर्चा होनी चाहिए। उसमें जिक्र है, मैंने वोट नहीं किया। लेकिन पहले जब मैंने गवर्नर का स्टेटमेंट देखा तो मैं तो चकित हो गया। मुझे याद नहीं कि पिछले साठ सालों में*(व्यवधान)*

MR. SPEAKER: Mr. Advani, you are very well aware that during the debate we do not use the name of the President or the Governor.

SHRI L.K. ADVANI : We do not use the names but this is crucial for this debate....*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: It cannot be. Substance of the matter, we can express.

â€ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : It is a public statement.

MR. SPEAKER: It may be a public statement, then the Presidents' statements are also public statements.

SHRI L.K. ADVANI : I said this to the Governor also. I said normally a Governor reports to the President in respect of the State, as to what is going on in the State.[\[r21\]](#)

यह मंथली और पीरियोडिकली भी आती है। *... These are the words that he has used.â€
(Interruptions)

MR. SPEAKER: I will look into it.

â€ (Interruptions)

SHRI RUPCHAND PAL : Sir, how can he discuss the conduct of the Governor? ...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: He cannot. I will decide it. I will see it. He should not have done it. I do not agree with that. Therefore, he cannot precipitate this.

â€ (Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : आप सोचिए कि इस मामले में * ... This has been mentioned by no less a person than Shri Ashok Mitra. ...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: What are you doing?

â€ (Interruptions)

अध्यक्ष महोदय: यह करना नहीं चाहिए। Please do not do that.

...(व्यवधान)

* Not recorded

MR. SPEAKER: You need not go to Shri Ashok Mitra. I can stand by that. I also wanted him there.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : It is very relevant. He says *

MR. SPEAKER: This is not permissible. You know very well that reading from somebody's statement is not permissible.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Why? We have heard so many things. We have quoted so many things. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER: You refer to it. You mention it. Reading out from somebody's statement is not permissible.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : He says: *

MR. SPEAKER: This is not permitted. You can give the gist of it.

SHRI L.K. ADVANI : The gist of it is that when he was invited ...(Interruptions)

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा (धन्धुका) : अध्यक्ष महोदय, टोका-टाकी हो रही है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हम रिक्वेस्ट करते हैं कि टोका-टाकी नहीं होनी चाहिए।

...(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : आपने इंटरप्ट न किया होता तो कोई टोका-टाकी नहीं होती।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: It is my duty to see that rules and procedures are followed. I have said that you can give the gist of it. Do not discuss it.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : The gist of it is this. According to Shri Ashok Mitra, when he consented to become the Governor, he wanted that the leadership of the CPI(M) should be prepared to have him. He has now become the enemy. This is the word that has been used...(Interruptions)

* Not recorded

MR. SPEAKER: Please, no question of enemy. He is a respected Governor of the State.

â€¦ (Interruptions)

अध्यक्ष महोदय : आप इसे छोड़िए कि कौन क्या बोल रहा है।

...(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : सीपीएम वालों ने बोला है।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: I am not ashamed to proclaim it. I also wanted him.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: I request all of you to take down the notes. Do not interrupt him now. If I find whatever he says is not according to the procedure, then I will intervene.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, there are three statements from various dignitaries. One is, of course, the Governor's statement. I am not quoting him. He said that the happenings in Nandigram are totally unlawful and unacceptable. Then, the second one is the judgment of the High Court of Kolkata, which goes on to say that the firing took place on 14th March – this judgment has come last week – is unconstitutional and unjustified. What it has said in the body of the judgment, I do not want to quote. The third statement is this. When the CRPF has been invited to help in Nandigram, it was said that हमारी जवाबदारी पूरी हो जाएगी, वे नंदीग्राम संभाल लेंगे। According to the CPI(M) there, it was the Maoists who are indulging in violence, though the Home Secretary of West Bengal came out with a statement that there is no Maoist, there is no Maoist literally there. ... (Interruptions)

MD. SALIM : You are the spokesman of the Maoists! ... (Interruptions)

श्री ताल कृष्ण आडवाणी : आप सीपीएम को बताने के लिए माओइस्ट की भी तारीफ करने लगेंगे।... (व्यवधान) उसमें कोई दिक्कत नहीं है।... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Md. Salim, you are going to speak, I understand. You can reply at that time.

â€¦ (Interruptions) [h22]

MR. SPEAKER: Malhotra Saheb, I am doing my best. Your leader is addressing.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Do not record anything other than the speech of Mr. L.K. Advani.

(Interruptions)* â€¦

MR. SPEAKER: Hon. Members, please do not interrupt like this.

SHRI L.K. ADVANI : Sir, Mr. Alok Raj, the DIG of the CRPF says... (Interruptions)

श्री सुरेन्द्र प्रकाश गोयल (हापुड़): अध्यक्ष महोदय, ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बीच में क्यों बोल रहे हैं, यह आप क्या कर रहे हैं, आपको क्या हो रहा है?

â€¦ (व्यवधान)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, the DIG of the CRPF says that he has been given one week now.

SHRI RUPCHAND PAL : Sir, would we go strictly by the statements of the DIG of the CRPF?

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : Why not? â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon. Members, please, let him speak.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon. Members, when the hon. Leader of the Opposition is speaking, he is quite capable of making all the points. Therefore, you do not need to support him.

I am requesting everybody to please note down the points, and you may reply them when your turn come to speak. That would be much more dignified and to the point, instead of making a running commentary here.

* Not recorded

Naturally, I am saying that whoever is speaking, according to my judgment, may be right or wrong, and if there is a crossing of the *Lakshman Rekha*, I will intervene.

SHRI L.K. ADVANI : Sir, he has publicly said: "I have been called here; I have been invited here; I have been asked to deal with the situation in the Nandigram, whereas I am getting no cooperation from the State Government, from the State Police Authorities".... (Interruptions)

SHRI PRASANNA ACHARYA (SAMBALPUR): Refer to the statement of the same DIG made yesterday... (Interruptions)

MR. SPEAKER: This is not right. I do not approve of this, Mr. Acharya and Mr. Pal. No; it is not right.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: It is not right. He has not transgressed any rule I know of, by referring to the statement of the DIG.

SHRI L.K. ADVANI : Sir, if I were to quote, he said: "I asked the SP two days ago to provide me a list of wanted criminals, but I did not get it. I do not know why he is doing it. I have worked as an SP, and I have never seen such a behaviour." These are the words of the CRPF officer... (Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA : You refer to his statement of yesterday...(Interruptions)

MR. SPEAKER: By your saying about yesterday' statement, would he read? This is not helping the matter.

â€¦ (Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हाईकोर्ट इसे अनकॉन्स्टीट्यूशनल कहता है, गवर्नर जिसे टोटली अनलॉफुल कहता है और सी.आर.पी.एफ., जिसे स्टेट गवर्नमेंट ने रिव्यू कर के केन्द्रीय होम मिनिस्ट्री से मंगवाया, उस सी.आर.पी.एफ. का हैड कहता है कि यहां पर मुझे कोई कोऑपरेशन नहीं मिलता। क्या यह गम्भीर स्थिति नहीं है, जिस पर संसद को विचार करना चाहिए? â€¦ (Interruptions)

MR.SPEAKER: I have allowed you. I have noticed it.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Mr. Advani, I said that you are entitled to refer it.

SHRI L.K. ADVANI : Thank you, very much.

MR. SPEAKER: I have already said it earlier.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please, hon. Members, you may also have to refer some statements. Why are you doing this? Why are you interrupting him?

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, I visited Nandigram, and many of the Press people, Media people accompanying me said that 'this is the first time that we have been allowed to go to Nandigram. Otherwise, it was out of bounds for us.' I was surprised to hear that 'this is because Advani has friendship with the Chief Minister.' This kind of a comment coming from the Ruling party surprised me. I did not expect this because I have had and I have tried, as the Home Minister, to maintain good relations with all the Chief Ministers in the country including many in the Congress party. That does not matter anything. I have good relations with them. Even now, I have good relations with him also. And, I was happy to find that his response to the Prime Minister's comment on Nandigram was different from the party's response. He said: "I appreciate what the Prime Minister has said."

So, these are matters about which I have only this to say that the CPI(M) must look back at the entire Nandigram episode. How it happened? When you try to convert the party into a substitute for Government, then things go out of hand. I remember, when I first visited Nandigram, the same thing was again and again mentioned that it is his people who wore police uniforms. I do not know.[\[r23\]](#)

An MP's name was mentioned. It was said – 'It is they who fired on us while we were doing *Puja*. The Muslim ladies there were reciting Quran' At that time, firing took place on them and they said that they were not policemen really, they were party men, party cadres in police uniform. â€¦ (Interruptions)

MD. SALIM : It is all cock and bull story. ...(Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हां, कॉक एण्ड बुल स्टोरी ही है...(व्यवधान)

MR. SPEAKER : You also do not take notice of them.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Why? ...(Interruptions)

MR. SPEAKER : You can do it. But that will go on.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : I would like you not to comment. I can understand their comment.

MR. SPEAKER : I did not comment on you. I am commenting on them.

SHRI L.K. ADVANI : No, not at all. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : No, you are not fair to me.

â€¦ (*Interruptions*)

SHRI L.K. ADVANI : I heard everything yesterday, day before and throughout.

MR. SPEAKER : That is right. I think that is my duty to draw the attention of this country as to how this Parliament is functioning. I will not get away from that duty, whether you like it or not.

â€¦ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Yes, I will do that. If you do not like, you get me out of it.

â€¦ (*Interruptions*)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, जब मैं चर्चा करता हूँ और गतिरोध होता है तो मुझे तकलीफ होती है। इसलिए मैं बहुत बार इसको एवाइड करता हूँ। लेकिन मैं एक बात जानता हूँ कि यदि गतिरोध न हुआ होता तो शायद आज यह चर्चा ही न शुरू होती...(*व्यवधान*)

MR. SPEAKER : I do not know. This is not the method.

â€¦ (*Interruptions*)

SHRI L.K. ADVANI : Anyway.

MR. SPEAKER : I do not agree.

â€¦ (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : यदि जरूरत होगी, तो जरूर करेंगे।

â€¦ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Do not teach me. You are not capable of that.

â€¦ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER : I am here when you were not even born.

â€¦ (*Interruptions*)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, the High Court says in its operative part : "The action of the police department to open fire at Nandigram on 14th March, 2007 was wholly unconstitutional and cannot be justified under any provision of the law".

Now, a statement of this kind, the statement given by the Governor of West Bengal and lastly the statement made by the DIG, CRPF are there. I said to the Governor when I met him along with my colleagues that : "Is this not sufficient reason why you should send a formal report to the Central Government as to what has happened in Nandigram. You have your inputs on the basis of which you have yourself said." In fact, this is not the first time that he said it. He said it for the first time in March itself, that "I have a feeling of cold horror". These are the words that he used on visiting Nandigram, a feeling of 'cold horror'.

He said : "This time, the Diwali all over the State has been dampened because of Nandigram incidents". I said : "You owe it to the Central Government and to the country to send a detailed report to the Central Government as to what are your inputs which have made you to make this public statement and on the basis of that you can recommend that in this situation, the Constitution empowers the Central Government to issue directions to the State Government under Article 355 and if those directions are not followed to correct the situation in Nandigram, then the Central Government is fully justified in invoking Article 356". ...(*Interruptions*)

SHRI BASU DEB ACHARIA : As you did it when you were the Home Minister.. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Please, Mr. Acharia.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, this was something that I said to the Governor which I am repeating here in Parliament. The hon. Minister of Home Affairs is here. I would like to urge him to consider this that the situation should be improved. What is happening there? The Governor said 'I am in touch with the Central Government.' â€¦ (Interruptions)

DR. RAM CHANDRA DOME (BIRBHUM): The situation has radically improved. ... (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Is it radically improved? बहुत अच्छी और खुशी की बात है यदि रेडीकली इमूव हो गई है।

अध्यक्ष महोदय, जहां के चीफ मिनिस्टर कहते हैं कि "We have paid them back in their own coin." आप इतिहास देखिए, जब मैं पार्लियामेंट में पहली बार आया था, तब मार्क्सिस्ट मुझे कहते थे कि आज यूरोप पर हमारा साम्राज्य है और एक समय आएगा जब जिस प्रकार से ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्यास्त नहीं होता [r24] था कम्युनिस्ट साम्राज्य भी ऐसा होगा, जिस में कभी सूर्यास्त नहीं होगा... (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : वही होगा।... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : और देखिये, क्या-क्या हो गया। आज वह दुनिया भर से समाप्त हो गया।... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : दुनिया भर से समाप्त हो गया।... (व्यवधान)

श्री रूपचंद पाल : आपकी जानकारी ठीक नहीं है।... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हां, मुझे पूरी जानकारी है। वयूबा बत गया है, दूसरे रूप में वाइना बत गया है।... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Advani, you are getting into that.

SHRI L.K. ADVANI : No, I am not getting into that. I do not want your comment. I urge you with that. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: I am not making any comment. I am only asking you to resume.

â€¦ (Interruptions)

SHRI L.K. ADVANI : Sir, let me recall, सी.पी.एस.यू. की जो 20वीं कांग्रेस थी, वह थी, जिसमें लाषकेव ने वह भाषण किया था, लाइव बस्टिंग हार्ट... (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : बहुत पुराना।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : बहुत पुराना। याद करो कि कैसे सोवियत संघ में आपका साम्राज्य खत्म हुआ।... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Let us get on with this. If you go on like this, how can we finish this? This is not right.

â€¦ (Interruptions)

श्री बसुदेव आचार्य : आप तो सोवियत संघ पर चले गये।... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, मैं इसी संसद में था और संसदीय शिष्टमंडल में हिल्लों साहब हमारे स्पीकर थे, उनके नेतृत्व में मैं 1972 में चैकोस्लावकिया गया था और चैकोस्लावकिया में जिस प्रकार का एग्जेशन मार्को द्वारा था और डुबचैक का काण्ड हुआ था, उसके कारण वहां समाप्ति हो गई। हमारी हिस्ट्री में ये टर्निंग पाइंट्स हैं और मुझे लगता है कि जिस प्रकार के टर्निंग पाइंट्स इन सब बातों से आये हैं, चाहे डुबचैक का प्रकरण हो, चाहे लाषकेव का भाषण हो, चाहे वाइना में थियानानमन स्वचायर हो, Nandigram is going to be the turning point in the history of the Communist Party of India. ... (व्यवधान)

SHRI HARIN PATHAK : They will be finished from the map of the world. ... (Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के इतिहास में यह एक टर्निंग पाइंट बनेगा।... (व्यवधान) अब 3-4 टापू बत गये हैं।... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Basu, I will not allow you. Nothing will be recorded.

(Interruptions)* â€¦

MR. SPEAKER: If you have to say anything, you say in your speech. Let us go on with this. We have already taken 40 minutes on this.

(Interruptions) â€¦

MR. SPEAKER: Shri Basu, I will not allow you. Nothing will be recorded.

(Interruptions)* â€¦

** Not recorded*

MR. SPEAKER: If you have to say anything, you say in your speech. Let us go on with this. We have already taken 40 minutes on this.

..(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष जी, मैं कन्वल्ड करता हूँ। मैं फिर से कहूँगा कि नंदीग्राम के बारे में संसद को अधिकृत जानकारी मिले, सरकार को भी अधिकृत जानकारी मिले, इस दृष्टि से पहले-पहल तो एक ऑल पार्टी डेबैलीगेशन यहां से नंदीग्राम भेजा जाना चाहिए। फिर इनको मैं यह कहूँगा कि इस बीच में सरकार इस पर विचार करे कि वह इस मामले में क्या कर सकती है। खासकर हाई कोर्ट ने जो निर्देश दिये हैं, उन निर्देशों में, जो मर गये हैं, उनको मुआवजा देना, जिनका बलात्कार हुआ है, उन महिलाओं को न्याय देना, ये सब जितने निर्देश दिये हैं, उन सब का भी पालन हो। साथ-साथ राज्यपाल को यहां बुलाकर उनसे प्रत्यक्ष पूरी जानकारी प्राप्त कर केन्द्रीय सरकार भी आवश्यक कार्रवाई करे।

मैं समझता हूँ कि इसके आधार पर आप आर्टिकल 355 का पहले उपयोग करें। फिर यदि उसका भी वे लोग पालन नहीं करते हैं तो आर्टिकल 356 का उपयोग करें।

MR. SPEAKER: Shri Priya Ranjan Dasmunsi, the hon. Minister.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: You are not doing justice to yourself. Please do not do that.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: I will call you next.

â€¦ (Interruptions)

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI): Sir, first of all, on behalf of myself and possibly on behalf of the whole House, I congratulate you. The kind of leadership you are providing in this House is unique and unparallel if I compare the other past performances here. I am not questioning the wisdom of anybody.

Sir, from the day one you assumed the Chair of this august House, you were very candid to see that transparently each voice is heard. Sir, I can place on record that you have admitted the largest number of Adjournment Motions, even sometimes in spite of the displeasure of the Government. You said in my presence to the Leader of the House that the Leader of the Opposition is one of the basic components of the Parliament and if he comes out with such serious issues for adjournment where the Government of India is concerned, I cannot say 'no'.[\[s25\]](#)

This is the example that you have created here.

I do not know why people talk about it. You categorically made it clear from day one and day two -- when this House resumed -- that you are not going to oppose any discussion. You said that we could collectively decide about it, and asked us to allow you to run the House and the Question Hour. You had stated this in the Leaders Meeting also. Unfortunately, your spirit is not valued here in that objective that the nation desires and expects. Therefore, you left the matter again to the Parties. You did not even include a word, comma or a semicolon, and you accepted the collective wisdom of the NDA, the Left Parties and the Government to settle the issue without even changing a single word. Once again, I salute you for the way in which you are conducting the House, and accommodating every single Member.

MR. SPEAKER: Thank you.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : The Short Duration Discussion begins with SEZ and ends with the subsequent violence. I am here to explain a few points first to the mover of the Motion, namely, Shri L. K. Advani.

Shri Advani, I first deal with SEZ, but before that I would like to tell you, through you, Sir, that East Midnapore is a district that is the centre of pilgrim of all the freedom fighters not only of Bengal, but, if I may say so, India too. It has a new district headquarter at Tamluk, which commands Nandigram. The freedom fighters in Tamluk made India free -- at least for seven days -- even before we saw the national flag and declared that India is free. Only one freedom fighter from that group is alive till now, namely, Shri Susil Dhara and all the rest are dead. I shall talk of Great Satish Samanta Sir, you also had the privilege to see him. He used to come in this House at 11 o'clock as a disciplined Member of Parliament in the Lok Sabha; sit there; put his question; and go quietly after attending the House. He was a great freedom fighter who fought for the Haldia port.

Shri Satis Chandra Samanta was an MP consequently many times, and he never criticized or abused any Party for anything except for development. He fought for the Haldia port, and his fighting was by correspondence or by telegram right from the days of Pandit Jawaharlal Nehru to Shrimati Indira Gandhi. We feel proud of Haldia today. As a man of Bengal I feel proud of it.

The Government may come and the Government may go. If we do mistake when there is Congress rule in the Centre or if we do mistake when we rule in Bengal and I consistently and persistently repeat that whatever we have done is right, then I may be able to satisfy my cadres in the AICC Session, but people will judge my action when the occasion comes.

मैं आडवाणी जी को स्मरण दिलाना चाहता हूँ कि आप वहाँ दो बार पहुँचे। आपने लीडर आफ अपोजीशन के नाते जिम्मेदारी निभायी, लेकिन आप मोशन के फर्स्ट वर्ल्ड को वोक कीजिए - एस.ई.जेड. एस.ई.जेड. को लेकर पूरे देश भर में तनाव हो रहा है। उस तनाव को देखते हुए मैं विनम्रता के साथ कहना चाहता हूँ कि यूपीए की चेयरमैन सोनिया गांधी जी ने देहरादून में सभी चीफ मिनिस्टर्स को बुलाकर कहा कि जिस प्रकार से यह सब चल रहा है, उससे मुझे शंका है कि किसान, खेत मजदूरों और गरीब तबके के लोगों को शायद हम लोग बचा नहीं पायेंगे। ...(व्यवधान) Why are you doing like this? I have not even completed my submission. पेशेस से काम लीजिए। ...(व्यवधान) आप बताने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : टोकटाकी की जरूरत नहीं है।

...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आपको मालूम नहीं है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Thereafter, the UPA Government said that we cannot straightaway go ahead with the SEZ policy promulgated by NDA, and that we have to change it thoroughly. When did that policy come into operation? It came into operation in February 2004. When was it finalized? It was finalized in January 2004. When was it concurred to by the Cabinet? It was done in 2003. Shri Advani, you cannot deny it. [\[r26\]](#)

That SEZ rehabilitation and resettlement policy, which was not a law, did not talk about the BPL category people, sharecroppers or, how much compensation is to be given besides rehabilitation. I do not want to undermine Advaniji. He has come prepared with all the facts, except on part one of the Motion which talks about SEZ. कहां से शुरूआत हुई? ठीक ही कहा इलियास साहब ने। कब से शुरूआत हुई। 1998 में कान्सैट बना। एनडीए सरकार ने उस पर विस्तार से चर्चा करके पहले सोचा कि बिल लाएंगे। अच्छा होता, उसकी स्टेट्यूटरी पावर होती। फिर सोचा कि कानून नहीं, पॉलिसी बने। पॉलिसी पर मोहर किसने लगाई? आपने लगाई। जो जमीन के मालिक नहीं हैं, उनके लिए कम्पेंसेशन की बात कही थी, नहीं कही। इतने सातों से जो गरीब काम कर रहे हैं, उनके रीसेटलमेंट की बात कही थी, नहीं कही थी। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, जिस दिन बहस होगी, एसईजेड पर डिटेल में बहस करूंगा।...(व्यवधान)

श्री हरिन पाठक : नन्दीग्राम के बारे में बताइए।...(व्यवधान)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: I am coming back to it. You are already in problem. Why are you doing like this? I only want to wish you a long life.

स्पीकर साहब, मैं आदरणीय प्रतिपक्ष के नेता को समझाना चाहता हूँ कि उस पॉलिसी के अंदर जो जहर था, देश की तरक्की और उद्योग को देखते हुए कुछ तोंग उस जहर से बीमार हो गए। यूपीए द्वारा सारी छानबीन करने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि हम पॉलिसी नहीं, कानून लाएंगे। We will give it the statutory effect and make it a legal law. That will be introduced in this Session.

हमने उस कानून के पीछे जो दस्तावेज तैयार किया है, यदि आप उसे गौर से पढ़ें तो देखेंगे।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर) : आपने बहुत देर कर दी।...(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : क्योंकि आप इतना तेज़ जहर लाए थे कि उसे निकालने के लिए ओझाओं को बुलाना पड़ा और उसमें हमें ज्यादा समय लग गया। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Interruptions will not be recorded.

(Interruptions) â€!*

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : यदि मैं आपकी सन् 2003 की रीहैबिलिटेशन पॉलिसी पढ़ूँ, मेरे पास है, ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपको क्या हो रहा है? आप क्या कर रहे हैं? श्री मल्होत्रा, प्लीज़।

â€!(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : मुझे मल्होत्रा जी से यह अपेक्षा नहीं थी।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: He has not used anything unparliamentary.

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : मल्होत्रा जी, आपकी गलती नहीं है। आप उस समय कैबिनेट में नहीं थे जबकि आपको उस समय कैबिनेट में होना बहुत जरूरी था।...**(व्यवधान)** आपकी सीनियोरिटी की भी उपेक्षा की गई, मैं यह मानता हूँ। लेकिन शायद यदि मल्होत्रा जी होते तो ऐसी पॉलिसी नहीं बनती।...**(व्यवधान)** उस पॉलिसी को बहुत प्रयास के साथ चेंज करके हम जो नई पॉलिसी लाए हैं, उसे आप देखेंगे, चर्चा करेंगे, तो पता लगेगा कि उसमें सिर्फ किसान नहीं, बीपीएल कैटेगरी के जो लोग उस जमीन पर तीन साल तक रहे, उनका पुनर्वास निश्चित किए बिना प्रोग्राम नहीं होगा, हम यह कानून ला रहे हैं। इस पर पहल हो चुकी है।

* Not recorded

जहां तक नन्दीग्राम की बात है, वह जरूर कहेंगे। आडवाणी जी, आप वहां चाहे चार बार या दस बार दौरा करें, बंगाल की जमीन पर, गुरुदेव टैगोर की जमीन पर, विवेकानन्द की भूमि पर आपकी पार्टी को अगले सौ साल तक भी फायदा नहीं होगा, यह मैं पहले बता रहा हूँ।...**(व्यवधान)**

MR. SPEAKER: You were objecting then and you are now doing the same thing?

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आप चाहते हैं कि मैं नन्दीग्राम के सिवाए और कुछ नहीं बोलूँ तो मैं वही बोल रहा हूँ।...**(व्यवधान)** आडवाणी जी का मेरे प्रति व्यक्तिगत रवैदा काफी है, मैं उसकी बात नहीं करता। लेकिन आडवाणी को याद होगा कि मैं खुद उनके पास नार्थ ब्लॉक में होम मिनिस्टर के नाते पहुंचा था, क्योंकि ममता जी को आने में देर थी तो उन्होंने कहा कि दादा, आप पहले जाएं, मैं बाद में आऊंगी। मिदनापुर में छोटा अंगडि नाम की एक जगह है। वहां एक दिन मैं काफी लोगों को ज़िंदा जलाया गया। हमें उनकी लाश नहीं मिली लेकिन लाश जलने के बाद जो दांत मिले, 303 गोली के जो कार्ट्रिज मिले, मैंने उन सबको आडवाणी जी के चैम्बर में जाकर उन्हें समर्पित किया और कहा कि कुछ कीजिए। उन्होंने कहा कि मैं स्टेट-सेंटर रिलेशनस में कुछ नहीं कर सकता। मैंने कहा कि कम से कम विज़िट कीजिए। विज़िट भी नहीं कर पाए। क्योंकि स्टेट-सेंटर रिलेशन की जिम्मेदारी होम मिनिस्टर पर थी, उन्होंने सही आचरण किया। मैं उन्हें कोई दोष नहीं दे रहा हूँ। **[N27]** लेकिन इमोशंस में, जजबात में खोकर जब मैं गांव से लौटा, तो मैंने लोगों से कहा कि मैं आडवाणी जी से उनके चैम्बर में मिलूंगा, क्योंकि ममता जी को आने में देर हो गयी थी।...**(व्यवधान)**

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : वहां भाभी जी पर हमला हुआ था।...**(व्यवधान)**

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : आप मेरे को बोलने दीजिए। शाहनवाज़ जी, मैं आपका दुश्मन तो नहीं हूँ।...**(व्यवधान)**

श्री हरिन पाठक : हमारी भाभी जी यानी आपकी पत्नी को मारा। ऐसे कैसे चलेगा?...**(व्यवधान)**

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: Then there was this place called Kespur where some incident of serious violence took place. Mamtaji, the then NDA colleague of Advaniji, was in the Government and she told me. "You may go and visit him". एक दिन के लिए, आप ऑल पार्टी छोड़िये, आप तो अपनी पार्टी के डेलीगेशन में भी नहीं गये। आप इसे छोड़िये क्योंकि मैं पुरानी बात में नहीं जाना चाहता। मैं यह नहीं कहूंगा कि आप क्यों गये? आपको हिन्दुस्तान की सभी जगहों पर जाने का हक है। आडवाणी जी, आप सिर्फ एक ही जगह जाने को भूल गये थे। जब सारे देश में यह सवाल उठ रहा था कि क्या कश्मीर में चुनाव होगा या नहीं होगा, आतंकवाद का इतना बड़ा हमला हुआ, उस समय आप सरकार में थे, सिर्फ चुनाव में वोट लेने के लिए आप श्रीनगर वेली में नहीं गये। क्योंकि आपको डर था कि होम मिनिस्टर होते हुए मैं वोट कैसे मांगूँ, मैं पार्लियामेंट को क्या जवाब दूंगा? यह सब मैं जानता हूँ इसलिए What is politics and what is the responsibility of the Opposition Leader is all in the public domain. I am not questioning that. लेकिन मैं अभी यह कह रहा हूँ कि नन्दीग्राम में जो हुआ है, उसकी कहानी पब्लिक डोमेन में है। मैं किसी भी तार्किक विषय पर बात नहीं करूंगा। हम वामपंथियों के समर्थन से सूपीए सरकार चला रहे हैं। हम एक ही बिन्दु पर सरकार चला रहे हैं कि किसी भी छलत में देश में सांप्रदायिक ताकतों का विस्तार न होने दिया जाये।...**(व्यवधान)** आप मुझे कहने दीजिए।...**(व्यवधान)**

Mr. Speaker, Sir, I seek your protection.

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है? आप लोग अपोज करते थे, जब वे टोका-टाकी करते थे।

â€! **(व्यवधान)**

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : If I start on Nandigram, you will keep quiet and they will stop me. I know my situation today. You try to understand what I am saying.

What happened in Nandigram are not sudden and sporadic incidents of violence. Nandigram violence has its basis in the concept of forming an SEZ with four thousand acres of land to start with which was later increased to ten thousand acres. That the Government desired to set up an SEZ there is not a matter of talk or comment by journalists. It was a fact evident from the State Government's own application to the Government of India asking for permission.

Violence took place in Nandigram on 3rd January. Try to understand Nandigram geographically. Nandigram comprises two blocks – Block 1 and Block 2. On the border of Nandigram is a Block called Khejuri. Advaniji has been there, he would know this. If anybody wants to enter Block 1 of Nandigram he has to go first through Nandigram Block 2 after which he can go either straight to Nandigram or reach Nandigram via Khejuri. So, the first point of entry to the town is at Nandigram 2 and then the second entry point is via Khejuri on the bridge.

The name Nandigram is very near to me and I have an emotional attachment with it because I used to win every time from that college when I was students Organization Chhatra Parishad President. There was no bus facility to reach

Nandigram directly in those days as there was no bridge then. We had to reach there by changing boats twice.

After Independence, Tamluk zone was dominated either by the Congress at one time, then by Bangla Congress led by Ajoy Mukherjee, and then decisively by CPI. CPI(M) came much later. All the leaders of CPI, Congress and Bangla Congress were there at that time but there was no violence of any kind. We had political differences and electoral differences amongst us, but violence of this kind was never witnessed in Nandigram. It was a very peaceful area. Forty-five percent of the population was Muslim. Barring two to three per cent, rest of the population comprises Scheduled Castes, poorest of the poor Scheduled Castes.

Politically, Nandigram Block 1 is decisively dominated – I use the word consciously – by the Left Front in Block and Gram Panchayats. [\[KMR28\]](#)

13.00 hrs.

Among the Left Front, a decisive majority was of the CPI (M) Party; they won the election. The Congress is a microscopic minority in terms of panchayat Presidentship. TMC has something which is a little over us, but it is not a significant force. Till 1996, we had been there; that is different; CPI is there.

What I witnessed there or the 3rd January incident is not a fight between Maoists, naxalities, etc. I do not know why you often use the word 'Maoist'; I may differ with the philosophy; I belong to Gandhiji's Party. But the name Mao Zedong is a name to the whole world for his revolution, but one may differ. I feel very sick when people accuse it saying, 'Maoist, Maoist, Maoist'. Mao Zedong philosophy and Mao Zedong himself is not a matter to be condemned; one can differ. His poetry was very good and if a boy, up to the age of 18 years, even if he is belonging to the BJP family, reads his books and poetry, you feel fresh to go and jump into the harvesting fields. That is the spirit.

Regarding this, I asked the journalists, 'You can say 'extremists', you can say 'naxalites', but why do you say 'Maoists'? Why do you say so? Even Great Lenin was there. One can preach anything. Now, there is a new style of putting it – they put ML, within brackets. I say that both of them are wrong. One can accuse and one can abuse gallery of people – it may be Lenin or Mao Zedong or Karl Marx. So, this terminology is not fair, not proper and I differ and distance myself with that culture.

On 2nd and 3rd January, unfortunately a notice, a comprehensive notification by Haldia notified authority, to acquire the land was issued in the office of the BDO. That notice provoked the people there because their lands were supposed to be acquired. Immediately, it went like a fire; in the entire land of Nandigram, substantially there are 3-4 *maujas*. It went like a fire there. I tell you, please for God's sake, do not accuse that on that day, it was done by the Congress or by the TMC or by the BJP or by the Naxalites. It was done by the common people, overwhelming bulk of whom supported and stood by the CPI (M) party which was in power, right from Panchayats, Assembly and the Parliament. It is not that they shouted *vande mataram* or anything like that.

They even said that firstly it may not be in the knowledge of our Chief Minister. Even somebody told me that unless he is informed, nothing will be happening. And I say everything on record; I am a responsible man in Parliament; I know everything is going into the proceedings.

From that field, I rang up the Chief Minister and the Chief Minister himself conveyed to me and asked me to talk of peace there; I know how it was done; it was absolutely wrong; it cannot be tolerated; I will withdraw it by tonight or tomorrow; give me some time; it is not in my knowledge. I wrote a very nice three-page letter to the Chief Minister, narrating what I saw there. I thanked him, that the next day morning, he withdrew it. So, the withdrawal was done by the State Government instantly; it was broadcast on the radio and the TV also. But by that time, the incident took place; it was almost like this – if something is declared by some leader, I do not like to mention anybody's name here, it should be implemented. I appealed to the party on that day and to everybody; please understand the complications there. Why are we there? Why is there a tri-colour Party in Nandigram? We may not have won even a Panchayat or a Gram Panchayat seat. Kumari Mamata might not have won, in those days, even two Panchayat samiti seats, but they are the people of the party which is ruling. They felt it this way; why did they feel so? Try to understand the psychology. It is not that somebody tried to hit them; they felt, according to the established law, that even if you take a land, compensation is paid to the land owner. But the owner is one. But according to the latest Government's programmes and policies, which I support – we have supported earlier also and we also had the same policy – the sharecropper must have a right in the land, whatever he cultivates, he should get the due share. [\[MSOffice29\]](#)

Over the years, a few landlords feel that there is no point in sticking to the land and that they should go back to Kolkata, Burdwan or some city and take care of the children as now it is gone. Good or bad, the real poor people and the sharecroppers got the benefit. The sharecroppers argued that in the name of compensation, money is to go to the land owners. They may be five people in Kolkata or a big city but what about the sharecroppers. The share-croppers are not in the compensation clause or the compensation victim. How do they feed their children? They all got united and said that

enough is enough and that they cannot stake their land. That is one reason.

After the first firing, two out of six victims' houses could not be traced because their bodies were not traced. I visited three victims personally. One was a Muslim boy by the name Sheikh Salim. Sheikh Salim further told me that he had never voted for Congress. He further asked me to talk to anybody and confirm that he had received all the Leaders when they had come because from day one he was tilling this land as the sharecropper and he salutes his Party CPI (M). He asked me to look his son who is six years' old.

I then went to Bharat Mandal's house. He is a *thelawala's* son. He lives in a thatched house and cannot prepare his food. I asked him does he belong to any Party. नहीं साहब, जब कम्युनिस्ट पार्टी के लोग आते हैं, उनके जुलूस में हम जाते हैं। हम उनके सिम्बल पर वोट डालते हैं। He is a Scheduled Caste boy. From there, in a confidential note, I conveyed everything in writing to the hon. Chief Minister whose feelings I realised on that night. I told them do not misunderstand the Chief Minister. It is not he who did it. Maybe some officer did it without his knowledge. Please talk of peace. West Bengal Police, Intelligence Branch can carry my speech in Nandigram. It was tape recorded. There was mike and everything and I only talked about peace, peace and harmony because I knew that any time the situation might turn to worse. I have seen the good and bad days of the violence of 1968, 1969, 1970 and 1971. I did not want the youth in every district of Bengal to be converted again into youth with gun. Never! The Chief Minister did share with me his concern. I do not want to say anything more.

I did inform my colleague, Shri Gurudas Dasgupta, whom I talked. I respect him. I informed Shri Rupchand Pal one of the sensible leaders of the Party and Shri Abani Roy, Member of the other House that I am getting this kind of information and could they talk to the people so that things could be taken care of. I am not blaming anybody. If he finds something going wrong in a State where Congress is ruling and as a comrade asks me to convey, it is not my duty to convey that. It is mutual friendship and brotherhood that works in political fraternity.

Things went beyond control. When it went beyond control, the fight started as to do they really want to retain the land as it is. Those who tried to propagate the campaign, that it should be done, were the boss of the local area. You can hit me. I do not mind. You can criticise me. Please try to understand the inner line. That could have been controlled on day one. I have been taking the position from day one and today also that, cutting across Party line, if those who were identified by the police to be involved in January incidents could have been booked and brought to justice, things would have taken a different turn.

Advani Ji, on 9th January I was there the whole day. I travelled on the motor bike because they had dug the road and no car could move. I was without my personal security. Whatever little lunch I took, I took it in a house of a Marxist friend who worked for the Party and then changed his view that if his land would go what he would do. I explained him. Those who showed me the path and took me to the area where the woman was hiding in a jungle in Gokul Nagar were not the Congressmen but they were the CPI friends, who were in the hospital, who took me there quietly.[\[R30\]](#)

I am not blaming that it was done by any party leader. But sometimes one tends to blame the party leaders. But that is a different matter. No leader of a party would like that his cadre be given direction to assault someoneâ€ (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): Shri Dasmunsi, they did not allow you...(Interruptions)

MR. SPEAKER: This is not fair. Nothing will go on record.

(Interruptions)* â€

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: I can tell you that your question could have been best answered by Ms. Mamta Banerjee, but unfortunately she is not here today. Smt. Medha Patkar was prevented; Ms. Mamta Banerjee was prevented; the CLP leader was prevented; the Congress delegation was prevented, but only Advaniji was not prevented. Therefore, it is you who should explain it and not me...(Interruptions) I thank you for the support you got from the people there. I wish you would carry the saffron flag there in the days to come. Please do not misunderstand the whole thing. Try to understand it. Please do not belittle the issue. Why should I question you, or why should you question me? The entire

* Not recorded

national media, all television channels are a witness to what happened there from 3rd January to 9th January and what happened from 6 a.m. on 13th March to 14th March. Who am I? If you have respect for the freedom of the media, then you may collect the cassettes and look at them. I can tell you that one day very important leaders, I do not want to take their names, said that please do not talk to Ms. Mamta Banerjee; please do not talk to Shri Priya Ranjan Dasmunsi; please do not talk to the BJP; please do not talk to the Left Front, in your own control room call your DG, call your SP and introspect on the cassettes and you take your own decisions. Nothing will happen. But unfortunately nobody attempted that.

Sir, I am from Bengal and naturally if something goes wrong there I would cry before the State Government, then before the Home Minister and if I do not give an objective picture and instead present a partisan view every time with the consideration whether it will be gainful for the Congress, or for the TMC or for the BJP, then I will be doing injustice to this House. This is where the things had started. I would like to repeat that those who are not present in the House, taking their names is wrong according to parliamentary practices, but eminent leaders of the Left Front, stalwarts, like those who are like my father had said that it is the correct approach. Those who have done this should first be brought to justice and then a dialogue should be started with the responsible parties and if even in spite of such an effort they do not listen, then nobody will object to any action taken by the Government. I must also say here that a very senior leader of the Left Front tried to start that process with all sincerity but he could not take it to its logical conclusion because by that time things had taken a different turn. This situation happened at that time. I was a little upset. Many leaders of the CPI(M) misunderstood me; they have the right to misunderstand me. I respect them.

Sir, on the day of the brother's festival, on the 11th of November, I landed in Kolkata. I cried before my Home Minister. On that day the Youth Congress President called me up to say that just within 10 minutes his house would be torched and his 70 years old father was at home and his sister was waiting for him to give *tilak*. He did not go there to take the *tilak*. My mobile was recording the time when I talked to the DG. He asked for my help. I told the Additional SP to take care of the situation and assured him that nothing will happen. Just after 15 minutes I got a call on my mobile and the Youth Congress president informed me that he was in the jungle and that he would never listen to me and that he would never align with the Congress. He was emotional. He told me that his 70 years old father was dragged on the road tied with a rope...(Interruptions)

श्री प्रियरंजन दाममुंशी : पहले सुनिये। ...*(व्यवधान)* उसने कहा कि मेरा घर चला गया।

MD. SALIM : What is the name of that person?

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: His name is Shri Sabuj Pradhan. Should I take the other names? ...*(Interruptions)* Should I take the other names on record?[\[R31\]](#)

â€¦ *(Interruptions)* Mr. Salim, should I take other names on record?â€¦ *(Interruptions)*

MD. SALIM : The house was the centre of Maoist activists.â€¦ *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: He will reply to you.

â€¦ *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: What is going on here?

â€¦ *(Interruptions)*

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: Please do not try to talk like that. I am not giving other names. Shrimati Anubha, the wife of one of your Party activists, Mr. Khara, on 14th March, was raped in Tamluk. He is a party activist of yours. ...*(Interruptions)* And you are talking like this. Should I furnish you the list? ...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: What is going on?

â€¦ *(Interruptions)*

SHRI MADHUSUDAN MISTRY (SABARKANTHA): There may be criticisms like these. .*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Yes. You are right. I agree with you.

â€¦ *(Interruptions)*

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI: I am only trying to give an objective assessment. ...*(Interruptions)* Then I felt that something is very wrong. Then of course, there are other things and if I talk on them, I think, I will not be able to conclude my speech. I only say one point. Shri Gurudas Dasgupta may accuse me. I only say that the entire Left Front and its constituents tried to build up an environment of dialogue and peace, and not repression and counter-attack. When I use the word 'counter-attack', I mean that there could have been somebody attacked from their side also. I will not feel happy if a CPI(M) mother says that her son is killed. I will not get back. Or if a Congress mother says that her son is killed, I will not get back. Mother is mother. If a Congress man goes without the direction of the party and assaults women who belong to the CPI(M), I will take it as an assault on my mother because mother is a mother irrespective of the colour of the party. ...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: I will not allow such interruptions at all.

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Therefore, I think that objective introspection is required in the whole matter. The people who are in the refugee camp and people who are outside the village should be brought to their homes under safe custody. I say that there should be not only peace but also harmony because there are attempts from some quarters to disturb harmony. I salute those people who did not disturb the harmony. As far as my knowledge goes, in the history of West Bengal, I have never heard of such isolated incidents for nine months in a particular area like Nandigram. It has never happened before. And I think, if I may say with all respect, my views may not be shared by many today. But my views will be shared by some people.

I do not like to speak much on this issue today. If poetry is to be written, let it not be written by the BJP or the Congress or the Trinamul Congress; let it be written by Leftist poet, Shri Jai Goswami. If a painting is to be drawn, let it be drawn by Leftist sculptor and painter, Shri Jogen Choudhry. If a book is to be written, let it not be written by any political person but by the Gnanpith Award winner, a permanent Leftist leaning writer, Shrimati Mahashivetata Devi. If a film is to be made, let it be made by Aparna Sen and Mrinal Sen. If any drama is to be staged, let it be by Saonli Mitra. If any book is to be published, let it be published by those who returned the Ravindra Puraskar and other puraskars who are committed Leftists, who opposed emergency, who criticized the Congress and paraded in the street of Calcutta. It is those persons who should write and not myself because I am a politically biased man. I leave it to the wisdom of those people.

MR. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 2.15 p.m.

13.19 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till fifteen minutes past Fourteen of the Clock.

14.18 hrs.

DISCUSSION UNDER RULE 193

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार): अब कोलकाता में गोली चल रही है...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Every State matter cannot be brought like this. You know it very well.

â€ (Interruptions)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है अभी होगा, यह सेंट्रल गवर्नमेंट का मुद्दा नहीं है।

â€ (व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : लोग मारे जा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : ऐसा मत बोलिए, यह ठीक नहीं है। एक भी नहीं मरा है।

â€ (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please do not do this. इसे और फैलाइए मत।

â€ (व्यवधान)

मोहम्मद सलीम (कलकत्ता - उत्तर पूर्व) : अध्यक्ष महोदय, काफी गतिरोध और हंगामे के बाद इस विषय पर चर्चा हो रही है। मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ कि आपके इनीशिएटिव और वरिष्ठ मंत्री श्री शरद पवार जी के मशवरे से इस विषय पर चर्चा हो रही है।

MR. SPEAKER: I am thankful to all the hon. Leaders.

â€ (Interruptions)

मोहम्मद सलीम : एसईजेड और उसके साथ जुड़ी हुई बातों के बारे में चर्चा हो, यह हम शुरू से चाहते थे लेकिन जिस भी कारणवश हो, न इधर न उधर, इस पर चर्चा करने के लिए संसद तैयार नहीं थी। आज भी एसईजेड टेक्नीकली रखा गया लेकिन विषय नंदीग्राम का ही छाया रहा। हमारी पार्टी का रुख एसईजेड के बारे में स्पष्ट है। हमने यूपीए सरकार को शुरू से कहा कि केंद्रीय सरकार की जो नीति है उसे लागू मत करो। इस बारे में संसदीय समिति में भी बहस की कि इसमें बहुत से सुधार आने चाहिए इसके साथ यह भी कहा गया कि इसमें सुधार लाइए, लैंड एक्वीजिशन एक्ट में सुधार कीजिए, एसईजेड पॉलिसी में सुधार कीजिए। सरकार ने यह बयान दिया था कि जब तक कॉम्प्लेक्सिटी रिडेबिलिटेशन पैकेज नहीं होगा, पॉलिसी नहीं होगी तब तक एसईजेड के एपूवल नहीं होंगे। लेकिन हमने देखा कि एपूवल चलते जा रहे हैं बल्कि फरवरी महीने में सीपीआईएम पॉलिट ब्यूरो की स्टेटमेंट है और पश्चिम बंगाल सरकार की भी घोषणा है कि जब तक एसईजेड कानून में

तब्दीली नहीं होगी, लैंड एक्वीजिशन एक्ट में सुधार नहीं आएगा, रिडेविलोपमेंट पॉलिसी नहीं बनाएंगे तब तक एसईजेड के बारे में हम...(व्यवधान)

श्री उदय सिंह (पूर्विया) : आपने नंदीग्राम क्यों लिया?

MR. SPEAKER: Please do not do this. This is very unfair. ऐसे नहीं चलता। कभी-कभी टोकाटोकी अच्छी है।[MSOffice32]

मोहम्मद सलीम : आप थोड़ा पढ़ लीजिए कि हम इस बारे में एस.ई.जेड. की प्रस्तावना नहीं करेंगे और मुख्य मंत्री ने नौ फरवरी को पब्लिक मीटिंग में ईस्ट मिदनापुर में यह घोषणा की कि एस.ई.जेड. को छोड़ो, नंदीग्राम में उद्यमीकरण का जो प्रस्ताव था, चूंकि किसानों में और गांवों के लोगों में उसका काफी विरोध था और वहां हंगामा खोजे माहौल था, मैं उसी पर आ रहा हूं। इसलिए जो पी.सी.पी.आई.आर. की जो भारत सरकार की प्रस्तावना है, आपको मालूम होना चाहिए, मैं मंत्री महोदय से पहला सवाल यह पूछूंगा कि इस देश में चार सौ से अधिक एस.ई.जेड. के प्रस्ताव आपके पास आये, जिनमें से दो सौ, तीन सौ एस.ई.जेड. चालू हुए, क्या नंदीग्राम के नाम पर सेंट्रल गवर्नमेंट की तरफ से कोई एस.ई.जेड. का प्रोजेक्ट स्पांसर हुआ? मान्यता की बात छोड़ दीजिए, क्या नंदीग्राम में पश्चिम बंगाल सरकार की तरफ से कोई स्पांसर प्रोग्राम है? जो बत्ता पैदा नहीं हुआ, उसका नाम रख लिया गया। इसमें उत्साह हो सकता है। पी.सी.पी.आई.आर. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की पैट्रो कैमिकल्स एंड पैट्रोलियम इनवैस्टमेंट रीजन की पालिसी है। यह गुजरात सरकार ने मांगी और हमने कहा कि बंगाल की खाड़ी में, पूर्वी क्षेत्र में भी होना चाहिए, क्योंकि जो पैट्रो कैमिकल्स के नये सनराइज इंडस्ट्रीज हैं, वे पश्चिमी तट में ज्यादा है और पूर्वी तट में नहीं हैं। हमने शुरू से यह कहा कि हमें पश्चिमी तट में भी चाहिए। क्योंकि बंगाल की खाड़ी के किनारे समुद्री तट पर हल्दी नदी के किनारे, हल्दी नदी के उस पार, हल्दिया बंदरगाह पर यह हो सकता है, ऐसी भावना, ऐसी सोच आई। यह सोच पी.सी.पी.आई.आर. के बारे में आई, एस.ई.जेड. के बारे में नहीं आई। इसलिए इंडियन ऑयल के साथ पश्चिम बंगाल सरकार का एम.ओ.यू. साइन हुआ कि एंकर इनवैस्टर इंडियन ऑयल कारपोरेशन होगा, क्योंकि पैट्रोलियम और पैट्रो कैमिकल्स का मामला है। इंफ्रास्ट्रक्चर विदेशी संस्था या देसी संस्था डवलप कर सकती हैं, जो पी.सी.पी.आई.आर. के रूल्स में हैं। लेकिन वामपंथी सरकार की यह मान्यता है कि केन्द्र सरकार एक योजना बना ले, हम तैयार हो जाएं, लेकिन हम उसे लागू नहीं कर सकते, जब तक पंचायत और लोग, क्योंकि विकास लोगों से संबंधित है और उन लोगों को जोड़कर यदि हम फैसला नहीं करते हैं तो हम विकास के नाम पर आगे नहीं बढ़ सकते। यही कारण है कि बत्ता पैदा होने से पहले नाम रखा गया। बेशक नंदीग्राम में जो कुछ हुआ, वह बहुत दुखद घटना है, अफसोसनाक है। मैं यहां खड़ा हुआ हूं, यह हमारे लिए बहुत ही अफसोसनाक घटना है, यह कोई खुशी की बात नहीं है। चूंकि पूरे हंगामे में जितने लोग मारे गये, गरीब, किसान, गांव वाले, चाहे वहां के हों या बाहर के हों, चाहे इस पार्टी के हों या उस पार्टी के हों, उनकी जानें तो गईं। जो बेबसी और लाचारी 11 महीने से है, आडवाणी जी ने भी यही कहा और श्री दासमुंशी ने भी यही कहा कि यह मामला सिर्फ आज का नहीं है, यह जनवरी महीने की तीन-चार तारीख से शुरू हुआ और अभी यह मामला यहां आया है। मौतें होना दुखद है, न तो उसका धर्म देखना चाहिए, न उसका राजनीतिक मत देखना चाहिए। मैं स्वयं बंगाल का एक प्रतिनिधि हूं, इसलिए हमारी पीड़ा ज्यादा ही है। लेकिन नंदीग्राम और एस.ई.जेड. के सवाल पर जो घटनाएं हुईं, मैं आडवाणी जी को कोट कर रहा हूं, उन्होंने कहा कि वे वहां तक सीमित नहीं हैं। इसमें बहुत से चार्जर्स व्हाईस इनवोल्व्ड हैं। बहुत से प्लान उठे हैं। हम अगर डिसपैशनमेंटली डिस्कशन नहीं करते हैं, हम अगर बहुत भावनात्मक रूप से, भावुक होकर, संकीर्ण राजनीतिक दृष्टि से देखते हैं, तो हो सकता है कि नंदीग्राम के मामले में किसी को दो फायदे हों और किसी को दो नुकसान हों, लेकिन एस.ई.जेड का मामला, जमीन से जुड़ा हुआ मामला, किसान का मामला, विकास का मामला, विकास के जिन नये रास्तों पर वैश्वीकरण के साथ 21वीं सदी में हम चल रहे हैं, उससे संबंधित बहस से सवाल उठे हैं, हम कहीं न कहीं उन सवालों को लेकर चर्चा करना चाहते हैं [b33]। [r34] सबसे अच्छा है कि संसद में उस पर चर्चा हो। हम लोक तंत्र में विश्वास करते हैं, पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी, डेंचलॉग, डिस्कशन, डिबेट के अलावा हम फैसला नहीं कर सकते और एक पहला गतिरोध नंदीग्राम में यह हुआ कि चुने हुए सरकार, चुने हुए विरोधी पक्ष पिछले 11 महीने से यह कह रहे हैं कि हम किसी सर्वदलीय बैठक में नहीं जाएंगे। हम कोई डिस्कशन नहीं करेंगे, कौन से विषय पर? जो पीसीपीआईआर के निर्णय है, वह सीपीआई नहीं चुनेगा, वह मुख्य मंत्री का निर्णय नहीं है। मैं पार्लियामेंट में हूं। असेम्बली के जो सबजेक्ट और कमेटीज होती हैं, हमारे यहां जैसे संसदीय और स्थायी समिति हैं, वैसे पश्चिम बंगाल असेम्बली की स्थायी समिति है जिसके अध्यक्ष कांग्रेस पार्टी के हमारे पुराने सांसद हैं और अभी विधायक हैं, सुदीप बंधोपाध्याय जी अध्यक्ष हैं जिसमें तृणमूल कांग्रेस के भी मੈम्बर्स हैं, उन्होंने 19 दिसम्बर 2006 को फैसला किया कि नंदीग्राम अच्छी जगह हो सकती है और नंदीग्राम को आइडेंटिफाइ किया गया। I am again repeating that it is not as SEZ for the investment of PCPIR by both the Central Government and the State Government. यह जगह सुविधाजनक हो सकती है लेकिन फैसला नहीं हुआ। कहां से शुरू हुआ? तीन तारीख को पंचायत ने, ग्राम सभा के प्रधान और बहुत से नाम आए कि चुने हुए मुखिया मीटिंग कर रहे हैं, उसमें बाद में हंगामा हुआ। एक दिन में नहीं हुआ। उससे पहले प्रचार चल रहा था। उससे भी पहले यह प्रचार चल रहा था कि यह मीटिंग लैंड एक्विजिशन के लिए है। हम सांसद हैं। बाकी लोग बोल सकते हैं और पत्रकार भी कुछ लिख सकते हैं। पंचायत मीटिंग करके लैंड एक्विजिशन नहीं करती। लैंड एक्विजिशन कानून के मुताबिक डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर को नोटिफाइ करना पड़ता है, नोटिस देना पड़ता है।

हमारे स्युंवां जी की निर्मल गांव योजना है और मिदनापुर जिले को निर्मल गांव योजना में, जिसमें नंदीग्राम है, उसने सबसे अच्छा काम किया है, ऐसा कहकर पुरस्कृत किया जाएगा लेकिन इसके पहले केन्द्रीय टीम भेजी जाएगी। केन्द्रीय टीम ने कई गांवों को देखा है। 14 और 15 तारीख को नंदीग्राम को भी देखा है। उसके लिए उसकी प्रस्तुति चाहिए। सेंट्रल टीम आएगी। वह मीटिंग हो रही है। मैं क्यों बोल रहा हूं? मैं इसलिए बात कर रहा हूं कि हमें सत्य तक पहुंचना है। मैं यह नहीं कहता कि मैं ही सत्य बोल रहा हूं। चूंकि ऐसी हवा बनी, ऐसा प्रचार हुआ, ऐसा दुप्रचार हुआ, ऐसी घटनाएं घटी, ऐसा माहौल पैदा किया गया जिसमें सच को ढूंढ़ निकालना बड़ा दिक्कत का काम हो रहा है। फैक्ट्स और फिक्शन में बहुत फर्क है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि एक साल से ये सब प्रचार चल रहा है। आज तक यह जारी है। मैं सब प्रचार को दुप्रचार नहीं कह रहा हूं। लेकिन मैं जिस बात के लिए कह रहा हूं कि अगर एक गांव में चुना हुआ ग्राम प्रधान मीटिंग करे और चुने हुए एमएलएज के नेतृत्व में बाजू वाले इलाके से अगर आकर यह कहा जाए कि यह मीटिंग नहीं चलेगी, इनके ऑफिस पर हमला करे, ताला लगाओ, बाजू वाले हेल्थ सेंटर पर हमला करे, चुने हुए ग्राम प्रधान को मारे चूंकि वह सीपीएम के चुने हुए प्रधान हैं। इसमें फर्क मत कीजिए। हम सांसद चुने हुए हैं। चुने हुए एक एमएलए सीपीआई के हैं, सीपीआईएम के नहीं हैं। लेकिन वह वहां चुने हुए इलाके में नहीं जा सकते। ठीक है, सांसद श्री लक्ष्मण सेठ नहीं जा सकते। फतवा लगाया गया। आज किसी को, सांसद अपने दिल पर हाथ रखकर यह कहिए चाहे एक गांव हो या 22 गांव हों, चाहे एक जिला हो या क्षेत्र हो, अगर कुछ लोग यह फैसला करें कि आप चुने हुए प्रतिनिधि हो लेकिन आप इस क्षेत्र में नहीं आ सकते, यह हमारा फतवा है, हो सकता है, वह पोपुलर हो, लोकप्रिय हो। चूंकि किसान को डर है कि उसकी खेती, उसकी जमीन जाएगी, उसकी रोजी-रोजी जाएगी। एक दैत्य की तरह अगर यह हो जाए कि जो भी आएगा चाहे वह सेंट्रल गवर्नमेंट के प्रतिनिधि आए, चाहे वह पंचायत के प्रतिनिधि आए और चाहे वह एमएलए आए, चाहे एमपी आए, चाहे पुलिस आए, चाहे सीपीआईएम आए, उनके आने से तुमहारी जमीन चली जाएगी। मैं उन गांव वालों को बुरा नहीं कह रहा हूं। चूंकि उनकी रोजी-रोटी का आश्रय सहाय वह जमीन है, इसलिए जमीन के मुद्दे को आप छोड़कर नंदीग्राम पर चर्चा नहीं कर सकते। फिर मैं नंदीग्राम की बात कर रहा हूं। इसलिए ज़ाहिर सी बात है कि उस डर, उस भय, उस खौफ, उस अफवाह और फतवा का सहाय लिया गया। कहा गया कि यह मीटिंग जो हो रही है, तुमहारी जमीन चली जाएगी। जो बेबस, बेसहारा गरीब, पिछड़े हुए लोग, इन्होंने खुद कहा है कि पिछड़े हुए और गरीब लोगों का इलाका है। वह आइलैंड इलाका है। जहां से भी आप जाएंगे, आपको नदी पार होना पड़ेगा। [r35] दासमुंशी जी खुद वहां गये हैं। एक तरफ समन्दर, बाकी सब तरफ नदी। उसमें और कहा गया कि पूरे ब्लॉक में 22 गांव हैं, जब कि सरकार की भावना को देखना होगा कि उसमें 4-5 गांव हो सकते हैं। लेकिन ऐसे कौन से गांव हैं, ऐसा कोई नहीं जानता, न आइडेंटिफाई किये गये और न नोटिफाई हुये। कोई विशेष डेवलपमेंट प्रोजेक्ट नहीं बना जो सेंट्रल गवर्नमेंट के पास जमा किया जाता। बेशक एक सोच चल रही थी और हमले हुये। मेरा पहला सवाल यह है कि इस देश के लोकतंत्र के सर्वोच्च मंदिर में, सर्वोच्च पंचायत में विरोध

हो सकता है। हम आपसे विरोध कर सकते हैं, हमारी नीति को आप नहीं मान सकते हैं, नकार सकते हैं। आपकी नीति को लेकर हमारा झगड़ा हो सकता है लेकिन चुनी हुई सरकार, चुनी हुई पंचायत, चुने हुये विधायक और सांसद उनकी बात को नहीं मानते हैं। छारी हुई पार्टी यह फैसला कर सकती है कि इस पंचायत पर ताला लगा दो, उनके विधायक के दफ्तर पर ताला लगा दो, सांसद का अंदर आना बंद कर दो, अगर विधायक अंदर आते हैं, तो उन्हें मार-मार कर काटकर फेंक दो। हो सकता है कि सीपीआई के आदमी हों लेकिन इस पहलू को तंग नजर से मत देखो। यह मामला मीडिया से नहीं कह रहा हूँ, बुद्धिजीवियों से नहीं कह रहा हूँ, मैं सांसदों से कह रहा हूँ, जिन्हें लोकतंत्र का पहरदार कहा जाता है जो इस लोकतंत्र में पल और पनप रहे हैं। अगर यह कहा जाये कि यह हुआ तो आप विरोध नहीं करेंगे। ऐसा ही होता है। हो सकता है कि कुछ को इसका राजनैतिक लाभ हो, लाभ उठाये। चूंकि पापुलर मामला बना, इसके लिये हमें अपने अंदर झांकना है कि ऐसी गलतफहमी क्यों हुई? क्यों ऐसी अफवाह पर विश्वास करें, ऐसे असत्य को क्यों बहाना बनाया जाए? लेकिन घटना तो हुई। 6 तारीख को नन्दीग्राम में शंकर सामन्त की मौत हुई, उसका घर जलाया गया, उसे मारा गया, उसकी बोटी-बोटी कर दी गई - क्यों? चूंकि वह सीपीएम की चुनी हुई पंचायत के सदस्य थे, क्योंकि वह चाहते थे कि कैमिकल हब हो। हो सकता है कि न हो। लेकिन अगर हम किसी चुनी हुई सरकार के घोषित कार्यक्रम को राजनैतिक या अन्य कारण से समर्थन करते हैं तो हमें भारत का संविधान उसकी बोटी-बोटी करने की इजाजत नहीं देता, या कानून हमें इसकी इजाजत नहीं देता। ठीक है, आप विरोध मत कीजिये। ऐसा बंगाल में 70 के दशक में राजनैतिक कारणों से हुआ, जब इमरजेंसी से 4-5 साल पहले सेमी-फासिस्ट टैरर हुआ। ठीक है, उन्हें माओवादी मत कहें, क्योंकि दासमुंशी जी उस पर आपत्ति कर रहे थे, लेकिन उस समय के पनपे हुये नेता हैं जब सड़क पर लोग एक-दूसरे को मारकर, काटकर बेदखल कर रहे थे और अपना राजनैतिक फैसला कर रहे थे। उसके बाद दूर तक चलकर हम आगे बढ़े हैं...(व्यवधान) मैं इतिहास की बात कर रहा हूँ, एक समय से वह साक्षी हैं। चूंकि यहां श्रेय सलीम का नाम आया है जिसकी हत्या की गई, उसकी डैड बॉडी मिली। अब शंकर सामन्त की बात की गई कि वह बुद्धिजीवी थे। दिल्ली से बुद्धिजीवियों की एक टीम गई। चाहे वह वामपंथी हो या दक्षिणपंथी हो, बुद्धिजीवी बुद्धिजीवी होता है...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Don't get diverted.

मोहम्मद सलीम : फैक्ट्स फाइंडिंग टीम ने गांव में जाकर लोगों से बातें की जिसकी रिपोर्ट मेरे पास है कि शंकर सामन्त गांव के लोगों को मारता था, एक प्रोवलेम्ड मर्डर था, सीपीएम का आदमी था, लोगों पर जुल्म करता था, उनके घर पर हमला करता था और इसी कारण उसे जलाकर मार डाला गया। पॉलिटिकल स्कोर सैटल करने के लिये एक नई संस्कृति हो सकती है, लेकिन उनकी रिपोर्ट में कहा गया कि श्रेय सलीम को क्यों मारा गया। कहते हैं कि शंकर सामन्त के घर पर श्रेय सलीम पर हमला हुआ, इसलिये शंकर सामन्त को जलाया गया। श्रेय सलीम का घर दक्षिण केन्द्रपाड़ा में है जिसे मैप में बताया गया है कि यह शंकर सामन्त के घर से 15 किलोमीटर दूर है।[s36]

कहानी की गाय पेड़ पर चढ़ सकती है तो 15 किलोमीटर दूर से शंकर सामन्त हमला भी कर सकता है श्रेय सलीम के यहां। अगर किसी को मारना है तो फिर मारने के बाद कुछ भी कह सकते हैं लेकिन मैं फैक्ट कह रहा हूँ, फिक्शन नहीं। ऐसी एक मिसाल मैं नहीं दे रहा हूँ। आनन्द बाज़ार पत्रिका घोषित वामपंथी विरोधी बड़ी पत्रिकाओं में से एक है। 6 जनवरी को उनका एडिटोरियल आया। 4 जनवरी के बाद 6 जनवरी को, शंकर सामन्त की बात उन्हें नहीं मालूम है, जो कह रहे हैं कि माओवादी कहां से आ गए, सीपीएम कहां से ले आई माओवादियों को - माओ क्यों बोलते हैं इनको? 6 जनवरी 2007 के एडिटोरियल में आनन्द बाज़ार पत्रिका कहती है कि 17वीं सदी में जैसे होता था कि बाहर से लोग आकर हमला करते थे, हम कहते हैं कि उस वक्त बड़ा सा डिव कवैरड किया गया था क्योंकि बाहर से हमले हो सकते थे - ईस्ट और वेस्ट से। इनका हवाला देकर कहते हैं कि ये जो हमले हुए, 3 तारीख को पुलिस की बंदूकें छीनी गईं, बाद में तृणमूल के एम.एल.ए. ने बंदूक लाकर जनवरी महीने में वापस कर दी। वह लाकर दीं श्री अधिकारी ने। वे कहते हैं कि यह जो हमला है, इससे पता चलता है कि नक्सलाइट्स इसमें हैं। पैटर्न ऑफ द वायलैन्स से पता चलता है कि गांव के लोगों को गरम करके, हमलावर बनाकर, चुने हुए ग्राम प्रधानों पर हमला किया गया, पुलिस की बंदूक छीन ली गई, यह यहां पर ही खत्म नहीं हो जाएगा, बहुत सही कहा उन्होंने। यह बात बहुत आगे बढ़ सकती है क्योंकि इसमें नक्सल इनफ्लूयेन्स देखने को मिल रहा है, जो बाहर से आया हुआ है। वह एडिटोरियल मेरे पास है, मैं उसको नहीं पढ़ रहा हूँ, वह बंगला में है। 6 जनवरी की वह आनन्द बाज़ार पत्रिका है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए, डाइवर्ट मत हों।

मोहम्मद सलीम : अच्छी बात है कि वे श्री अशोक मित्रा को पढ़ते हैं। अशोक मित्रा जी पिछले छः सालों से बोल रहे हैं कि मोदी इज़ ए फासिस्ट। हम उसको लेकर चर्चा नहीं करते हैं। आप उनकी बात मानिए। ...(व्यवधान)

मैं घटना बयान नहीं करूंगा। जनवरी महीने के पहले हफ्ते से जो भूमि उत्खनन प्रतिरोध कमेटी, बीयूपीसी, जिसका नाम आडवाणी जी ने भी कहा कि भूमि से विस्थापन विरोधी समिति, उसमें कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस - मानता हूँ इका दुवका कांग्रेसी थे, ज्यादा नहीं थ, जमाते उलेमा हिन्द, बीजेपी, तीन किस्म की एसएसआई और 22 किस्म के नक्सल, और कुछ इंडीपेन्डेंट लोकल सब जुड़े। क्योंकि पापुलर मूवमेंट था। पापुलर मूवमेंट नहीं होने से कुछ नहीं होता। फरवरी महीने में सरकार ने घोषणा कर दी - मुख्य मंत्री, सीपीआई एम के पालित ब्यूरो और स्टेट कमेटी ने कि जनता नहीं चाहती है और यहां कार्यकलाप नहीं होगा। चूंकि घोषणा कर दी गई, इसलिए पुलिस वहां नहीं जा सकती। उस ब्लाक के बाजू वाला जो ब्लाक था - खेजुरी, वहां पब्लिक मीटिंग करके एलान कर दिया गया, डीएम के द्वारा बाद में बोला गया, गांव-गांव में नोटिस लगा दिया गया, गांव सभा में, ब्लाक ऑफिस में कि यहां लैन्ड एक्वीज़िशन नहीं होगा। बोलते हैं लैन्ड एक्वीज़िशन जबकि सरकार की तरफ से लैन्ड एक्वीज़िशन नोटिस नहीं दिया गया था, लेकिन चूंकि संदेह पैदा हुआ, चूंकि अफवाहें आईं, इसलिए काउंटर दिया गया कि यहां पर घोषणा है कि लैन्ड एक्वीज़िशन नहीं होगा। लेकिन उससे मामला शांत नहीं हुआ। कहा गया कि पुलिस अंदर नहीं आएगी। केन्द्रीय मंत्री ने बेशक नहीं कहा, लेकिन चूंकि उन्होंने यहां भाषण दिया है, इसलिए मैं कह रहा हूँ, और मेरे पास उनकी भी विलिफिंग है। जनवरी महीने में हमले के बाद जमाते उलेमा हिन्द के सहारे कांग्रेस पार्टी की एक मीटिंग हुई नन्दीग्राम में, क्योंकि बाहर से कोई जा नहीं सकता कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, जमातेउलेमा हिन्द के सहारे के बिना। वहां मौजूद एक साबिका मंत्री वैस्ट बंगाल के, कांग्रेस के नेता, पहले वे तृणमूल कांग्रेस में थे, पहले वे कहते थे कि मैं जिम्मेदारी लेकर बोल रहा हूँ, बाजू में मेरा केन्द्रीय मंत्री बैठा है, अगर पुलिस को देखो, सीपीएम को देखो तो मारो। साबिक मंत्री, कलकत्ते के साबिका मेयर, आधा तृणमूल और आधा कांग्रेस, लोग समझ जाएंगे। मैं वहां नहीं था। जो बंगला अखबार में रिकार्ड आया अगले दिन, मैं वह पढ़ता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : आप छोड़िये। प्लीज़, बैठिये।

â€¦(व्यवधान)[h37]

MR. SPEAKER: Do not record anything.

(Interruptions)* â€¦

MR. SPEAKER: No interjections without my permission.

â€¦! (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please sit down. Nothing will be recorded.

(Interruptions)* â€¦!

MR. SPEAKER: Do not record anything.

(Interruptions)* â€¦!

MR. SPEAKER: Mr. Salim, you carry on please. You have to finish within ten minutes.

* Not recorded

मोहम्मद सलीम : मैं कह रहा हूँ कि इतने अच्छे माहौल में बात हो रही है, आप सब लोग सहायता कर रहे हैं...(व्यवधान) 14 मार्च को घटना घातक, अफसोसनाक और बहुत ही दुःखद हुई। मुख्य मंत्री जी और हम भी कह रहे हैं कि पुलिस का यह फैसला हुआ कि पुलिस वहां जाएगी। आप सोचें कि एक ब्लाक को यह कहा जाए कि जनता के बीच में असंतोष है, इसलिए पुलिस, स्कूल टीचर, सरकारी कर्मचारी, ब्लाक डेवलपमेंट आफिस का कोई व्यक्ति अंदर नहीं जा सकता। जब दो-ढाई हजार सीपीएम के समर्थक, नेता, पंचायत के चुने हुए कोई प्रतिनिधि अंदर नहीं जा सकते, ये सब बाहर बैठे हैं। इन सब को बाहर कर दिया गया। इसमें इंसानियत, मानवता एवं मानव अधिकार का सवाल है। आप जो कह रहे हैं कि अभी भी चार सौ-पांच सौ लोग बाहर हैं, जो भूमि उत्खेद प्रतिरोध कमेटी के समर्थक हैं, मैं मानता हूँ कि उनका भी उतना ही हक एवं अधिकार है कि वे गांव के अंदर जाकर अपने परिवार के साथ शांतिपूर्वक रहें। सीपीएम, पुलिस, बंगाल सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं बनती कि उनके रहते हुए कोई बाहर जाकर रहे, लेकिन जो ढाई हजार लोग जनवरी महीने से बाहर निकले हुए हैं, जिनका बच्चा बाहर पैदा हुआ और वह बीमार होकर मारा गया। कई हत्याएं हुईं और जिनके परिवार की महिलाएं अंदर रहीं, उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया, अन्याय किया गया। उनका रैप करके उन्हें पेड़ के साथ लटका कर टांग दिया गया, ये सब बहुत गलत किया गया। पुलिस वहां जाकर केस भी रजिस्टर नहीं कर सकती, पुलिस इनवेस्टीगेट भी नहीं कर सकती। पुलिस ने 14 मार्च के पहले वहां जाने की कोशिश की, साधुसंत चटर्जी एसआई और आईबी के लोग होते हैं, वे खबर लेने के लिए प्लेन वलथ में गए, लेकिन उन्हें लिंच कर दिया गया। सीपीएम के लोगों को मारने के लिए हथियार ठीक नहीं हैं, इसलिए उनका इस्तेमाल नहीं होगा। ठीक है, मैं इस बात को मानता हूँ। लेकिन यह सोचने की बात है कि 14 मार्च को कैसे फैसला हुआ, उससे पहले कई बार ऑल पार्टीज मीटिंग हुई। दस मार्च को डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर के यहां ऑल पार्टीज मीटिंग बुलाई गई कि रोड, कलवर्ट, ब्रिज आदि कई चीजों को तोड़ दिया गया है। पब्लिक को परेशानी हो रही है, एम्बुलेंस नहीं जा सकती है। उसे स्थिर करना पड़ेगा। सिर्फ वामपंथी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि आए। कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस ने बॉयकाट किया कि वे मीटिंग में नहीं जाएंगे। स्टेट लेवल, डिस्ट्रिक्ट लेवल और ब्लाक लेवल पर शांति लाने के लिए जितनी ऑल पार्टीज मीटिंग हुई, कभी कोई वर्कर आकर फैसला भी करते हैं तो ये सुनते नहीं हैं, लेकिन दस मार्च को यह फैसला हुआ कि पुलिस जाएगी, मिस्ट्री जाएंगे और फिर वहां जो कलवर्ट रोड एवं ब्रिज टूटे हैं उन्हें बनाया जाएगा। लोगों का पापुलर सपोर्ट था, रजिस्ट्रेशन थी और उनमें अवेयरनेस थी...(व्यवधान) आप सब जानते हैं कि इसे टीवी, वीडियो, एसएमएस, विलफिंग में और कई तरीके से पूरे देश में दिखाया गया।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Do not record anything.

(Interruptions)* â€¦!

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए, आपके लीडर बोले हैं।

...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Mr. Swain, you have to take proper permission before you do that.

â€¦! (Interruptions)

MR. SPEAKER: There is no question of defending. Do not make any aspersions. Enough is enough.

â€¦! (Interruptions)

MR. SPEAKER: I am not defending anything. I want the debate to continue in a proper manner. I have nothing to do. I have allowed this Motion.

मोहम्मद सलीम : एसडीओ और डीएम के यहां जो मीटिंग होती है, वहां जो अटैंड करते हैं, वह सही होता है। इसलिए बोला कि जिन्होंने बॉयकाट किया था, उन्होंने बॉयकाट नहीं किया था, उन्होंने बोला था कि हम आएंगे, लेकिन वे नहीं आए। मैंने बीजेपी का नाम इसलिए बोला, उन्हें नाम लेने में दिक्कत है। मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि वहां उनके प्रतिनिधि आए थे।...(व्यवधान) वहां बीजेपी के लोग आए थे और उन्होंने कहा कि मिनिट्स में सही फैसला किया। उन्होंने कहा कि पुलिस को वहां जाना चाहिए, लेकिन जब पब्लिक रजिस्ट्रेशन हुआ, हंगामा हुआ और गोली चली तो वहां कई लोग मारे गए। वहां आठ लोग पुलिस की गोली से मारे गए...(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : सौ से ज्यादा लोग मारे गए...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: It will not be recorded.

(Interruptions)* â€

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : वहां 600 आदमियों का पता नहीं चला है।... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने बहुत अच्छा भाषण दिया।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Will you stop it?

â€ (Interruptions)

* Not recorded

MR. SPEAKER: Otherwise I will call the next speaker.

â€ (Interruptions)

मोहम्मद सलीम : प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा सही कहते हैं, चूंकि वह जानते हैं कि जब हत्या होती है, तो सैकड़ों की तादाद में होती है, एक, दो या चार नहीं, क्योंकि यह गोधरा में हुआ वहां संख्या ज्यादा रही थी।... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Mr. Salim, you address the Chair, please.

â€ (Interruptions)

मोहम्मद सलीम : मैं होम मिनिस्टर साहब का ध्यान उनके द्वारा नवसली प्रॉब्लम पर दिनांक 13 मार्च, 2006 को इस सदन में जो भाषण -- status paper -- दिया गया था, उसकी तरफ ध्यान खींचना चाहता हूं। मैं एक पैराग्राफ पढ़ूंगा।

Para 1.1 says:

"The Naxalite movement continues to persist in terms of spatial spread, intensity of violence, militarisation and consolidation, ominous linkages with subversive or secessionist groups and increased efforts to elicit mass support. The naxalites operate in vacuum created by absence of administrative and political institutions, espouse the local demands and take advantage of the disenchantment prevalent among the exploited segments of the populationâ€ "

One is the absence of administrative mechanism; then there is vacuum where political institution is not functioning. That is the strategy in accordance with the Home Ministry's document saying how Naxalites have changed their strategy and how they are doing it. It is not a CPM document.... (Interruptions)

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): Mr. Speaker, Sir, I would like to draw your attention... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Unless he yields, I would not allow.

â€ (Interruptions)

श्री ब्रज किशोर त्रिपाठी : सर, अभी कोलकाता में फायरिंग हो रही है। राज्य सभा एडजर्न हो गई है। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: You take your seat. Maybe Rajya Sabha has adjourned. You are not a journalist.

â€ (Interruptions)

मोहम्मद सलीम : सर, हम पहले ही कह रहे थे कि ये अपनी बात कह देंगे, उसके बाद हंगामा करेंगे और हमें अपनी बात नहीं कहने देंगे। इसलिए मैं जल्दी समाप्त कर रहा हूं। ... (व्यवधान)

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : Home Minister is here; he should make a statement.

MR. SPEAKER: Very well appreciated; Kolkata is not under his jurisdiction.

â€ (Interruptions)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : सर, यह तो कन्वल्ड कर रहे हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि कोलकाता में क्या हो रहा है? ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: What is going on? I am sorry, you are deliberately disturbing the debate.

â€ (Interruptions)

MR. SPEAKER: I would not allow it.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: What is this? You cannot just get up at any moment you like and demand a statement.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Sorry, I would not allow it.

Nothing will be recorded. It will not be recorded.

(Interruptions)* â€¦

MR. SPEAKER: Mr. Salim, Please conclude now.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: This is not the method, Mr. Malhotra. Knowing everything, you are raising this point.

â€¦ (Interruptions)

* Not recorded

MR. SPEAKER: Md. Salim, you address the Chair.

â€¦ (Interruptions)

मोहम्मद सलीम : सर, ये यही चाह रहे थे कि अपनी बात कह कर हंगामा कर दें और हमारी बात न सुनें। इसीलिए मैंने पहले कहा था कि हमारी बात भी सुननी पड़ेगी। ...**(व्यवधान)** मैं केन्द्रीय मंत्री से उम्मीद करता हूँ कि वे कम से कम अपनी सरकार की बात को मानकर चलें। केन्द्रीय मंत्री महोदय ने अभी यह कहा कि 'माओ' शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है। माओत्से तुंग रंग नेता थे। हम भी उनकी रैस्पैक्ट करते हैं, लेकिन उनके फौलोअर कहां से कहां चले गए, यह बताना चाहता हूँ। अभी श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ सोवियत यूनियन की 20वीं रिपोर्ट पढ़ रहे थे। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि उन्हें इतनी दूर जाने की जरूरत नहीं है। जब वे होम मिनिस्टर थे, उस समय की माओइस्ट रिपोर्ट पढ़ लें, मैं खुद भी पढ़ूंगा। जो नैशनल सिक्वोरिटी एडवाइजर हैं, उन्होंने जो अपनी बात मीडिया में कही, उससे मैं कोट कर रहा हूँ। प्रधान मंत्री जब मास्को जा रहे थे, तो उन्होंने ऑन बोर्ड एयर इंडिया के प्लेन में बोला कि-

"The Maoists said at their 9th Congress that wherever there is an opportunity, they will get in. This is one area that they have entered into. â€¦."

What is that area? उससे पहले वे कह रहे हैं कि-

"It was deeply concerned about the role of Maoists in the simmering conflict at Nandigram in West Bengal."

उसके बाद कैसे माओइस्ट गए, वह कह रहे हैं, कौन कह रहे हैं, अभी के सिक्वोरिटी एडवाइजर कह रहे हैं। [\[r38\]](#)

[\[h39\]](#) He said: "Some of the violence can be attributed to Maoists." ...**(Interruptions)**

MR. SPEAKER: Prof. Malhotra, you are a senior Member. Please do not give a running commentary. I respect you so much.

â€¦ (Interruptions)

MD. SALIM : It is a matter of concern for both the Government of India and the Government of West Bengal. ...**(Interruptions)** वह यह भी कह रहे हैं कि Delhi is concerned. Kolkata is also deeply concerned. The idea is to ensure that no more lives are lost and those who have been driven out and blocked from returning to their homes can do so with minimum violence and casualties. नैशनल सिक्वोरिटी एडवाइजर का यह बयान नवम्बर-अक्तूबर में मास्को जाने से पहले का है। प्रधानमंत्री जी ने 13 अप्रैल 2006 को अपने भाषण में कहा था "It would not be an exaggeration to say that the problem of naxalism is the single biggest internal security challenge ever faced by our country. I have been carefully listening to all of you and I have also interacted separately â€¦." लेकिन अब केन्द्रीय मंत्री यह कह रहे हैं कि यह माओइस्ट शब्द कहां से आया? झारखण्ड में एमसीसी और पीडब्ल्यूजी, आंध्र प्रदेश ने मिलकर जब माओवादी कम्युनिस्ट पार्टी इस देश में बनाई तब कुछ लोगों ने यह समझा की एक अल्टरनेटिव सीपीएम बन गई है। आडवाणी जी ने पिछले साल 19 नवम्बर को इसी सदन में इंटरनल सिक्वोरिटी पर चर्चा के समय भाषण दिया था क्योंकि भारतीय जनता पार्टी और एनडीए इंटरनल सिक्वोरिटी को बहुत महत्व देती है। उस समय दिए गए श्री आडवाणी जी के भाषण को मैं देख रहा था। उस भाषण में सिर्फ एक लाइन उन्होंने नक्सलवाद के लिए कही थी, लेकिन आज उन्होंने वह एक लाइन भी नहीं कही। कुमारी ममता बनर्जी ने भी बांकुरा और तेजपुर में अपने भाषण में कहा था कि सीपीएम को यदि चुनाव में नहीं हराया जा सकता है, तो बल के द्वारा उन्हें हटाने के लिए हम माओइस्ट का सहारा लेंगे। इसीलिए एनडीए की यह मजबूरी है कि इंटरनल सिक्वोरिटी पर वे भाषण तो दे सकते हैं, लेकिन माओइस्ट के खिलाफ एक शब्द नहीं बोल सकते हैं। क्या इससे हमारा नुकसान है? क्या इससे देश का नुकसान नहीं है? आप कह रहे हैं कि देश के 170-175 डिस्ट्रिक्ट नक्सलवाद से प्रभावित हैं, लेकिन आप ही के केन्द्रीय मंत्री कह रहे हैं कि माओइस्ट शब्द कहां से आया है? हम बंगाल को भयंकर और दांतेवाड़ा नहीं बनाना चाहते हैं। झारखण्ड और छत्तीसगढ़ में किस वजह से आज माओवादी पनप रहे हैं? यदि लालकृष्ण आडवाणी जी, जो कि तौह पुरुष हैं, राजनीतिक स्वार्थ के लिए इतनी

कमजोरी माओइस्ट के लिए दिखाते हैं तो देश को माओइस्ट के खतरे से बचाने के लिए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी को जिम्मेदारी लेनी होगी...(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : यह आपके 30 साल के पश्चिम बंगाल में शासन का नतीजा है। आप नेपाल में प्रवण्ड के पास जाकर मिन्नत करते हैं...(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : यह आप क्यों कह रहे हैं कि हम 30 साल से बंगाल में हैं?

अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी इजाजत से आडवाणी जी के भाषण को कोट करना चाहूंगा जो उन्होंने 19 नवम्बर को इसी सदन में इंटरनल सिक्योरिटी पर दिया था। आज उन्होंने गवर्नर, आईजी और डीआईजी की बात कही, लेकिन पिछले भाषण में जब वे कह रहे थे, तब बंगाल या सीपीएम का मामला नहीं था, लेकिन होम मिनिस्टर का बीच-बीच में इंटरप्शन है। उसमें वे कह रहे हैं कि आप एक सीनियर मੈम्बर हैं और मिनिस्टर भी रह चुके हैं इसलिए आप आईजी और डीआईजी की बात मत कहिए। लेकिन आज उन्होंने वे सब बातें बड़ी खामोशी से सुनीं। यह अच्छी बात है। आडवाणी जी के भाषण में नवसलाइट्स के बारे में केवल एक ही लाइन है कि "नवसलवाद से प्रभावित इलाकों में जो राजनीतिक अस्थिरता आती है, वह बहुत गम्भीर है। मैं सुनी-सुनाई बात के आधार पर कहता हूं, मेरी किसी से प्रत्यक्ष बात नहीं हुई है...." फिर उन्होंने कहा "लेकिन मैं इतना जानता हूं कि पशुपति से लेकर तिरुपति तक रेड कॉरिडोर बनाने की जो इच्छा है, उसे किसी प्रकार से समर्थन नहीं मिलना चाहिए।" आडवाणी जी जो पशुपति से लेकर तिरुपति तक की बात कह रहे हैं, जाहिर सी बात है कि वह माओइस्ट के बारे में कह रहे हैं, वामपंथी फ्रंट के बारे में नहीं कह रहे हैं। [r40]

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : You are there for 30 years. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Md. Salim, you address the Chair.

â€ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Now, you please conclude.

मोहम्मद सलीम : माओइस्ट थ्रेट के बारे में कह रहे होंगे, इसलिए पशुपति से तिरुपति कहा, एक साल पहले पशुपति से तिरुपति याद था, अब यह कहाँ से याद आ गया?

MR.SPEAKER: Okay. Please conclude now.

MD. SALIM : Give me some time. I am concluding.

MR. SPEAKER: Do not get diverted. That is what I am requesting.

मोहम्मद सलीम : अब मैं अक्टूबर-नवम्बर की दुखद घटना के ऊपर आ रहा हूं। मार्च के बाद से 2500 लोग घर से बाहर थे, कोई फिक् नहीं थी, अच्छी बात है, आडवाणी जी दो बार वहां गये। मार्च की घटना में भी गये और अभी नवम्बर की घटना में भी गये। बीच के इण्टरवीनिंग पीरियड में नंदीग्राम खो गया था, नंदीग्राम में कोई समस्या नहीं थी, नंदीग्राम में हत्याएं नहीं हो रही थीं। 27 सी.पी.आई.(एम.) के कार्यकर्ता कत्ल हुए। मैं यह नहीं कहता कि तृणमूल कांग्रेस या बी.ओ.पी.सी. ने यह किया, उनका तो मोराल भी नहीं है, लेकिन आजकल लोग सुपासी देते हैं। मार्च के बाद से आई.बी. की रिपोर्ट है कि अप्रैल-मई में माओइस्ट झारखंड से, बंगाल के दूसरे जिलों से, मेदिनीपुर से, उड़ीसा का जो बोर्डर इलाका है, वैस्ट बंगाल के इफैक्टिव इलाके पुरुलिया, बांकुरा से इंडिविडुअल हुए। आज 48 घंटे का बन्द माओविस्टों ने ऐसे ही नहीं बुलाया। यह मैं बोल रहा हूं कि किससे लड़ाई हो रही है।...(व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : वे आपके ही मित्र हैं, किसको कत्ल करते हैं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : वही तो तॉ एंड ऑर्डर की बात बोलते हैं, यहां क्यों आलोचना करते हैं, ये क्यों बोल रहे हैं। अगर बोले हैं, बात करेंगे तो जवाब तो सुनना होगा।

मोहम्मद सलीम : यही होता है। आप यहां कहेंगे और जमीन में वे काम करते जाएंगे। यह लीफलेट माओइस्टों का है। यह मैं नहीं कह रहा हूं, 30 मार्च को माओइस्टों ने बंगला में लीफलेट दिया कि बहुत से लोग, खासकर तृणमूल के लोग ऐसा समझ रहे हैं कि नंदीग्राम में सी.पी.एम. और तृणमूल के अन्दर जमीन की लड़ाई हो रही है, लेकिन उनके नेता भी गलतफहमी में हैं। आज यह तृणमूल का मामला है, उनका लीफलेट बंगला में है, इसलिए मैं उसका हिन्दी ज़िस्ट बोल रहा हूं-यह आजादी के लिए मातृभूमि की रक्षा के लिए स्टेट के खिलाफ हमारा मुकाबल है, जिसे लिब्रेटिड जोन बोलते हैं। जो वारंगल में किया था और इस लिब्रेटिड जोन में हम किसी को आने भी नहीं देंगे, यह तृणमूल कांग्रेस के लोग भी समझ लें और सी.पी.एम. के लोग भी...ब्ला-ब्ला-ब्ला। इसलिए 31 मार्च को बंगाल बन्द बुलाया गया। उसके समर्थन में टाइम्स ऑफ इंडिया में रिपोर्ट है, डी.एन.ए. में रिपोर्ट है, इकोनॉमिक टाइम्स में रिपोर्ट है, इंडियन एक्सप्रेस में रिपोर्ट है। 31 अक्टूबर से 6 नवम्बर तक आप पढ़ लीजिए, लैंड माइन्स बरामद हो रही हैं, ए.के.-47 मिली हैं। आई.बी. को खबर मिली, आडवाणी जी ने अभी कहा कि जर्नलिस्ट अन्दर जा नहीं सकते, बेशक। मार्च से सितम्बर महीने तक सी.पी.आई. के एक एम.एल.ए. ने अन्दर जाने की कोशिश की थी, उन्हें झंडा छीनकर, गाड़ी से निकालकर मारकर भगा दिया गया। वे गिरे हुए थे, हॉस्पिटल में थे। जर्नलिस्ट्स के जाने पर वहां सर्च होती थी। सर्च कौन करते थे, कोलकाता से according to DNA, educated, sophisticated youth, गांव के किसान नहीं। उनको प्रोपेगंडा में इसलिए बुलाया गया कि नवसलाइट स्टूडेंट्स यूनियन, जाधवपुर यूनियर्सिटी है, वे मीडिया को गाइड करते थे, सर्च करते थे। अखबार नहीं जाएंगे, मोबाइल नहीं चलेंगे, सिर्फ सी.पी.एम. नहीं, जो अखबार हमारा समर्थन नहीं करते, वे अन्दर नहीं जाएंगे, केबल टी.वी. नहीं चलेगा, ट्रंसमीटर जलाये गये, पूरा कट ऑफ किया गया। लिब्रेटिड जोन को अगर आप यह कहें कि ऐसा ही रहना ठीक था तो आपने यह जवाबमंदी क्यों की, हमने तो छत्तीसगढ़ में ऐसी कितनी ही जगह छोड़ दीं, दांतेवाला में कितनी जगह छोड़ दीं, झारखंड में कितनी जगह छोड़ दीं, आंध्र प्रदेश में कितनी ही जगह छोड़ दीं तो यह भी थोड़ा छूटा हुआ रहता। बेशक इसमें दो किस्म की बातें हो सकती हैं, मैं बैनीफिट ऑफ डाउट दे रहा हूं, एक कि क्यों गये और दूसरे यह कह रहा हूं कि क्यों हम गये, जाना तो था...(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : कैडर क्यों गया, पुलिस जाती।

MR. SPEAKER: Do not respond to him. Please address the Chair.

मोहम्मद सलीम : मैं तो बोल रहा था, लेकिन समय नहीं है। मैं गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के डायरेक्ट से पढ़ सकता हूं, "How to tackle naxalies?" उसमें जो

ऑपरेटिव पार्ट हैं, उसमें से एक लाइन में पढ़ देता हूँ। "I. Political parties must strengthen their cadre base in naxal affected areas so that the potential youth there can be winged away from the path of the naxalite ideology." 1967 से 1969 के बीच में बंगाल में नक्सलवाद की शुरुआत हुई थी। आइडियोलॉजिकली हम लोग उससे लड़े, फिजीकली हमारे लीडर्स एक्टिविनेट हुए और जब यह नया नक्सलवाद आया, अभी जो माओइस्ट सुन रहे थे, यह आधु प्रदेश की पैदावार है, बंगाल की नहीं। अभी जो आर्म्स कैचिज़ हुए हैं, यह 6 महीने में, 8 महीने में, अप्रैल से सितम्बर तक, देशी बन्दूक बनाने की वर्कशॉप वहां मिली।[R41]

15.00 hrs.

बच्चे बोल रहे हैं कि हमने ब्रिगेड बनाये थे। मैं अलग-अलग डिटेल् में नहीं जाऊंगा, चालीस लोगों को लेकर दर्जन-दर्जन ब्रिगेड बनाए गए, जो वाच करेंगे। तृणमूल कांग्रेस, कांग्रेस, बीजेपी का और आम-जनता का, बेशक सीपीएम और गवर्नमेंट के खिलाफ रोष था, सरकार की जमीन के बारे में, इंडस्ट्री के बारे में और इससे उन्होंने पापुलर मूवमेंट किए, लेकिन माओवादी, नक्सलाइट्स यह बोले कि हम इसे बहुत दूर तक नहीं ले जा सकते, इसको अगर आजाद रखना है, तो हम तुम्हें यह दे सकते हैं, यह मैं नहीं कह रहा हूँ, आईबी रिपोर्ट है, मैं कोट नहीं कर रहा हूँ। मैं एक-एक करके अश्वबार से पढ़ सकता हूँ।

डीएनए के एक पैस की एक लाइन में पढ़ रहा हूँ। According to IB's findings, their fire power has increased significantly over these months. This is April-September period. इसलिए अप्रैल से सितंबर ज्यादा तक हंगामा नहीं था। सितंबर में जब ट्रेनिंग हो गयी, फोर्स तैयार हो गयी, स्मग्लिंग होकर औजार आ गए, स्मग्लिंग ऐसे नहीं हुयी, पहले पेड़ काटे गए, पहले वहां से लकड़ी की स्मग्लिंग हुयी, जलीमनपेटी में बंद कारखाने थे, पूरे देश में जो ड्रग्स की स्मग्लिंग करते हैं और आर्म्स के रैकेट्स चलाते हैं, पहले ऐसे वैजिटेरियन स्मग्लिंग करके अपना रूट और पैसेज तैयार करते हैं। लैंड लॉक एरिया के नक्सलाइट्स एक सी ओपनिंग चाह रहे थे, ताकि वे आर्म्स एंड एम्युनिशंस इंपोर्ट कर सकें और उनको सी-लिवेज की जरूरत थी। उनको जगह मिल गयी और मौका मिल गया। वे खुद कह रहे हैं कि यह जमीन की लड़ाई नहीं थी अगर जमीन की लड़ाई होती, तो जिस रोज वाम फ्रंट, सीपीआई (एम) और सरकार ने यह कहा कि जमीन यहां नहीं ली जाएगी, उसी रोज विस्थापन वाली समिति भी खत्म हो जानी चाहिए थी और सेलिब्रेट करना चाहिए था, लेकिन उसके बाद यह मामला और आगे बढ़ गया।

बेशक यह सवाल उठ सकता है कि ऐसा क्यों हुआ, ऐसा नहीं होकर वैसा हो सकता था, आपने यह क्यों किया, वह कर सकते थे, मुर्गी नहीं होकर पहले अंडा होना चाहिए था, अंडा नहीं होकर पहले मुर्गी होनी चाहिए थी। हम लोकतांत्रिक तरीके से डिबेट कर सकते हैं, लेकिन राजनीतिक संकीर्ण फायदे के लिए अगर हम इस मामले को इस तरह से छोड़ दें कि चुनाव में हारे हुए लोग अपनी स्थिति के बारे में यह समझ लें कि हम चुनाव में जीत नहीं सकते, हम भाड़े से सुपारी लेकर लोग ले आएंगे और उसके बाद औजार के कारखाने बनाएंगे, हम बाकी लोगों को इलाके में घुसने नहीं देंगे, हमारे लोग दिल्ली में बैठे होंगे। सरकार ने 27 अक्टूबर को सीआरपीएफ मांगी और हंगामा 5,6 और 7 नवंबर को हुआ। अगर सीपीआई (एम), गवर्नमेंट, लेफ्ट फ्रंट, सीपीएम पार्टी और सरकार की पूरी तरह से एक साथ हमला करने की योजना होती तो क्या हम 27 अक्टूबर को चीफ मिनिस्टर गवर्नमेंट आफ वेस्ट बंगाल होम मिनिस्ट्री को नहीं लिखे कि हमें सीआरपीएफ चाहिए? मैं इस डायलॉग से पढ़कर बोल सकता हूँ। हमारे गृहमंत्री सदन में वादा किए थे कि नक्सलाइट्स से जूझने के लिए जो सहायता की जरूरत होगी या पैस-मिलिट्री फोर्स की जरूरत होगी, हम वहां भेजेंगे। 27 अक्टूबर को बंगाल सरकार ने खत लिखा कि हमें सीआरपीएफ भेजिए, आप लोग कह रहे हैं कि पुलिस को क्यों नहीं भेजा? जनवरी महीने के बाद से आल पार्टीज इंटेलेक्चुअल्स इन्वॉल्विंग सम आफ अवर लेफ्ट अलाइज ने कहा कि पुलिस को वहां नहीं आना चाहिए। पुलिस के वहां जाने से हंगामा बढ़ जाएगा। हमने खुद बिजनेस स्टैंडर्ड में 22 जनवरी को लिखा कि सीपीआईएम और लेफ्ट फ्रंट गवर्नमेंट के लिए अभी बजवर्ड है। Buzzword is patience and restraint. चूंकि हम जानते थे कि झूठ के सहारे, गलतफहमी और अफवाह के सहारे अगर लोगों को बहकाया गया है, एक-दो या चार-छः महीने बाद लोगों को मालूम होगा कि यह सत्य नहीं है, अगर यह सत्य नहीं है, तो उसकी बुनियाद ढिल जाएगी। जब वह बुनियाद ढिल गयी, तो फिर आर्म्स और एम्युनिशंस के सहारे आतंकवाद के जरिए, माओइस्ट के जरिए उन्होंने अपनी पकड़ को बनाये रखने की कोशिश की। अगर ढाई हजार लोग जो ग्यारह महीने सदी के पहले दीवाली के वक्त अपने घर वापस जाते हैं, तो उसे आप सी-कैप्चर बोलते हैं। मल्होत्रा जी, आप डिप्टी लीडर हैं, आपकी लोकसभा के प्रति चिंता है। अगर हम आपका राजनीतिक विशेष करते हैं, बोलते हैं कि इस दफ्तर से आप बाहर चले जाइए, फिर आप अगर सहाय लेकर वापस जाते हैं, तो उसे पुनर्दखल बोला जाता है, सी-कैप्चर बोला जाता है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए।

â€! (व्यवधान)

MR. SPEAKER : Please do not record anything.

(Interruptions) â€!*

मोहम्मद सलीम : यह मैं नहीं कह रहा हूँ, इंडियन एक्सप्रेस में श्री विद्युत रॉय कलकत्ता से 3 नवंबर को यह घटना होने से पहले लिखते हैं।

"It is official now. The Maoists have taken control of the Nandigram, the East Midnapore block that has witnessed violence ...

Initially, Mamata Banerjee and her Trinamool Congress had taken charge of what began as a spontaneous movement"

ज्वाइंट कमांड हुई। इस देश को जवाब देना पड़ेगा। * ... यह मैं नहीं कह रहा हूँ। हम आपकी मजबूती समझते हैं। तृणमूल कांग्रेस बीजेपी के साथ जाए या कांग्रेस के साथ जाए, इसे लेकर टन ऑफ वार हो रही है और उस टन ऑफ वार के फंदे में हम बंगाल के लोगों का गला थोड़ा फंस गया है।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Do not record it.

(Interruptions) â€!*

MR. SPEAKER: Shri Swain, you are a senior Member now.

â€! *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Nothing should be recorded.

(Interruptions)*

* Not recorded

MR. SPEAKER: Please do not do this. You are a senior Member. You cannot go on like this.

Shri Salim, please conclude now.

(Interruptions)

मोहम्मद सलीम : यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है। श्री दासमुंशी यहां रहते तो अच्छा होता। मैं आपकी परमीशन लेकर केन्द्रीय मंत्री की बात कर रहा हूं। 27 अक्टूबर को नवसलाइट मिलिटैट्स से जीतने के लिए, बहुत बड़ी वॉयलेंस के अंदेशों से बचने के लिए बंगाल की सरकार ने खत लिखा कि पैस-मिलिट्री फोर्स, सीआरपीएफ चाहिए। केन्द्रीय मंत्री टेलीविजन चैनल, अखबार में घोषणा करते हैं कि अगर नन्दीग्राम में सीआरपीएफ जाएगी तो हम नन्दीग्राम में जाकर अनशन पर बैठ जाएंगे...(व्यवधान) नहीं जाने देंगे। 6 या 7 नवम्बर की वॉयलेंस की बात कर रहे हैं, लेकिन क्या 5 नवम्बर को होम मिनिस्ट्री ने बंगाल मिनिस्ट्री को नहीं बताया कि हमारे पास सीआरपीएफ नहीं है, गुजरात में चुनाव है, हिमाचल प्रदेश में चुनाव है, नवसलाइट एरिया है, जम्मू कश्मीर है, छत्तीसगढ़ है, सब जगह सीआरपीएफ व्यस्त है। हम केन्द्रीय मंत्री से यह उम्मीद करते हैं कि वे देश के मंत्री बनें, कांग्रेस के नेता बनें, कांग्रेस के एक मोहल्ले, एक गुट के नेता नहीं बनें...(व्यवधान)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY (SABARKANTHA): He cannot address the Home Minister like this. ... (Interruptions)

अध्यक्ष महोदय : प्लीज़, आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

MR. SPEAKER: The Home Minister can reply to this.

(Interruptions)

मोहम्मद सलीम : मैं उम्मीद करता हूं कि वे देश के नेता बनें। मैं होम मिनिस्ट्री का धन्यवाद करता हूं, गृह मंत्री आदरणीय श्री शिवराज पाटील और विदेश मंत्री श्री पूणब मुखर्जी का धन्यवाद करता हूं। 5 तारीख को इन्फार्मेशन के बाद मुख्य मंत्री ने कौन्टैक्ट किया, राजनीतिक स्तर पर बातचीत की, एडमिनिस्ट्रेटिव लैवल पर बातचीत की कि आप सीआरपीएफ भेजिए। एक तरफ यह लोग कह रहे हैं कि बंगाल की पुलिस को अंदर नहीं आने देंगे, दूसरी तरफ माओइस्ट हैं, एके-47 है, State Police is not equipped with, क्योंकि जो ट्रेन है, यदि वहां आम लोगों से लड़ना है तो सीआरपीएफ के पास स्पेशल बटालियन है, जो

* Not recorded

छत्तीसगढ़ में लड़ी, झारखंड में लड़ती है, जम्मू कश्मीर में लड़ रही है, स्टेट पुलिस के वहां बंदूक लेकर जाने से नहीं होगा, लैंड माइन है, लैंड माइन में अक्टूबर के आखिर और नवम्बर के शुरू में सीपीआई (एम) के तीन कार्यकर्ताओं की मौत हुई, उसके लिए एंटी-लैंड माइन गाड़ी चाहिए जो स्टेट पुलिस के पास नहीं है। मैं धन्यवाद करता हूं कि 10 तारीख को केन्द्रीय होम मिनिस्ट्री ने फैसला किया कि बंगाल में सीआरपीएफ भेजें। 12 नवम्बर को सीआरपीएफ बंगाल में पहुंची। 12 तारीख को तृणमूल कांग्रेस, एसयूसी, नवसलाइट, बीजेपी, कांग्रेस बंगाल में बंद कर रहे थे। बंगाल बंद चल रहा था, नन्दीग्राम में हमला हो रहा था...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: That shows that the Government is keen to restore peace there.

(Interruptions)

मोहम्मद सलीम : अगर हम वहां पीस नहीं चाहते तो होम मिनिस्ट्री से सीआरपीएफ क्यों मांगते? होम मिनिस्टर, व्यक्तिगत रूप से मुख्य मंत्री और विदेश मंत्री से बातचीत क्यों करते? दास मुंशी जी को इसका जवाब देना पड़ेगा कि आखिर क्या वजह थी कि सीआरपीएफ नहीं जाएगी, CRPF is Central Reserve Police Force; it is not Congress Reserve Police Force कि जब देश के किसी भी प्रान्त में फोर्स की जरूरत होगी तो वह तय करेगी कि कौन जाएगा, कौन नहीं जाएगा। *... इसलिए मैं समझता हूं कि जो मामला सामने आया है, आज नहीं तो कल सत्ताई सामने आएगी।[N42] जिस तरह जनवरी से लेकर नवम्बर तक जो कुछ हुआ, वह धीरे-धीरे सामने आ रहा है। मैं यह मानता हूं कि हमारे बहुत से समर्थक, बहुत से बुद्धिजीवी, क्योंकि जो पूछा हुआ, जो सीडी निकली, शंकर सावंत की डेथ हुई, उसके घर ताका-झांकी की गयी, जलाया गया और इंटरनैशनली जो सी.डी. निकाली गयी, उसमें दिखाया गया कि देखो, यह तृणमूल का कार्यकर्ता है और सीपीएम वालों ने इसकी हत्या की है। वह हत्या की जो घटना है, जो फिल्म मेकर्स है, आजकल इसे वर्चुअल रियलिटी और अच्छे ढंग से बनाया जा सकता है, आज वह खुद दावा कर रहे हैं कि शंकर सावंत की हमने हत्या की है। उसी शंकर सावंत की हत्या की कहानी सीपीएम के घर जले, मां बहनों की इज्जत लूटी गयी और पूरे देश और विदेश में सीडी निकाली गयी, विलफिंग दी गयी कि देखो कितना जुल्म ढाया जा रहा है। हम आज भी यह कह रहे हैं कि हमें ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please do not disturb him.

(Interruptions)

* Not recorded

मोहम्मद सलीम : मैं अपनी बात को समाप्त करूँगा क्योंकि मैंने बहुत समय ले लिया है। मैं रविन्द्र नाथ टैगोर की एक बात से अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ कि सच के आधार पर...(व्यवधान) बेशक यह खतरा है।

अध्यक्ष महोदय : आप मजाक मत कीजिए।

â€!(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : बंगाल में खतरा मंडरा रहा है और ऐसा हो रहा है कि the CPI (M) is the most ugly face in Indian politics, and CPI (M) is the bad guy in Indian politics. इसलिए जमायते इस्लामी, जमायते उल्लेमाए हिन्द, आरएसएस, कांग्रेस, बीजेपी, नक्सलाइट्स आदि सब इकट्ठे हो सकते हैं। एसयूसीआई जो एक लैफ्ट पार्टी है, उसकी एक साइट है ...(व्यवधान)

श्री असादुद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : जमायते इस्लामी ने आपको सपोर्ट नहीं किया। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

â€!(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : जिस दिन से, जनवरी महीने से यह हर जगह प्रचार कर रहे हैं कि यह जन गण मन कुछ नहीं है, यह सीपीएम वर्सिस मुसलमान है। इसको कम्युनिटाइज न करें, तो अच्छा है।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये।

â€! (Interruptions)

MR. SPEAKER: Mr. Azmi, you will speak later.

â€! (Interruptions)

मोहम्मद सलीम : सब इकट्ठे हुए। बेशक हमारी भी कुछ कमजोरी है, हमारे से भी कुछ गलती हुई है। अगर गलती न हो, तो फिर इतना हंगामा न हो। यह भी हमें देखना है। लेकिन मैं संसद से अपील करूँगा कि आज जो चुनौती हमारे सामने है, उसे न हिन्दू-मुसलमान बनाओ...(व्यवधान) न इसे संकीर्ण राजनीति का सवाल बनाओ। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप लोगों को क्या हो रहा है? What is troubling you?

मोहम्मद सलीम : क्या दिक्कत है, बताना पड़ेगा। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपकी तरफ से जब कोई बोलता है, तो हम सबको बीच में बोलने के लिए मना करते हैं। आप भी मत बोलिये। एक तरफ से यह नहीं हो सकता।

â€!(व्यवधान)

मोहम्मद सलीम : यह संसद विभाजित नहीं हो सकती। ...(व्यवधान) इसका विभाजन नहीं हो सकता।

अध्यक्ष महोदय : अब आप अपना भाषण समाप्त कीजिए।

â€!(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Nothing will be recorded except the speech of Md. Salim.

(Interruptions)* â€!

MR. SPEAKER: Md. Salim, please conclude your speech.

MD. SALIM : I think that if I quote Shri Rabindranath Tagore, then objection will not come. It is a very universal thing, and not a CPI (M) thing. Shri Tagore said long ago that :

"Let me not grope in vain, in the dark, but keep my mind still in the faith that the day will break and truth will appear in its simplicity."

* Not recorded

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : अध्यक्ष महोदय, हम आपसे फिर रिविस्ट कर रहे हैं कि कोलकाता में क्या हो रहा है, उस बारे में होम मिनिस्टर को बताना चाहिए। वहां पर आर्मी बुलाई गयी है, तो वह छोटी बात नहीं है। वहां आर्मी आ गयी है। यहां होम मिनिस्टर साहब बैठे हुए हैं। ...(व्यवधान) वे इस बारे में बतायें। ...(व्यवधान) Please ask him to give the information about this issue to the House.

अध्यक्ष महोदय : अगर वह बैठे हैं, तो क्या करेंगे ? उन्हें यहां बैठे रहना चाहिए क्योंकि यहां डिबेट चल रही है।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : उनके पास इन्फोर्मेशन है। ...(व्यवधान)

Sir, he has the information on this issue. Let it be shared with the House. ...*(Interruptions)*

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY : Sir, if there is any information regarding this issue, then it should be stated here in the House. ...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: No, it is not permitted like this. Any and every State matter cannot be allowed. I will not allow this.

Next speaker is Prof. Ram Gopal Yadav.

â€¦ *(Interruptions)*

अध्यक्ष महोदय : त्रिपाठी जी, हम आपसे रिवरैस्ट करते हैं कि आप ऐसा मत कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राम गोपाल यादव जी, आपको बोलना है, तो आप बोलिये। आप सब बैठ जाइये। I have not asked him to speak, and I have not requested him to speak.

â€¦ *(Interruptions)*

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आपसे ज्यादा हमने सोचा है।

...(व्यवधान)

श्री खारबेल स्वाई (बालासोर) : अध्यक्ष महोदय, मिस्टर सलीम ने कहा कि सीपीएम कैंडर पुलिस से भी ज्यादा पावरफुल है। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: It is not to be recorded. Nothing will be recorded.

*(Interruptions)** â€¦

* Not recorded

MR. SPEAKER: Mr. Swain, I will have to name you and ask you to leave the House.

â€¦ *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Mr. Swain, do not do this. What are you trying to do?

â€¦ *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: I am sorry, but I will name you and you will have to go out of the House. If you do it one more time, then I will name you.

SHRI KHARABELA SWAIN : Sir, please name me. ...*(Interruptions)* If you want, then I am walking out of the House.

MR. SPEAKER: I have not asked you to do it. I am repeatedly requesting you to sit down as you are a senior Member of this House.

â€¦ *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: I am repeatedly requesting you not to do it, and you are deliberately doing it. Please sit down.

â€¦ *(Interruptions)* [\[r43\]](#)

MR. SPEAKER: You say that it is a serious matter.

â€¦ *(Interruptions)*

MR. SPEAKER: I will also name you, if necessary.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : आप इतना तो कर दीजिए कि हाउस एडजर्न होने से पहले गृहमंत्री जी इस विषय पर स्टेटमेंट दे दें। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: I will say nothing until I decide to do that.

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : Kindly decide on it.

MR. SPEAKER: You have to put it in a manner which is acceptable and not in the manner of disturbance. You know by this time that you cannot threaten me. By this time, you should know that I cannot be dictated.

प्रो. राम गोपाल यादव (सम्भल) : श्रीमन, जिस मुद्दे पर आज यहां चर्चा हो रही है...[\(व्यवधान\)](#)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : मैंने रिवेस्ट किया है। ...[\(व्यवधान\)](#)

MR. SPEAKER: This is an important matter. I have allowed it and this is the first discussion that is taking place in this Session. Let us do it in a proper manner.

प्रो. राम गोपाल यादव : श्रीमन, जिस मुद्दे पर आज यहां चर्चा हो रही है, उस पर लम्बे अर्से से समाचार पत्रों के माध्यम से एवं अन्य तरीकों से देश के सामने कई बातें रखी जा रही हैं। एक चीज पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और टीवी चैनल्स के जरिए सामने आ रही थी और दूसरी ओर एक पत्र श्री सीताराम येतुरी और श्री बसुदेव आचार्य द्वारा संसद सदस्यों को नन्दीग्राम की स्थिति को स्पष्ट करने के बारे में लिखा गया। मैं प्रारम्भ में कहना चाहता हूँ कि जिन लोगों की हत्याएं हुई हैं, वह दुःखद है। जो लोग घर से निकाले गए, जो अभी भी मजबूर घर से बाहर रह रहे हैं, वह स्थिति दुःखद है और इसके निराकरण के लिए सभी लोगों को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर प्रयास करना चाहिए। मैं अपनी बात बहुत संक्षेप में कहना चाहता हूँ क्योंकि माननीय आडवाणी जी, दासमुंशी जी एवं सलीम जी ने डिटेल में सारी बातें कही हैं। जहां तक नन्दीग्राम में जमीन के अधिग्रहण का प्रश्न है, पीसीपीआईआर के लिए, मैं आज तक यह नहीं समझ पाया कि जब पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ने कई महीने पहले 0डी स्पष्ट रूप से यह घोषणा की कि जनता की इच्छा के बगैर जमीन का अधिग्रहण नहीं किया जाएगा, फिर इस समस्या ने इतना बड़ा रूप कैसे धारण कर लिया? जब सरकार यह कह रही है कि हम कोई लैंड एक्वीजिशन नहीं करेंगे, तो क्या वजह है, वे कौन सी परिस्थितियां हैं जिनमें पुलिस या अन्य किसी भी व्यक्ति को नन्दीग्राम तक पहुंचने से रोका गया, सारी सड़कें तोड़ दी गयीं, सारी सड़कों को खोद दिया गया? इस तरह का काम बहुत ट्रेन्ड लोग ही किया करते हैं, आम आदमी आम तौर पर इस तरह का काम नहीं कर सकते हैं जिसमें पुलिस बल या किसी व्यक्ति को किसी जगह पर न पहुंचने देने के लिए सड़कों को खोद दिया जाए, उस जगह का सम्पर्क दुनिया के शेष हिस्से से काट दिया जाए। यह बहुत गंभीर प्रश्न है कि आखिर ये परिस्थितियां कैसे पैदा हुईं और क्यों पैदा हुईं? अगर हम नक्सलवाद की बात करें तो आप जानते हैं कि पश्चिम बंगाल के ही एक गांव नक्सलवाड़ी गांव से यह जुड़ा हुआ है, इसीलिए इसे नक्सलवाद या नक्सलाइट आंदोलन कहते हैं। लेकिन पश्चिम बंगाल की सरकार ने इस आन्दोलन को पश्चिम बंगाल में पनपने नहीं दिया। हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में अलग-अलग नामों से यह आन्दोलन पला, बढ़ा और परेशानी पैदा करने वाला सिद्ध हुआ, फिर चाहे वह छत्तीसगढ़ हो या झारखण्ड हो। उत्तर प्रदेश में भी एक बड़ी घटना हो गयी थी। माननीय गृहमंत्री जी जानते हैं, लेकिन वहां पर इसको नियंत्रित कर लिया गया था। यह पश्चिम बंगाल की ही सरकार थी, जिसने इस आन्दोलन को पश्चिम बंगाल में पूरी तरह से नाकाम और खत्म कर दिया था।[\[R44\]](#) स्वाभाविक है कि जो नक्सली आंदोलन से जुड़े हुए लोग हैं, उनके मन में कहीं न कहीं यह टीस जरूर है कि हमारे इस आंदोलन को सबसे ज्यादा कृष्ण करने का काम सीपीआई (एम) लैंड गवर्नमेंट ने ही किया है। इसलिए कहीं न कहीं इस तरह के तत्वों का एक इन्वैल्वमेंट हो सकता है। ऐसा लोगों का अनुमान है कि इतने बड़े पैमाने पर संगठित रूप से ऐसा प्रयास किया गया, जहां प्रशासन बिल्कुल वैक्यूम हो गया हो, कोई जा नहीं सकता हो।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात और अपने सभी मित्रों से, संसद से और देशवासियों से कहना चाहता हूँ। चरमपंथी चाहे देश का हो या विदेश का हो, जब-जब उसे सहारा मिला है, कहीं से प्रश्रय मिला है, तब-तब उसका भारी नुकसान हम लोगों को भुगतना पड़ा है। हमारे दो लोकप्रिय प्रधान मंत्रियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, यह किसी से छिपा नहीं है। यह कोई मामूली बात नहीं है। इसलिए अगर कहीं राजनैतिक लाभ की दृष्टि से चरमपंथियों को मदद देने की कोशिश की जा रही है, तो इसके गंभीर दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं।

डेढ़ साल पहले ही पश्चिम बंगाल में चुनाव हुए थे। वहां विधिवत् जनता द्वारा चुनी हुई सरकार है। सरकार की पूरी मशीनरी को रोक दिया जाए, सीआरपीएफ के बिना कोई वहां अंदर नहीं पहुंच पाए, लोग घरों से बाहर बने रहें, यह केवल पश्चिम बंगाल सरकार के लिए या वहां की जनता के लिए ही चिंता की बात नहीं हो सकती, देश के लिए चिंता की बात हो सकती है, क्योंकि तमाम राज्यों में हम इस तरह की घटनाओं को देखते रहते हैं। ऐसी स्थिति में हम लोगों को कोई इस तरह का रास्ता निकालने की कोशिश करनी होगी, जहां इस तरह के तत्व राजनैतिक विरोध का लाभ न उठा सकें। कोई कह रहा था कि इसका राजनैतिक लाभ कैसे होगा और किसे होगा, तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह कोई राजनैतिक लाभ की बात नहीं है। देश बड़ा है, अगर देश नहीं रहेगा तो हम राजनीति कहां से करेंगे। हमारे दूसरे सदन में एक सदस्य हैं, वह हमारे गुरु भी रहे हैं। उन्होंने एक बार लिखा था - 'अगर देश मर गया तो जीवित कौन रहेगा और रहा भी तो उसे जीवित कौन कहेगा!' अगर देश नहीं बचेगा, देश में अव्यवस्था पैदा हो जाएगी तो हम राजनीति कहां कर पाएंगे, वोट मांगने नहीं जा सकते।

जो पार्टी वहां करीब 25 सालों से सत्ता में हो, वह बंगाल में एक हिस्से में या एक जिले में अपनी पुलिस न भेज सके, यह स्थिति पैदा होती है तो दूसरी जगहों पर स्थिति कितनी विषम हो सकती है, इसकी आसानी से कल्पना की जा सकती है। लेकिन ये सारी चीजें दुःखद हैं।

मैं एक बात और कहना चाहता हूँ। यहां पर गृह मंत्री जी बैठे हैं। पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी में राज्यपालों की अपनी एक भूमिका होती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इस तरह का एक चलन सा हो गया है कि कुछ लोग प्रधान मंत्री या गृह मंत्री या राज्य के मुख्य मंत्री से बात करने के बजाए प्रैस से बात करना शुरू कर देते हैं। यह एक गंभीर बात है। इस मामले में मैं कहना चाहता हूँ कि हम पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल का बहुत सम्मान करते हैं, लेकिन जिस तरह से नन्दीग्राम को लेकर उन्होंने बयान दिया, वह संसदीय मान्यताओं और परम्पराओं के बिल्कुल विपरीत था, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। उन्हें वहां के मुख्य मंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य से कहना चाहिए था या यहां प्रधान मंत्री जी या गृह मंत्री जी से सारी स्थिति बयान करनी चाहिए थी। मेरा मानना है कि किसी मामले में पार्टी बनकर किसी पब्लिसिटी की दृष्टि से कोई बात कही जाए, चाहे वह सच भी क्यों न हो, इस तरह की बात नहीं होनी चाहिए। [\[R45\]](#)

जहां तक पश्चिम बंगाल सरकार का प्रश्न है, कहीं-कहीं गलतियां हुई हैं। जो दोषी लोग हैं उनके खिलाफ पश्चिम बंगाल सरकार को सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। कहां डील रही, कहां गलती रही, चाहे पुलिस द्वारा गलती हुई हो, चाहे उनके कैडर के किसी सदस्य की हुई हो, सही जांच करके उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। कोशिश यह भी होनी चाहिए कि जो लोग, किसी भी वजह से वहां से हटाए गये हैं, उन सभी को वापस लिया जाए। मैं सभी मित्रों से यह कहना चाहता हूँ कि जब मुख्यमंत्री जी यह कह रहे हैं कि वहां इस तरह की कोई योजना नहीं है, तो हल्दिया के आस-पास, कहीं दूसरी जगह, अगर जनता एतराज न करें, जहां खेती योग्य जमीन नहीं है उस पर ही एसईजेड का काम करेंगे, तो किसी को एतराज नहीं होना चाहिए। विवाद के सहारे, लोगों को उकसाकर इस तरह का कोई विवाद पैदा नहीं होना चाहिए। हिन्दुस्तान में न जाने कितने एसईजेड हैं। दस-दस, बीस-बीस हजार एकड़ जमीन एक-एक आदमी को दी गयी और कहीं चर्चा भी नहीं हुई। हमारे यहां बलिया से लेकर बुलंदशहर तक गंगा के सहारे एक सड़क बनाई जा रही है जिसके लिए कई लाख एकड़ जमीन एक्वायर की जा रही है। वहां जनता ने आंदोलन शुरू कर दिया है। वहां छोटी सी बात थी और माननीय मुख्यमंत्री कह चुके कि वहां जमीन एक्वायर नहीं की जाएगी और सार्वजनिक रूप से इसका प्रचार किया गया, फिर भी इतनी बड़ी घटना हुई। इससे लगता है कि कोई न कोई बड़ी साजिश है, उस साजिश को भी पश्चिम बंगाल की सरकार के बेनकाब करना होगा कि कौनसे ऐसे तत्व हैं जो जनता को गुमराह करके इस सीमा तक ले जाने का काम कर रहे हैं। इसी के साथ मेरी पूरी सहानुभूति उन परिवार के

लोगों के साथ हैं जिनके परिवार के लोगों की हत्याएं हुईं। उनको मुआवजा दिया जाना चाहिए और उनके मकानों को बनाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। सीआरपीएफ की मदद से लोगों को फिर से उनके घरों में वापस किया जाना चाहिए। उनको बसाने में जितनी भी मदद की जरूरत हो, वह मदद की जानी चाहिए।

MR. SPEAKER: There is a request from several sections of the House. I wish that it had been made in a different manner. It is about the situation in Kolkata because of army deployment. The hon. Minister has some information which he wants to share with the House. He may do it now.

SHRI GURUDAS DASGUPTA (PANSKURA): Sir, why should he do it in the middle of the discussion? He could do it at the end of the day.

MR. SPEAKER: Okay, he could do it at the end of the day. That is better. He will do it at the end.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, नियम 193 के अधीन जो प्रस्ताव है उसमें दो बिंदु हैं। एक, स्पेशल इकोनॉमिक जोन को लेकर नंदीग्राम में जो हिंसात्मक स्थिति बनी, उसी पर हमें केन्द्रित रहना है। जो भी घटना वहां जमीन के अधिग्रहण को लेकर घटी है वह निश्चित रूप से दुःखद है। अफसोसनाक है और इस तरह की घटना नहीं घटनी चाहिए। नंदीग्राम में जो हिंसा की घटना घटी, उसकी बुनियाद क्या है? आप योजना का कोई भी नाम ले लीजिए। स्टेट और केन्द्र दोनों मिलकर पीसीपीआईआर का जो रीजन है, पेट्रो-लियम इन्वेस्टमेंट रीजन है या पेट्रो-कैमिकल एंड पेट्रो-लियम इन्वेस्टमेंट रीजन, उसको लेकर हो या एसईजेड का मामला हो। मामला कोई भी हो। जिस तरह से घटना घटी है निश्चित रूप से वह चिंता का विषय है। इसमें दलगत भावना को रखकर बहस करें, तो इंसाफ नहीं हो सकता है। [46]

महोदय, इंसाफ तभी हो सकता है, जब हम दलगत भावना से ऊपर उठकर विचार करें। स्पेशल इकोनॉमिक जोन की जो पालिसी बनी है, उसकी बुनियाद है कि चाहे मल्टी नेशनल कम्पनी हो, टाटा कम्पनी हो या रिलायंस कम्पनी हो, चाहे किसी भी कम्पनी के लिए जमीन अधिग्रहण हो, पहले उस जमीन को राज्य सरकार अधिग्रहण करे।

महोदय, इस संबंध में जो तर्क बना है, वह पूरी तरह से त्रुटिपूर्ण है और जमीन अधिग्रहण करने के लिए जो आधार बनाया गया है, वह भी पूरी तरह से त्रुटिपूर्ण है। मैं इसे त्रुटिपूर्ण इसलिए कह रहा हूं क्योंकि इसमें कोई स्ट्रिक्ट गाइड लाइन केंद्र सरकार की तरफ से नहीं दी गई है कि जो बंजर जमीन है, उसे पूरी तरह इससे छूट मिले। जिसका जमीन पर स्वामित्व है, अगर वह चाहे तो एग्रीकल्चर लैंड भी दे सकता है, इसमें कहीं भी अलग से गाइड लाइन नहीं दी गई है। 250 या 300 जो विशेष आर्थिक जोन निर्धारित किए गए हैं, उसके लिए प्रक्रिया है कि राज्य सरकार उसे अधिग्रहण करे। मैं इस पालिसी को त्रुटिपूर्ण इसलिए बता रहा हूं क्योंकि राज्य सरकार को प्रोड्युक्ट प्रॉपर्टी डीलर का काम नहीं करना चाहिए। मैं पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा, क्योंकि उन्होंने कहा कि जनता नहीं चाहती है कि जमीन अधिग्रहण के लिए उन पर किसी प्रकार का जोर डाला जाए। उन्होंने कहा कि अगर जनता नहीं चाहती है तो हम जबरदस्ती जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया नहीं चलने देंगे। श्री राम गोपाल यादव ने ठीक कहा है कि यदि इस प्रकार की घोषणा कोई राज्य सरकार कर देती है, तो इस प्रकार की स्थिति राज्य में कैसे उत्पन्न हो सकती है। इसीलिए मैंने कहा है कि इसका मूल विषय ही फाल्टी है, जिसके कारण ये घटनाएं हो रही हैं। मल्टी नेशनल कम्पनीज द्वारा या पूंजीपतियों द्वारा कमर्शियलाइजेशन के नाम पर, इंडस्ट्रीलाइजेशन के नाम पर, आधुनिकीकरण के नाम पर जमीन अधिग्रहण करके बड़े-बड़े मॉल्स खोले जा रहे हैं। महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि ऐसा करने से क्या राष्ट्रीय उत्पादन कम नहीं होगा? इससे देश की घरेलू खपत पर फर्क पड़ता है। पीडीएस हो, टीपीडीएस हो या अंत्योदय अन्न योजना हो, इन योजनाओं के लिए हमें विदेशों से अनाज मंगाना पड़ता है। महोदय, जमीन का रकबा तो बढ़ नहीं सकता है। जब जमीन नहीं बढ़ेगी और ऊपर से आधुनिकीकरण के लिए जमीन का अधिग्रहण किया जाएगा, तो जमीन का रकबा घटेगा। जब जमीन का एरिया घटेगा, तो निश्चित रूप से राष्ट्रीय उत्पादन कम ही होगा।

आज बहुत जोर दे कर कहा जाता है कि बंजर जमीन को हम एग्रीकल्चर लैंड में बदल रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं, सरकार बताए कि कितने प्रतिशत बंजर जमीन को अभी तक कृषि योग्य बनाया गया है? एक भी उदाहरण अगर सरकार इस संबंध में दे दे, तो मैं मान सकता हूं कि एग्रीकल्चर लैंड बन रही है। ऐसी सिर्फ योजना है और इससे जमीन घटेगी। अगर जमीन घटेगी, तो राष्ट्रीय उत्पादन कम होगा। अगर राष्ट्रीय उत्पादन घटेगा, तो हमें आयात करने पर मजबूर होना पड़ेगा। राज्यों में जहां पर भी जबरदस्ती जमीन अधिग्रहण किया जाएगा, तो हिंसा होगा और तॉ एंड आर्डर का मामला डायरेक्ट रूप से इवोल्व होगा। [47]

यहां कुछ विशेष परिस्थिति है, मैं इसीलिए कहना चाहता हूं कि चाहे पीसीपीआईआर के लिए हो या एसईजेड के लिए हो लेकिन मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद इस सितुएशन का निर्माण कैसे हुआ? रामगोपाल जी ने ठीक कहा था और मैं उनसे सहमत हूं कि यह सितुएशन कैसे प्रीवेल किया कि उसमें कोई पुलिस भी नहीं जा सकती, बाहर के पत्रकार नहीं जा सकते, वहां खास तरह का लिब्रेटेड एरिया बनाने का संकल्प रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि इकॉनॉमिक एक अलग सवाल है, 14 राज्यों में नक्सल हिंसा फैल रही है और लोग कहते हैं कि कुछ राज्यों में सीआरपीएफ का डिप्लोएमेंट हुआ है। क्या सीआरपीएफ का डिप्लोएमेंट एक जगह हुआ है? क्या पश्चिम बंगाल की सरकार ने मांग नहीं की? क्या छत्तीसगढ़ में डिप्लोएमेंट नहीं है? क्या बीजापुर, नारायणपुर डिस्ट्रिक्ट में नहीं है? जब सीआरपीएफ की मांग राज्य सरकार करेगी तब सेंट्रल गवर्नमेंट की जिम्मेदारी है कि आम नागरिकों की रक्षा के लिए वहां फोर्स भेजे। सीआरपीएफ डिप्लोएमेंट हुआ, यह कोई सवाल है? सीआरपीएफ तो कई जगह है, उड़ीसा में डिप्लोएमेंट हुआ है, पश्चिम बंगाल में आज हुआ है और इससे पहले भी जो नक्सल प्रभावित इलाके हैं वहां मांग की जाती है और सीआरपीएफ दी जाती है। सीआरपीएफ की तैनाती बड़ा सवाल नहीं है, यह राज्य और केंद्र सरकार की ज्वाइंट रिस्पॉन्सिबिलिटी है। मैं इसलिए इस बात को उठाना चाहता हूं कि अभी तो कई स्थितियां ऐसी पैदा हो रही हैं, विपक्ष के माननीय नेता बता रहे। इसके साथ मैं कहना चाहता हूं आर्टिकल 355 याद तब आ रहा है जब नंदीग्राम में हिंसा हुई। धारा 355 तब याद नहीं होता जब कोई राज्य स्टेट स्पॉन्सर दंगा करता हो, जो संविधान की पीठ पर बैठा हो और संविधान की पीठ पर बैठने के बाद भी राज्य सरकार ही दंगा भड़काती हो? क्या संविधान का यह सैकुलर स्ट्रक्चर उसे खंडित करने का है। किसी भी राज्य सरकार या मुख्यमंत्री को यह अधिकार नहीं है। मैं नाम कोट नहीं करना चाहता हूं लेकिन क्या जो ढांचा प्रिम्बल में है, उसे ढाढ़ने या खंडित करने का अधिकार किसी चीफ मिनिस्टर को है? जो घटना आप्रेशन कलंक में और जो घटना गुजरात में हुई है उससे यह जाहिर हुआ है कि केंद्र सरकार को धारा 355 केंद्र सरकार को विशेष परिस्थिति में लागू करनी चाहिए। यदि उसमें भी अमेंडमेंट करना पड़े तो मैं समझता हूं जहां ऐसे राज्यों में जहां खुलेआम भारतीय संविधान के सैकुलर ढांचे को खंडित करने का जहां काम होता हो और खास तौर से विशेष कम्युनिटी पर अटैक करके, माइनोरिटी पर अटैक करके ... (व्यवधान) किसी भी जगह हो, धारा 355 तब याद नहीं आया जब गुजरात में धारा का पालन नहीं हुआ, आज तो सारे देश के इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में आ रहा है, गुजरात का आप्रेशन कलंक दिखाया गया है। ... (व्यवधान) क्योंकि यह पूरे मानव समाज को दहलाने वाली घटना है। ... (व्यवधान) बच्चे को पेट से निकालकर चाकू से चीरने का बजरेगी ने बयान दिया है। ... (व्यवधान) वकील ने बयान दिया

हैं।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please conclude.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के सामने का बयान पूरे देश में आया है। ...(व्यवधान) धारा 355 गुजरात में लागू होनी चाहिए। गुजरात के मुख्यमंत्री पर धारा 302 के तहत फौजदारी का मुकदमा चलना चाहिए। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Do not record the interruptions.

(Interruptions) â€*

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : संविधान की रक्षा होनी चाहिए। संविधान का जो सैकुलर ढांचा है उस पर किसी भी तरह से कोई आघात नहीं होना चाहिए, उसे अक्षुण्ण रहना चाहिए, यह केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। इसलिए हम यह निवेदन करना चाहते हैं कि केंद्र सरकार सतत का काम तो करे ही लेकिन जो लोग बाहर चले गए हैं, जो घायल हुए हैं, जिनके साथ एट्रोसिटी, अन्याय और अत्याचार हुआ है, जो परिवार मारे गए हैं, उनके लिए पूरा मुआवजा कायम होना चाहिए। लेकिन ऐसे राज्यों में जो राज्य कट्टरपंथी ताकत को बढ़ावा देकर हिंदुस्तान को धर्म के नाम पर बांटना चाहते हैं, ऐसे राज्यों में धारा 355 में सुधार करना पड़े तो संशोधन ताकर डायरेक्ट केंद्रीय एजेंसी को हस्तक्षेप करना चाहिए। जब तक राज्य सरकार नहीं कहेगी तब तक केंद्रीय एजेंसी सीबीआई नहीं जाएगी, जब तक राज्य सरकार नहीं कहेगी तब तक फोर्स नहीं भेजेगी।[\[r48\]](#)

यह जो तरीका है, केन्द्र सरकार डायरेक्ट कुछ एरियाज में हस्तक्षेप करे। संविधान के तहत नागरिकों के जान-माल की रक्षा करने की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है। जो फंडामेंटलिस्ट ताकतें अशांति और

* Not recorded

सांप्रदायिकता फैलाती हों, जो शांति भंग करने वाले एरियाज हों, उन्हें केन्द्र सरकार अपने अधीन ले, वहां अपनी फोर्स भेजकर शांति बहाल करे और अपना नियंत्रण कायम करे। तभी अमन-चैन कायम रह सकता है। अन्यथा जो 14 राज्यों में फैला है, देश के हर राज्य में इस तरह की नवसली और माओवादी हिंसा फैलेगी और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में गतिरोध उत्पन्न होगा। यदि पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी और लोकतंत्र को महफूज रखना है तो धारा 355 में संशोधन करके केन्द्र सरकार उसमें डायरेक्ट हस्तक्षेप करे और ऐसे राज्यों को अपने नियंत्रण में ले...(व्यवधान) और मांग करने पर सी.आर.पी.एफ. भेजे। केन्द्र सरकार के पास इन्टेलिजेंस है, इन्टेलिजेंस की सूचना के आधार पर कट्टरपंथी ताकतें, जो हिंसा फैलाने वाली ताकतें हैं, जो धर्म के नाम हिंदुस्तान को तोड़ना चाहती हैं, ऐसी ताकतों को, ऐसे राज्यों को और ऐसे राज्यों में ऐसे एरियाज को केन्द्र को अपने नियंत्रण में लेना चाहिए। तभी आप इन पर काबू पा सकते हैं। अन्यथा हर राज्य में इस तरह की हिंसा को बढ़ावा मिलता रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देवेन्द्र जी, आप कंवलूड कीजिए।

â€(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप क्या बोल रहे हैं। आपके लीडर बोल रहे हैं।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : केन्द्र सरकार को ऐसे राज्यों में अमन-चैन बहाल करना चाहिए और कानून व्यवस्था को लागू करना चाहिए। ऐसे हिंसाग्रस्त राज्यों और एरियाज को विहित करके उन पर कानूनी कार्यवाई करनी चाहिए और अमन-चैन बहाल करके कानून व्यवस्था लागू करनी चाहिए। मैं समझता हूं कि ऐसी जगहों पर शांति और सद्भाव कायम करने के लिए सदन को भी इस पर विचार करना चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपकी बात रिकार्ड नहीं होगी।

श्री इलियास आज़मी (शाहाबाद) : स्पीकर साहब, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। मैं अपने दाहिने बैठने वालों और बायें बैठने वालों से दख्खाना कि मैं चंद मिनट लूंगा, कृपया मेरी बातें गौर से सुन लें। मैं सबसे पहले अपने सी.पी.एम. के दोस्तों की खिदमत में एक शेर अर्ज करके अपनी बात शुरू करूंगा।

"तारीख की आंखों ने वह दौर भी देखा है,

लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई।"

मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है और मुझे इसका दिल से अफसोस है कि तीस साल के बाद सी.पी.एम. को पहली बार मैं बचाव की मुद्रा में देख रहा हूं। जो कुछ हुआ, वह स्टेट टैरिज्म की एक नई श्रवण है। अब तक हम सदन के अंदर कम सही लेकिन सदन के बाहर स्टेट टैरिज्म पर बहुत ज्यादा बातें करते रहे हैं। स्टेट टैरिज्म की बदतर श्रवण हमने 2002 में गुजरात में देखी। इससे पहले हम उसी गुजरात में 1969 और 1992 में उसका नंगा नाच देख चुके थे। गुजरात के अलावा देश के बड़े हिस्सों में सैकड़ों बार नहीं बल्कि हजारों बार हमने सरकारी दहशतगर्दी का नजारा किया है। बड़े पैमाने पर 1984 में दिल्ली में, 1964-1965 में रांची, जमशेदपुर और राउरकेला वगैरह में, 1980 से 1987 तक मुरादाबाद से मेरठ, मलियाना और हाशिमपुर में और 1992 में बम्बई से लेकर मुल्क के इस कोने से लेकर उस कोने तक हमने स्टेट टैरिज्म का नंगा नाच देखा है। स्टेट टैरिज्म की नई श्रवण हमने हाल ही में महाराष्ट्र और आंध्र में देखी। जहां आतंकवाद की घटनाओं का सड्डा लेकर एक वर्ग विशेष के मासूम और बेगुनाह नौजवानों पर राज्य की पूरी सत्ता टूट पड़ी। हमने ताजा-ताजा एक नई श्रवण यह भी देखी है। हमारे जैसे लोग यह सोच भी नहीं सकते थे कि मुल्क की दोनों बड़ी पार्टियों के अलावा किसी तीसरी पार्टी के राज्य में भी ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : थोड़ा छुपाकर पढ़िये।

श्री इलियास आज़मी : वह सब हो सकता है, जो कांग्रेस और बी.जे.पी. की सत्ता वाले राज्यों में होता रहा है। अफसोस है कि बंगाल के मामले में वहां इल्जाम पुलिस

पर नहीं, पार्टी कैंडर पर है, इस बात को समझा जा सकता है कि कांग्रेस ने वहां सी.आर.पी.एफ. भेजने में इतनी देर क्यों की। हो सकता है कि कांग्रेस दिल से सी.पी.एम. को नंगा करना चाहती रही हो। लेकिन क्या बंगाल की सरकार और पुलिस इतनी कमजोर है कि उसे चंद गांवों पर दोबारा कब्जा करने के लिए बंगाल सरकार को पार्टी के हथियारबंद कैंडर से हमला करवाना पड़ा? यह शर्मनाक बात है। सी.पी.एम. के दोस्तों, जो गलती गुजरात के मामले में हमारे दाहिने बैठने वाले साथियों ने अपने एक आदमी को बचाने के लिए की थी [b49] आप बंगाल के अपने एक नेता की हिमालय जैसी बड़ी गलती को छुपाने के लिये खुदा के लिये वही गलती न करें और इस बात का अहसास करें कि इनके नवशे-कदम पर न चलें जो इन्होंने गुजरात में किया था। वह गलती अब न करें। समय बहुत बलवान होता है दुनिया के सब से बड़े कम्युनिस्ट साम्राज्यवादी ने अफगानिस्तान में गलती की, वह मिट्टी में मिल गया। मैं इस सदन के जरिये इस देश की अंतःशक्ति को कुरेदना चाहता हूं कि वह देखे कि नज़ला हमेशा समाज के कमजोर अंग पर ही क्यों गिराया जाता है। गुजरात से बंगाल तक जहांआरा और शमीमा जैसी लड़कियों की अस्मृत क्यों बिगाड़ी जाती है, क्यों.*.. रुशदी की किताब के खिलाफ प्रदर्शन करने वालों पर पुलिस की गोलियां चलती हैं।*,.. क्या पुलिस की गोलियों ने देख लिया है या वह

* Not recorded as ordered by the Chair

पहचानती है कि इसे किस के सीने में लगना है?... (व्यवधान) मैं गुजरात से बंगाल तक की बात कह रहा हूं। इसलिये, दोस्तो, मैं इस सदन के जरिये, जो पूरे देश की नुमाइंदगी करता है, देश के एक अख से ज्यादा लोगों की अंतःशक्ति को कुरेदना चाहता हूं कि आखिर पुलिस की गोली सीना कैसे पहचानती है? इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

MR. SPEAKER: Shri Gurudas Dasgupta may speak now as he is in a hurry due to some personal problems.

SHRI KHARABELA SWAIN : So, he will not be here to listen to my speech.

MR. SPEAKER: I will listen to you with rapt attention. You do not know that I am an admirer of your speech. The only thing is, do not do it in between.

15.47 hrs.

(Shri Mohan Singh *in the Chair*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA (PANSKURA): Sir, I rise to speak on this issue with a heavy heart for two reasons. I am really shocked to hear one thing. Shri Advani is not present here now. I expected him to be here to listen to us. I am shocked really because repeatedly hon. Speaker, the exalted office of the custodian of the House, is being dragged into controversy. As I understand him or as I can remember, he has said that for three days, we have listened to what you said. It only means that the hon. Speaker for three days had not been allowing a discussion on this issue.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : सभापति जी, यहां स्पीकर साहब और उनके बारे में माननीय सदस्य कुछ न कहें तो अच्छा होगा। It is not desirable to mention it. (Interruptions)

सभापति महोदय : अगर कुछ ऐसा होगा तो देख लिया जायेगा।

SHRI GURUDAS DASGUPTA : Sir, I am only referring to what my respected senior colleague, Shri Advani, has said. I am very shocked today to take part in the debate because, as my other friends have referred, while Parliament is discussing Nandigram, Kolkata is burning. All these days, Kolkata was calm and peaceful. There have been processions supported by the Opposition. There have been two bandhs called by different political parties. There was no element of violence but today - I do not know the reason - when the House is discussing Nandigram, simultaneously, Kolkata is burning. Therefore, I have a deep-rooted feeling that there is an attempt to destabilize the constitutionally elected Government of West Bengal, and the [MSOffice50]pretext is Nandigram.

Only the future can tell us whether it is too much; whether it is an exaggeration; or whether it is a reality. But the point is, when we are discussing Nandigram, military had to be called in Kolkata. When we are discussing Nandigram, there have been incidents of burning down of buses and other public properties. This simultaneous action provokes me to believe that there is some interconnection or some forces are at play. I am not implicating whether the Congress Party is involved. I am not referring to the Congress Party. I am only saying that some forces are at play to destabilise the constitutionally established Government of West Bengal.

Sir, I begin my submission by saying that Nandigram is a great human tragedy. Undoubtedly, it is a human tragedy. Let us put our hands together to have a healing touch on the deep wound that has been inflicted on Nandigram. Let us try to have a healing effect on the deep wound that Nandigram has suffered.

As far as my information goes – some of my friends might have a different information – Nandigram is limping back to normalcy. I am deliberately using the words "limping back." When Nandigram is 'limping back' to normalcy, let us take a positive view to take the process forward. Let us help Nandigram to come back to normalcy. That is why there is a need for a voice of "sanity", not a voice of "senility." I express my deep sympathy for the people of Nandigram, for all the victims of violence in Nandigram. While saying so, I concede that there are different perceptions also. It is all well-known.

There is a perception that more care and caution should have been exercised while tackling the situation. There is a perception, according to which, all that happened in Nandigram should not have happened. I agree that there is a great deal of disagreement on the issue. Opinions can differ. I believe it is true that public opinion has been hurt. A number of our friends of the Left have been speaking in different voices. This is all true. But, as part of the Left, as part of the Left Front, I only say with humility that if we have lost anything, we are sure to retrieve it; if we have lost anything, we are sure to recover it. It is only a passing phase. But the passing phase is definitely extremely unfortunate.

It is true that there have been firings and there have been casualties. A number of people have died; more people were wounded; and houses have been burnt. It is all true.

There is also another picture which we should not lose sight of. Nearly thousands of people have been driven out of Nandigram. They had to take refuge in camps outside the boundaries of Nandigram. They could not return to their homes for more than eleven months. Nandigram became an isolated place; no development work could take place there; panchayats could not work. Even the police stations were under lock and key. Police was not allowed to enter. This was the situation in Nandigram for eleven months.[\[MSOffice51\]](#) Therefore, I am constrained to say that Nandigram was under a siege.

Now, I raise a prime question. I ask my friends on the Right and on the Left to answer this question. Why even after the hon. Chief Minister has made a public statement that there is not going to be a chemical hub in Nandigram, even after this official statement, why the siege was not lifted, movement was not withdrawn and peace talks did not begin? There was a categorical assurance and that was the basis for the movement in Nandigram by *Bhoomi Bachao* Committee. Even after the Government had retreated— I am using my language carefully— when the Government had retreated in West Bengal -- why is it that the blockade was not withdrawn? A number of peace talks took place in Kolkata and in Nandigram and also in Tamruk. All-Party meetings did take place. State machinery was put in operation. It was all done, but peace was never restored.

I would like to make two points or remarks. One is - the Government officially had withdrawn the proposal of having a Special Economic Zone and a chemical hub. Secondly, peace efforts have started at all levels. Despite that, why is it that the so-called movement continued, seige continued and the whole of Nandigram became almost a place of liberated area? Why is it so? Is it politics? It started with the question of land. It started with the question of chemical hub. It started with the question of surrender of land. So, after it was announced perfectly by the Government in the official notification, why did the movement not come to an end? Why *Bhoomi Bachao* Committee was not disbanded? That is the question I would like to ask my colleagues. Therefore, my appeal to you will be not to take a one-sided view of the situation. Please consider the problem in all its totality.

Sir, another element is very important. When all these peace talks were going on, when all-Party meetings were taking place during all these 11 months, when the Government did not react to restore the normalcy, when Nandigram was left to Nandigram, when *Bhoomi Bachao* Committee was allowed to take over Nandigram, it is during that period of time, Sir, that sophisticated arms were smuggled in.

Sir, I also know Nandigram. That is our party constituency for a long time. Farmers do not have AK-47 rifles, farmers do not have land mines and farmers do not have sophisticated material to kill a man. Therefore, they were imported, smuggled and brought in from outside with the help of outside fundamentalist political forces. What was the situation at that point of time inside the Nandigram? Our MLA was openly beaten up and no tear was shed by the Leader of the Opposition on the question that elected Member of Assembly was being beaten up mercilessly. *â€¦! (Interruptions)* Not a tear was shed on this issue. *â€¦(Interruptions)* Prof. Malhotra, I am yielding. You can have your say.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : वहां इतने लोग मारे गए...[\(व्यवधान\)](#)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : Please do not interrupt me. I am speaking. The question is one police man was killed and an MLA was beaten up. [\[a52\]](#)

[1\[R53\]](#)6.00 hrs.

Land mine was laid. Trenches were dug. All the warlike preparations were made in Nandigram during peace time. Peace was a cover. The All-Party meeting was misused and the peace period was utilised for a warlike preparation in a solitary place in Nandigram far away from the boundary of India. No foreign power can be blamed for it. Why was it done? Who did it? At whose behest was it done? Should we not condemn that? Will you allow a liberated zone to be created in Gujarat? Will you allow a liberated zone to be created in Madhya Pradesh? Will you allow a liberated zone to be created in any part of India? I do not like to put to the hon. Home Minister on the dock. I do not like to put him like that. That will be too much. But the question remains. Why was the CRPF sent late? The Government of India was asked to send the CRPF. 14

people died before that. First, the Governor of West Bengal has made a public statement expressing his grief. So many intellectuals issued a statement. Therefore, the hon. Minister of Home Affairs must have the full-fledged knowledge of the inflammatory situation that was obtaining there.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): Will you yield the floor? You are not going to be prepared to hear my reply. ...(*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : No. I will not. ...(*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: The West Bengal Government is already having two CRPF battalions with them ...(*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA: I will not yield. You will have your say later....(*Interruptions*) It is not parliamentary decency and courtesy.

SHRI UDAY SINGH (PURNEA): If the hon. Minister wants to speak, he should speak....(*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA: Do not dictate to him. ...(*Interruptions*)

[R54]सभापति महोदय : उन्हें अपनी बात बोलने दीजिए। जो वे बोल रहे हैं, उन्हें कहने दीजिए।

â€¦(व्यवधान)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I would like to inform this House that naturally the Chief Minister wanted that one CRPF Battalion should be sent to West Bengal. I said: "We will send it." Elections are taking place. We have to understand that all the paramilitary forces are deployed on the international border. We have hardly 30,000 to 40,000 people at our disposal. Moreover, the Government of West Bengal was having two Battalions. The Government of West Bengal has no objection. But others have objection. I do not understand this.

SHRI GURUDAS DASGUPTA: The hon. Minister may kindly recollect that there was a letter from the Chief Minister on 27th or 28th. On 7th or 8th of this month, the Ministry of Home Affairs informed the Government of West Bengal that they were not in a position to send the CRPF. It was a negative reply. After a few days of that, after the incident was on the point of explosion, the CRPF was sent. Is it the way the Centre should work hand in hand with the State? Is it the way to protect the federation of the country? Is it the way to take care of violence? Is it the way in which a Government should act? This is a Government which we support. This Government is in Office with our support. Is it the way to pay us back? â€¦(*Interruptions*)

The point is this that we share the concern of the House. We take the criticism in the proper light. I feel there is a need for deep introspection on all sides. West Bengal needs a fair deal. We want a fair deal. There should be no one-sided appraisal. Please do not malign the people, the Government and the State of West Bengal. ...(*Interruptions*) Please do not malign them. Therefore, I feel that there should be a healing touch to the wound that has been inflicted on Nandigram. It is time to help the process of peace. Only peace can bring about development. Only development can bring about alleviation of poverty. Only alleviation of poverty can take away the breeding ground of naxalism and rise of naxalism in India. [R55]

I would like to add one thing more. Reference has been made to differences within the Left Front. There can be differences within a party. There are differences within parties. There are bound to be differences within different political parties combined in a front. But, I make it sure that Left is as combined and as united as ever before to take care of the political situation as it exists today.

सभापति महोदय : कुछ भी रिकार्ड में नहीं जाएगा।

(*Interruptions*)* â€¦

...

* Not recorded

श्री अनंत गुढे (अमरावती): सभापति महोदय, देश के एक राज्य में लोग मारे जा रहे हैं, घायल हो रहे हैं, लेकिन इस विषय को भी हम लोग राजनीतिक नजर से देख रहे हैं। सरकार की तरफ से जब दासगुंशी जी बोल रहे थे तो कह रहे थे कि आडवाणी जी पश्चिम बंगाल में चाहे कितनी बार भी चक्कर लगा आए तब भी वहां पर भाजपा की सरकार आने वाली नहीं है। यह किसी पार्टी या सरकार की बात नहीं है, यह देश की बात है। लोग मुसीबत में हैं। लोग चाहते हैं कि कोई हमारी सुने, कोई उन्हें आकर देखे। यह इस सदन के विरोधी पक्ष के नेता की जिम्मेदारी है वहां जाकर देखना कि लोग किस हालत में हैं। उनकी स्थिति को समझना और संसद में इस बात को रखना ताकि देश और दुनिया को जानकारी मिल सके कि वहां क्या चल रहा है।

महोदय, एनडीए का जो शिष्ट मण्डल गया था, उसमें मैं भी गया था। मुम्बई-कलकत्ता नेशनल हाइवे बहुत ही अच्छा और सुन्दर है। इसका निर्माण वाजपेयी

जी के काल में हुआ था। इसी हाइवे से 60-70 किलोमीटर अंदर जाकर नंदीग्राम आता है। मैंने नंदीग्राम को अपनी जिंदगी में पहली बार देखा था और सोचा था कि वह बहुत अच्छा और सुंदर होगा क्योंकि वहां पर 25 साल से एक ही पार्टी की सरकार काम कर रही है। लेकिन जब मैंने वहां जाकर देखा तो हैरान रह गया कि वहां किस तरह से लोग रह रहे हैं। वह क्षेत्र तो विकास से कोसों दूर है। वहां जाने के लिए न तो सीमेंट के, न डामर के और न ही रोड़ी की सड़क है, बल्कि खेतों के रास्ते से जाना पड़ता है। यदि आप एक बार चले जाते हैं तो पीछे नहीं मुड़ सकते हैं। लोग वहां पर कच्ची झोंपड़ियों में रह रहे हैं। वहां बिजली नहीं है। घर में लोगों को पीने का पानी नहीं है। कहीं दूर हेण्डपम्प लगा हुआ है, वहीं से पानी लाकर पी रहे हैं।[\[56\]](#) केवल पीने के लिए पानी मिलता है, कपड़े धोने के लिए और नहाने के लिए पानी नहीं है, इसलिए लोग 8-8 दिन नहाते भी नहीं हैं। सारे गड्ढे का पानी, सारा बरसात का रुका हुआ पानी वे उपयोग करते हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि इस राज्य में सरकार नाम की कोई चीज़ है या नहीं। ऐसे हालात में ये लोग वहां पर रह रहे हैं। ऐसी अच्छी उपजाऊ जमीन वहां पर है, जिससे सारा धान वहां पर आता है।

तीन जनवरी को सबसे पहले जब बी.डी.ओ. का वहां नोटिफिकेशन निकला तो उससे पहले ही ये सारी बातें हुईं...[\(व्यवधान\)](#)

सभापति महोदय : आपस में बात मत करिये, कुछ भी लिखा नहीं जायेगा। आपस की कुछ भी बातचीत लिखी नहीं जायेगी। आप उनको कहने दीजिए।

श्री अनंत गुडे : तीन जनवरी को पहली बार जब यह नोटिफिकेशन निकला तो नोटिफिकेशन निकलने के पहले ही लोगों की जमीन के कागजात हमारे आफिस में जमा किये, ऐसा फरमान पार्टी के आफिस से छूट गया था। जबरदस्ती सी.पी.एम. के लोग लोगों को पास गये, मैं राजनीति नहीं लाना चाहता, लेकिन जहां दबाव है, क्योंकि वहां जो भी चुनाव होता है, चुनाव में हर पोलिंग बूथ पर 90 परसेंट वोटिंग सी.पी.एम. के उम्मीदवार को होती है। हम समझते हैं कि वह भी जबरदस्ती होती है, क्योंकि वहां सरकार ने सारी जगह एन.जी.ओ. को बनाकर रखा है और गवर्नमेंट की जितनी भी स्कीमें चलती हैं, वे एन.जी.ओ. के माफत चलती हैं और एन.जी.ओ. को वहां मिनी सरकार बनाकर रखा है, ताकि वहां उन लोगों को दबाव में ला सकें और वहां उन लोगों को दबाव में लाकर उनके सारे कागजात जमीन करने की वहां पर कोशिश हुई, लेकिन जब लोगों ने कागजात देने से मना कर दिया, जब मार्च महीना आ गया और लोगों ने कागजात देने से मना कर दिया, तब लोगों को मारना-पीटना शुरू किया। इसके बाद भी जब लोगों ने विरोध करना शुरू किया, सारे किसी एक पार्टी के कार्यकर्ता थे, ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि लोगों को लगा कि हमारी जमीन जा रही है, जिस पार्टी को हम लोगों ने इतने सालों से वोट दिया है, जिस पार्टी के साथ हम लोग सालों से रह रहे हैं, वह पार्टी जब हमारी जमीन छीन रही है, जब उन्हें ऐसा लगा कि हम कैसे जिंएंगे, हमारा जीना अब मुश्किल हो रहा है, जब उन्हें ऐसा लगा, तब उन्होंने विरोध करना शुरू किया।

यहां कोई पार्टी का सवाल नहीं है, यहां इन्सानियत का सवाल है। उनकी ही पार्टी के लोग हैं, जिनकी जमीन वहां पर छिन रही है, लोगों के सामने जीने का सवाल खड़ा हो गया है, तब लोगों ने विरोध किया। हम लोगों ने अपनी आंखों से देखा है, अधिकारीपाड़ा में जो लोगों ने बताया है, हम वहां खड़े थे, मेरे पास राज्य सभा के सदस्य श्री शरद जोशी जी खड़े थे, वहां के एडीशनल एस.पी. खड़े थे। उनके सामने लोग कह रहे थे कि गांव में कोई नहीं था, गांव से जबरदस्ती निकाल डाले, पुलिस सामने खड़ी थी और पीछे से बन्दूक की गोलियां आ रही थीं, लोग मर रहे थे, कई लोगों को तो कहीं डाल दिया है, पता नहीं है। वहां पर ईंटों की भट्टियां हैं, ईंटों की भट्टियों में लोगों को डाल दिया है, यह लोगों ने अपनी आंखों से देखा है, यह लोगों ने अपने मुंह से कहा है। कई लोग लापता हैं, किसी को पता नहीं है। किसी का बाप चला गया है, किसी का बेटा चला गया है, जब हम लोग और आडवाणी जी रिफ्यूजी कैम्प में खड़े थे तो एक छोटा सा बच्चा, जिसने अपने पिताजी की अर्धी देखी, अर्धी भी उसे मातूम नहीं थी, केवल उसने पूजा की थी, पिताजी मर गये हैं, उसने पिताजी को मरते वक्त देखा नहीं। इस प्रकार की बातें हमें वहां रिफ्यूजी कैम्प में देखने को मिली हैं।

यह सब दौंस करते-करते जब हम ग्रामीण इलाकों में, ग्रामीण दवाखाने में आये, हॉस्पिटल में आये तो कई पेशेंट्स वहां पर एडमिट थे, लेकिन किसी पेशेंट की बोलने की हिम्मत नहीं थी। सब शान्ति से सुन रहे थे, क्या करना है, यह उनके समझ में नहीं आ रहा था। एक असलम नाम का पेशेंट था, उसको 4-5 दिन से किडनैप किया गया था और किडनैपिंग के बाद भी जब उसके घर से कोई नहीं मिला, उसके घर से कागजात नहीं मिले, तब रात को 12.30 बजे उसे दवाखाने में लाकर भर्ती कर दिया।[\[R57\]](#) किसने भर्ती किया, डाक्टर यह बताने के लिए तैयार नहीं हैं। जब हम वहां पर गए, तो वह आदमी जोर-जोर से रोने लगा, सुषमा जी भी वहां पर थीं, लेकिन वह बता नहीं पा रहा था। जब वह कुछ बताने लगा, तो उसकी पत्नी और फेमिली वाले उससे यह कह रहे थे कि कुछ मत बोलो, अगर कुछ बोलोगे, तो लोग हमें मार देंगे। आपकी जो हालत बनायी है, वही हालत हमारी भी बनायेंगे। इस प्रकार की दहशत वहां पर बनी हुयी थी। इस प्रकार की वहां स्थिति है। आज यह बात सही तरीके से देश के सामने आ रही है। साल भर हो रहा है और नंदीग्राम में यह सब कुछ हो रहा है, लेकिन इतनी अराजकता वहां होने के बाद भी मुख्यमंत्री जी का कहना है कि इस स्थिति से निपटने के लिए हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। राज्य में यह सब इतने दिनों से चल रहा है, इसके लिए किसकी जिम्मेदारी है? आज कलकत्ता में वही बात हो रही है। मैं टीवी में देख रहा था कि सारे लोग रास्ते पर उतर आए हैं। लोगों ने वहां गाड़ियां जलाईं, बसें तोड़ीं नहीं, स्कूल बंद हो गए, बच्चे रास्ते पर आ गए, वे कक्षा जाएंगे, पता नहीं। एक बच्ची अपने पिता जी को फोन करके कह रही थी कि मैं यहां पर पड़ी हूं, मुझे पता नहीं है कि मैं कहां पर हूं? मैं कहीं जा नहीं सकती। वहां दिन में 12 बजे से यह सब शुरू हुआ। 12 बजे से प्रदर्शन शुरू हुआ, लेकिन अभी तक वहां सरकार ने कुछ करने की कोशिश नहीं की। इस प्रकार की बातें नंदीग्राम में हो रही हैं। बात केवल पार्टी की नहीं है, किसकी सरकार आएगी, यह बात भी नहीं है। यहां बात यह है कि हम इन सब लोगों को सहत देंगे या नहीं। हमारी मानवता कहां है? हम कहां जा रहे हैं और हमारी मानवता कहां जा रही है? यह देश हमारा है और अगर देश में कुछ होता है तो सारी पार्टियों की जिम्मेदारी होती है। जब हम वहां गए, उसके बाद वहां सीआरपीएफ वहां आया था। उसने अपने हाथ में सब कुछ ले लिया था। वहां देखा कि तृणमूल कांग्रेस के सभी बोर्डर्स गिराए गए, सारे आफिस गिराए गए, लेकिन सीपीएम का आफिस चल रहा है। दासमुंशी जी ने कहा कि बीजेपी कभी नहीं आएगी। हम जब हाइवे से जा रहे थे, तो बड़ी मात्रा में बीजेपी के कार्यकर्ता झंडे फैलाकर स्वागत कर रहे थे। जगह-जगह पर गेट खड़े करने की उन्होंने कोशिश की, रास्ते पर आकर वे स्वागत नारे लगा रहे थे। किसकी सरकार आएगी, कितने साल में आएगी, यह बात नहीं है। यह हमारा देश है। हम इस देश में शांति बनाकर रहेंगे या नहीं। सबसे बड़ी बात यह है कि 25 साल से जो सरकार वहां राज कर रही है, वहां उन लोगों के पास न कोई न्यूजपेपर जाता है, न उन लोगों को कभी टीवी देखने को मिलती है, न उन्हें अच्छा खाना और कपड़ा मिलता है, ऐसा लगता है कि स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी यह नंदीग्राम पीछे है। विकास से इसे दूर रखा गया है, ताकि हम इन लोगों के साथ कभी भी जबरदस्ती से कुछ भी कर सकें और एक तरह से जिंदा लाशों के ऊपर, जिंदा आदमियों के ऊपर बलात्कार करने का काम यहां पर हो रहा है। मैं इसकी निंदा करता हूं और अपनी बात समाप्त करता हूं।

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): Mr. Chairman Sir, I had the occasion to visit Nandigram with NDA delegation. I have seen the miseries of the people which cannot be narrated. My hon. friend was just now narrating something but it is actually more than what he has said. It is an insult to democracy and it is an insult to the civilized society.

Sir, the Nandigram happenings in the past ten months has now begun hitting the headlines of the world media. All, one is

able to see, is the festering sore it has become. But Nandigram's unending tragedy appears to have been totally ignored by the law enforcing authority, both by the Centre and the State, obliged under the Constitution of India to protect and safeguard the lives and property of the people.

The most puzzling aspect of the Nandigram violence is the state of passivity tantamount to abdication of responsibility both by the Centre and the State. Sir, in a chilling re-run of the 14th march violence, bloody backlash, at Nandigram, the proposed Special Economic Zone for facilitating a chemical hub once again exploded in violence and has turned into a battlefield on the 6th November, 2007.^[r58] Saying that Nandigram 'looked like a war zone', the State Home Secretary of West Bengal has admitted that the State Government has failed to quell the continuing bloodshed there at Nandigram.

The Calcutta High Court has observed that it appears from the recent disturbances in Nandigram that there is no Constitutional Government in West Bengal. The Court has taken a serious note of the allegations that not a single person has been arrested for violence within these 10 months. It is quite astonishing. A lot of things have been told here in the House. The State Chief Minister is also telling many things to the Media in the Press Conference but not a single person has been arrested within these 10 months. Maoists have come there; so many people are setting up camp there; but not a single person has been arrested in these 10 months. This is the observation of the Calcutta High Court. Also, the High Court directed the State to reply why the CBI should not be directed to investigate the matter. I would like to know about it from the Government of India. This is the decision of the High Court of West Bengal that they do not believe that the State machinery is capable of investigating the things in detail. So, they have directed the CBI to inquire.

But it is unfortunate that the State Chief Minister justifying his Party's role in Nandigram said in a Press conference that the Opposition and the Bhumi Uchched Protirodh Committee has been paid back in their own coin, and Nandigram has been 'recaptured', as if it was under the possession of some foreign aggressors and the Indian Military has recaptured it. It is an insulting word. How an hon. Chief Minister is telling that it has been 'recaptured'? By whom was it occupied?

In the same Press Conference, holding the Centre responsible for the bloodshed, the Chief Minister argued that if the CRPF arrival was not delayed, things could have been different. He charged that although his Government sought six companies of CRPF on October 27, the Centre kept dilly-dallying and the Forces did not arrive before November 12. This was how the Centre was also responsible for these tragedies. The State Government requested the Centre to send six battalions of CRPF. Now, the hon. Home Minister while intervening has told that two battalions of CRPF were available with the West Bengal Government. But now the Chief Minister is blaming the Centre. He is telling that the things could have been different if CRPF could have reached in right time.

He also claimed that the situation in Nandigram was given a new dimension after a group of Maoist from Jharkhand had set up a training camp there. At the same time –it is interesting to note –the State Home Secretary told: "I do not know about the Maoists. No one has been captured". The Chief Minister is telling that the Maoists are setting up a camp there; the Home Secretary is telling that he is not aware about the presence of Maoists and no one was captured. So this is a very interesting story that they are narrating before the people of this country. Their Chief Minister is telling about the presence of the Maoist leaders there; they are setting up a camp there; but the Home Secretary of the same Government is telling that they do not know about the presence of Maoists and no one was captured. So they are narrating a story just on pretext to protect whatever they have done. They are creating such a situation; they are exhibiting a drama just to protect whatever they have done in their own way of misdeeds.^[r59]

Sir, in a Press Conference, the hon. Governor of West Bengal has also said about it and it has also been discussed here. He said –

The most accurate description for Nandigram was the one given by the State Home Secretary that it had become a war zone. The Home Secretary is telling this. The Governor has expressed it in a Press Conference. The Governor is telling something, the Chief Minister is telling something, the Home Secretary is telling something, and the Central Government is telling something. I do not know what is happening there. I would like to know the true position from the hon. Home Minister.

The Governor further said: "No Government or society can allow a war zone to exist without immediate and effective action." He is asking his Government. The Home Secretary is telling that it is a war zone. How can a war zone exist in the country?

The hon. Governor also said: "The manner in which the 'recapture' of Nandigram villages is being attempted is totally unlawful and unconstitutional." He further said: 'I find it equally unacceptable that while Nandigram has been ingressed with ease by armed people on the one hand, political and non-political persons trying to reach it have been violently obstructed.'

Armed people were there. When the political people, the social activists, the Press and the Media were trying to go

there to know the real picture, they had asked not to enter and they had been obstructed. Some of them were bearing relief articles. Even some voluntary organisations were bearing relief articles and they had not been allowed to reach there, and they had been obstructed.

Sir, the treatment meted out to social activist, Shrimati Medha Patkar – one of the renowned social activist of the country – and the way she had been insulted with her own associates was an insult to the country, to the democracy and to the civil society.

Sir, it is also said that the intellectuals, the media, the Press and the members of the civil society have also been denied entry to Nandigram. They wanted to know whether a peaceful atmosphere was prevailing there or not. Nobody was allowed to go there before the NDA delegation reached there. We were the first delegation to reach there after the 6th November incident.

Sir, one of the partners of the Left Front Government in West Bengal, RSP, has described the development in Nandigram as 'shameful' and its Minister has asked his party to allow him to resign from the Cabinet. Their own partner is telling like this. The Forward Bloc, CPI, the local committees and other two partners of the Left Front Government have also said in the same language that they neither support nor approve the action of the CPI (M) in Nandigram and condemn the acts and what has happened there.

CPI (M)'s declaration of 'war zone' in Nandigram and its justification has reminded me with the justification of American intervention in Vietnam and Iraq. They were also justifying in the same manner that they were the protector of democracy. They were also making it as war zone and intervening there and they were reaching with their war force just to protect democracy.

If the CPI (M) is to be blamed for the criminal misdeeds of its cadre in Nandigram, then the Congress, which controls the Union Home Ministry, is guilty of facilitating the mass murder, rape and arson which we have been witnessing since 27th October, 2007.

Sir, I urge upon the Union Government to ensure restoration of peace and harmony in Nandigram.[\[h60\]](#)

I would also urge upon the Government that the CRPF should not be used to kill the innocent villagers protesting against the State Government's proposed chemical hub plan, branding them as extremists.

With these few words, I conclude.

DR. RATTAN SINGH AJNALA (TARAN TARAN): Hon'ble Chairman Sir, I am grateful to you for giving me the opportunity to participate in the discussion on the serious issue of SEZ and violence in Nandigram. Many honourable members have expressed their outrage at the happenings in Nandigram. In March, 2007, I too had visited Nandigram as part of a delegation. I was shocked to find the miserable condition of the people of Nandigram, Poverty was rampant everywhere. The Left Front ruling West Bengal is not a champion of the poor people. In fact, it is responsible for the creation of poverty in West Bengal. In the last 25 years, the Left Front Government has ruined West Bengal.

In the beginning, the Left Front Government acted against big landlords. However, the same Government is now acting against the interests of small farmers. If they continue with such anti-people policies, they will be wiped out at the hustings.

Sir, the Government intended to acquire the land of the poor farmers for the setting up of a SEZ. This was the root cause of the problem. Now, the leaders of the Left Parties are claiming that their Chief Minister never intended to acquire the land of the poor people of Nandigram. If this is the case, there should have been no crisis. Sir, there is no smoke without a fire. If the Left Front Government did not intend to set up a SEZ at Nandigram, why did it allow the armed cadres of the Left Parties to attack the hapless people of Nandigram? The cadres of the Left Parties donned police uniforms and ran amuck at Nandigram. The workers of the Left parties are killing innocent people at Nandigram. Armed party workers of the Left are ruling the roost there. The policemen are under the direct control of the State Government. Still, the State Government is complaining of foul play. I am amazed.

* English translation of the speech originally delivered in Punjabi

Sir, the Nandigram area is not being ruled by the State Government. It is being ruled by the armed Left Front cadres who have unleashed a reign of terror over there. I have visited the area recently. At the root of the problem is the terror created by the workers of the Left Parties at Nandigram. As long as armed Left Front cadres are controlling Nandigram, there can be no peace and no solution to this problem.

The Left leaders are complaining that the Hon'ble Home Minister of India did not send the required CRPF personnel there. When you have your workers roaming there and creating terror in the area, what is the need of the CRPF? You have already deployed your armed cadres in Nandigram.

Sir, the poor and hapless people of Nandigram are being butchered. But, as Members of Parliament, we are here to serve the people of this country. We will continue to raise such issues in this August House that directly affect the people of India. We must save the poor people of Nandigram from the tyranny of the armed cadres.

I would like to appeal to the Hon'ble Home Minister of India to take a special interest in this case. He must provide relief and succour to the affected people of Nandigram.

Sir, the High Court of the state had given a ruling that a CBI enquiry should be held regarding the police firing on 14th March, 2007 in which 14 innocent people were killed. Nine months have passed, but nothing has been done in this matter. Instead, the Left Front leaders have condemned the High Court ruling and have said that they will take up this matter in the Supreme Court. Why is the Left Front Government shying away from a CBI enquiry into the incident? If they have nothing to hide, why are they afraid of a CBI enquiry? If truth is on their side, why do they want to take up this matter in the Supreme Court? Let there be a CBI enquiry.

Sir, I am quoting from the article - "CPI(M) sees Red" Bose and Konar warned the Judges and asked them to act rightly or face the consequences. They asked the workers and supporters to mobilize themselves against the enemies, which included to Governor, High Court, Press, a section of the city intellectuals and Mamata."

Sir, things have come to such a pass that Government functionaries are asking their party workers to rise against intellectuals and intelligent people who want to mitigate the sufferings of the poor and hapless people of Nandigram. Sir, today, as we discuss Nandigram in this House, Kolkata is burning. These people do not want that any wise person should criticize their misdeeds and talk about the welfare of the people of West Bengal. People are being killed in police firings there.

Sir, the Left Front Government does not want to solve the problem in Nandigram. It is in their vested interest to let the issue simmer. If they do not want to set up a SEZ there, why is there violence in Nandigram? They accuse outsiders of smuggling arms and ammunitions in Nandigram. There is no truth in these allegations Nandigram is a backward area where poverty is rampant. The people of the area have been deprived of the basic facilities like food and drinking water. This is the grim reality.

Mr. Chairman, Sir, Nandigram issue is no longer a state subject. It has become a subject of national importance now. The condition is grim. All of us must provide relief and succour to the affected people of Nandigram. We must save the poor people of Nandigram from the tyranny of the armed cadres.

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार): सभापति महोदय, दो दिन से लोक सभा में नंदीग्राम पर चर्चा हो या न हो, इस पर विवाद था। लेकिन उसमें ज्यादा विवाद शब्दों को लेकर था। हमारे मित्र गुरुदास दासगुप्त जी ने चर्चा के लिए जो शब्द या हैंडिंग दिया, उसे हम लोगों ने स्वीकार कर लिया। इन्हीं के शब्दों, 'नंदीग्राम, पश्चिम बंगाल में विशेष आर्थिक जोन स्थापित करने के प्रस्ताव तथा उसके पश्चात् बड़े पैमाने पर हिसा' पर आज चर्चा शुरू हुई है। नंदीग्राम में विशेष आर्थिक जोन के बारे में जमीन एववायर करने की प्रक्रिया शुरू हुई तो वहां के किसानों ने उसके खिलाफ आवाज उठाई और उसका प्रतिरोध किया। उससे जो स्थिति उत्पन्न हुई, उस पर हम चर्चा कर रहे हैं। चर्चा की शुरुआत आदरणीय आडवाणी जी ने की। वह वहां गए थे, उन्होंने वहां के लोगों से चर्चा की और वस्तुस्थिति की जानकारी ली तथा यहां विस्तार से उस पर चर्चा की। केन्द्रीय सरकार के एक मंत्री श्री प्रियरंजन दासमुंशी, जो उसी प्रदेश से आते हैं, उन्होंने भी अपनी भावना को, हालांकि थोड़ा दबाकर रखा। यह कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने दर्द को सदन के सामने रखने का काम किया। मैं उन्हें इसके लिए धन्यवाद देता हूं, भले ही उन्होंने यह कहा कि वे सांप्रदायिक ताकतों को रोकने के लिए उनसे गठबंधन किए हैं, बावजूद उन्होंने अपने दर्द को दबाया नहीं और उसे सदन तथा देश के सामने रखा। हालांकि उनकी सांप्रदायिकता की परिभाषा हम समझ नहीं पाते हैं कि वह किसे सांप्रदायिक कहते हैं। जब शंकर सिंह वाघेला जी भारतीय जनता पार्टी में रहते हैं तो वह सांप्रदायिक हो जाते हैं और जब उनके साथ आ जाते हैं तो धर्म निरपेक्ष हो जाते हैं। जब करुणानिधि जी हमारे साथ थे तो वह सांप्रदायिक थे, लेकिन जब टी.आर. बालू उनके साथ हो जाते हैं तो वे सब धर्म निरपेक्ष हो जाते हैं। इसलिए हम उनकी सामंप्रदायिकता की परिभाषा नहीं समझ पाते।

श्री दासमुंशी ने यह कहा कि वहां अगले 100 वर्ष तक भी भारतीय जनता पार्टी सत्ता में नहीं आने वाली है। मैं उनसे सहमत हूं। बंगाल हमारा सीमावर्ती राज्य है। वहां अगर राजनीति की भाषा बोलनी होगी तो कांग्रेस पार्टी के खिलाफ सीपीआई (एम) बोल सकती है और सीपीआई (एम) के खिलाफ कांग्रेस पार्टी बोल सकती है। वास्तव में वहां भारतीय जनता पार्टी इस स्थिति में नहीं है कि वहां सत्ता पर काबिज हो सके। जब एक बड़ी पार्टी की यह स्थिति है तो हमें लगता है कि हम कहीं खड़े नहीं हैं, जबकि हमारा इनसे गठबंधन है। हम कहीं खड़े नहीं हैं इसलिए हम निष्पक्ष रूप से अपनी बात रखेंगे। जहां तक ममता जी का सवाल है, तो मुझे क्या शायद विजय कुमार मल्होत्रा जी को भी मालूम नहीं होगा कि वह एडीए में हैं या नहीं हैं।

मैं यहां सिर्फ अपनी बात कहना चाहूंगा, जो मुझे मीडिया, अखबारों और टीवी के माध्यम से मिली है। इसके अलावा हमारे सीपीआई (एम) के एलाइज भी इस घटना से दुखी हैं और जो उन्होंने सेंट्रल हाल में बैठकर हमसे चर्चा की है, उन से जो जानकारी मिली, उन सब पर मैं अपने विचार व्यक्त करना चाहूंगा। मुझे एक बात पर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि सीपीआई (एम) वहां बराबर ताल झंडा लेकर किसानों का, मजदूरों का सवाल उठाकर लड़ाई लड़ती रही और उसी में अपना क्रेडिट

मानती रही कि हम गरीबों के साथ चलने वाले हैं, गरीबों के मसीहा हैं। [R61]

सभापति महोदय, आपको याद होगा, हरियाणा में पुलिस ने मजदूरों पर डंडा चलाया था तो माननीय गुरुदास दासगुप्त ने सदन में बहुत जोरदार ढंग से उस सवाल को उठाया था। हम उस समय तक समझते थे कि वे सचमुच में ही गरीबों के मसीहा हैं क्योंकि वे धनी लोगों के खिलाफ बग़ावत का झंडा उठाते थे। लेकिन आज कौनसी परिस्थिति आ गयी कि कल तक जो लोग गरीबों के हित की बात करते थे आज वही गरीबों का कत्लेआम कर रहे हैं।

सभापति जी, माननीय मोहम्मद सलीम साहब यहां नहीं बैठे हैं, वे बहुत दावा कर रहे थे कि वहां सेज का सवाल नहीं है। जब बत्ता ही पैदा नहीं हुआ तो यह सवाल कहां से पैदा होता है कि उस सवाल पर वहां विवाद हो। मैं दावे के साथ कहता हूं कि उन्होंने लोक सभा में अपना विचार असत्य रूप से रखा है। आपकी इजाजत होगी तो मैं यह कागज टेबल पर रख दूंगा। यह पत्र बंगाल सरकार के श्री विक्रम सेन, आईएस, स्पेशल सैफ़्टी, कॉमर्स एंड इंडस्ट्री डिपार्टमेंट, उन्होंने यह पत्र स्पेशल सैफ़्टी, मिनिस्ट्री ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, ईपीजेड, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, उद्योग भवन को लिखा है। यह 25.9.2006 का पत्र है। अगर आप कहेंगे तो मैं सब्जैट पढ़कर इसे टेबल पर रख दूंगा। "State Government recommendation on application of New Kolkata International Development (NKID) to set-up SEZ at Nandigram (near Haldia), district Purba Medinipur" यह पत्र उन्होंने पूरे दस्तावेज के साथ भेजा है इसकी अनुसंधान की एक कॉपी मेरे पास है। अगर आपकी इजाजत होगी तो मैं इसे टेबल पर रख दूंगा। माननीय सलीम साहब ने बिल्कुल ही असत्य बोला है कि वहां पर सेज के संबंध में कोई चर्चा नहीं चल रही थी या कोई जमीन एववायर करने की प्रक्रिया नहीं हो रही थी। सभापति महोदय, राज्य सरकार को जमीन एववायर करने का अधिकार है लेकिन जमीन एववायर करने की प्रक्रिया किसानों को विश्वास में लेकर होनी चाहिए। वहां जमीन एववायर कैमिकल हब के लिए हो रही थी। इंडोनेशिया का एक बंदरगाह औद्योगिक समूह है सलीम ग्रुप, जिसके लिए वहां पर जमीन एववायर की जा रही थी। सभापति जी, आपका संबंध भी बंगाल से ज्यादा दूर का नहीं है क्योंकि उत्तर प्रदेश और बिहार के बहुत ज्यादा लोग बंगाल में रहते हैं। वहां पर लोगों के द्वारा चुनौती सरकार नहीं चलती है। कैडर के नाम पर वहां पार्टी की सरकार चलती है और पार्टी का ही हुक्म पदाधिकारी मानते हैं। अगर वे पार्टी की बात नहीं मानते हैं तो उन पदाधिकारियों को पार्टी से निकाल कर बाहर कर दिया जाता है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : बातचीत मत कीजिए, बातचीत नहीं लिखी जाएगी।

...(व्यवधान)।*..

श्री प्रभुनाथ सिंह : सभापति महोदय, जैसे माननीय सलीम साहब बोल रहे थे कि सीपीएम के कार्यकर्ता की पहले हत्या हुई, टुकड़े-टुकड़े करके उसे जला दिया गया, उसका पूरा घर जला दिया गया। हम उनकी बात से सहमत हैं। उनकी बात से हम इसलिए सहमत हैं क्योंकि मारने वाले और मरने वाले दोनों लोगों में ज्यादातर संख्या सीपीएम के लोगों की है। इसका कारण यह है कि जब वहां जमीन एववायर करने की प्रक्रिया शुरू हुई और जब संगठन के लोग जमीन के कागज मांगने लगे तो सीपीएम का ही एक समूह जो वहाँ से कैडर के रूप में जाना जाता था, ताल झंडा लेकर घूमता था, सीपीएम के नारे लगाता था, सीपीएम के लिए बूथ कैप्टर करता था, उसने विरोध किया और कहा कि हम पार्टी छोड़ देंगे लेकिन हम अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे। उन लोगों ने पार्टी छोड़ दी और एक जमीन अधिग्रहण के विरोध में दल बनाया, संगठन बनाया। उस संगठन में सीपीएम छोड़कर जो लोग गये थे उनके साथ कुछ कांग्रेस के लोग भी शामिल हो गये, उन लोगों के साथ कुछ तृणमूल के लोग भी शामिल हो गये तथा कुछ इंडिपेंडेंट लोग, आम लोग, किसान लोग भी शामिल हो गये। उन लोगों ने प्रतिरोध करना शुरू किया। कुछ दिनों बाद संयोग से वहां माननीया ममता बनर्जी का पदार्पण हुआ। उन्होंने कहा कि लड़ाई इसके लिए लड़ी जाएगी और जमीन का अधिग्रहण नहीं होगा और किसान अपनी जमीन का मालिक बना रहेगा। [r62]

सभापति महोदय, सीपीएम के लोगों को यह बर्दाश्त नहीं हुआ कि तीस साल से हम शासन में हैं और प्रतिरोध में जुलूस निकल रहा है। दो तरफ से जुलूस निकल रहा था, दस-दस हजार लोगों की भीड़ थी। वहां पुलिस और पुलिस के भेष में सीपीएम कैडर के लोगों ने गोली चलाई। अखबारों में तो यहां तक लिखा है कि बहुत सी ताशें सीपीएम के दफ्तर के सामने देखी गईं।

महोदय, नंदीग्राम में पिछले 11 महीनों से ऐसा हो रहा है। कई बार रुक जाता है और कई बार शुरू हो जाता है। घटना होते-होते आज यह स्थिति हो गई है कि जब अंग्रेज थे, ऐसी ज्यादातर तब भी देश के लोगों के साथ नहीं हुई थी। घर जलाए गए, लोगों को मार दिया गया, माँ के सामने बेटी का बलात्कार, बेटी के सामने माँ का बलात्कार, भाई के सामने बहन का बलात्कार हो रहा है। बेटी अपने बाप को खोज रहा है और बाप अपने बेटों को खोज रहा है। जिस इलाके में जिस वर्ग के लोगों की बहुलता होती है, वे ज्यादा संख्या में प्रभावित होते हैं। हमें अखबारों से जो जानकारी मिली है, उसके हिसाब से आपको बताना चाहते हैं कि नंदीग्राम के अगल-बगल 55 से 60 प्रतिशत मुसलमान वर्ग के लोग रहते हैं। यदि लोग मरे हैं,

* Not recorded

तो मुसलमानों की संख्या ज्यादा है, बलात्कार हुआ है, तो उनकी संख्या ज्यादा है, यदि लोग जलाए गए हैं, तो उनकी संख्या ज्यादा है। महोदय, मैं अखबार की दो पंक्ति आपको पढ़ कर सुनाना चाहता हूं कि वहां किस तरह की घटना घटी है। अखबार में लिखा है कि " उन्होंने जो किया है, विदेशी सेना भी ऐसा नहीं कर सकती थी। बिना चेतावनी के गोली चलाई, लाठी चलाई और तों से बलात्कार किया। बलात्कार ही नहीं किया, बल्कि ऐसा बदला लिया, जिसे लिखने में भी शर्म आती है। 14 लोग मारे गए, कई लोग घायल हुए। दो महीने बाद हमें सोनाचूरा में एक औरत मिली, जिसने पलक झपकाए बिना बताया कि उनके लिए बलात्कार ही काफी नहीं था, उन्होंने एक गोली मेरी योनि में घुसेड़ दी। इसके नीचे लिखा है कि उन्होंने एक सरिया मेरी योनि में घुसेड़ा और देर तक घुमाते रहे, इस कारण मैं अब भी ठीक से पेशाब नहीं कर सकती हूं।

सभापति महोदय, इस तरह की घटना की जब चर्चा की जाती है, मैं गुजरात की चर्चा करना चाहता हूं। गोधरा, गुजरात में जब दहन जली थी, तब नरेन्द्र मोदी ने सिर्फ कहा था कि क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। देश के लोगों ने निंदा की। श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे। उन दिनों भी हम सदन के सदस्य थे। हमने यहां नरेन्द्र मोदी को निरपत्ता करने की मांग प्रधानमंत्री जी से की थी। लेकिन आज मुख्यमंत्री जी इस घटना के बारे में क्या कहते हैं, आज के मुख्यमंत्री का बयान पढ़ लीजिए। नंदीग्राम के तीस गांवों पर जब मा.क.पा. के हथियारों से तैस कैडर ने कब्जा किया, तब कोलकाता की सड़क बिल्डिंग में इतने गर्व से कहा कि विपक्ष और भूमि अनुच्छेद प्रतिरोध समिति को ईंट का जवाब पत्थर से दे दिया गया है। ग्यारह महीने से अपने घर आनंद से दूर रह रहे हमारे समर्थक तौटने को बेताब थे, वे अपनी जान पर खेल कर वापिस आ गए। हताशा में उन्हें जवाब देना पड़ा कि उनका ऐसा करना नैतिक और कानूनी, दोनों ही तरीकों से उचित है।

सभापति महोदय, मुख्यमंत्री का बयान कि नैतिक भी उचित है और कानूनी भी उचित है और उसके बाद सीपीएम के लोग तर्क दे रहे हैं। हमें लगता है कि शर्म भी शर्माएगी। [R63] ये लोकतंत्र का पवित्र मंदिर है, इस पवित्र मंदिर में इस ढंग का राजनीतिक बयान किसी तरह से उचित नहीं होगा। * ...

सभापति महोदय :यह ठीक नहीं है। आपने बहुत अच्छे ढंग से अपनी बात रखी है। अब आप एक खूबसूरत भाषण को न बिगाड़ें।

*** Not recorded**

श्री प्रभुनाथ सिंह : इस तरह की घटनाओं के बाद महामहिम राज्यपाल का बयान आया है। हमारे एक साथी गोपाल जी बोल रहे थे और बयान पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे थे, मैं मानता हूँ कि व्यावहारिक रूप से बयान उचित हो या न हो लेकिन नैतिक रूप से एक राज्यपाल की जो भावना थी, जो अपनी आंखों से देख रहे थे, उसे व्यक्त करके उन्होंने देश और दुनिया को दिखा दिया कि जिम्मेदार पद पर बैठने वाला व्यक्ति चुप नहीं रह सकता बल्कि अपने कर्तव्य का पालन भी कर सकता है। महामहिम राज्यपाल ने ही बयान नहीं दिया बल्कि मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष ने कहा कि यह घटना गोधरा से भी बड़ी है। उच्च न्यायालय कोलकाता ने भी टिप्पणी की है और मुआवजा देने की बात कही है लेकिन मुआवजे के एक भी पैसे का भुगतान नहीं हुआ है। देवेन्द्र जी यहां नहीं हैं, हम उन्हें बताते क्योंकि गुजरात की चर्चा करके बहुत गर्व से सीना फुलाकर बोलते हैं कि गुजरात में बहुत अन्याय हो गया लेकिन देवेन्द्र जी भूल गए हैं कि देश में अगर कोई भी दंगा हुआ है तो बिहार के भागलपुर से बढ़कर कोई दंगा नहीं हुआ है। पांच हजार हिंदू और मुसलमान मारे गए थे, उस समय शासन किसका था? नीतीश कुमार का शासन नहीं था, भारतीय जनता पार्टी का शासन नहीं था बल्कि कांग्रेस की हुकूमत थी और कांग्रेस की हुकूमत के बाद आरजेडी का शासन आया और जो मुख्य अपराधी था वह हैलीकॉप्टर में घूमता था, उसे सांप्रदायिक सौहार्द बनाने वाला मसीहा कहा जाता था। जब नीतीश कुमार की सरकार बनी, जिस नीतीश कुमार की सरकार में भारतीय जनता पार्टी के लोग शामिल हैं, तब एक कमीशन बना, जांच हुई और जो परिवार पीड़ित थे उन्हें 2500 रुपये प्रतिमाह बिहार सरकार अपने खजाने से दे रही हैं ताकि वे परिवार जिंदा रह सकें। यहां गृहमंत्री जी बैठे हुए हैं, एक समीक्षा करके बिहार सरकार ने पीड़ित परिवार के लोगों का नाम भेजा गया है। यह गृह मंत्रालय में लिंबित है कि जिस तरह 1984 के दंगों से पीड़ित लोगों को मुआवजा दिया गया उसी तरह भागलपुर के दंगा पीड़ितों को मुआवजा दिया जाए। यहां गृह मंत्री जी बैठे हुए हैं हम आपके माध्यम से निवेदन करेंगे कि बिहार सरकार ने जो प्रतिवेदन भेजा है उस पर गृह मंत्री जी 1984 के दंगा पीड़ितों की तरह भागलपुर के दंगा पीड़ितों को मुआवजा देने के लिए गंभीरता से विचार करें। सीपीएम के जो लोग नीतीश कुमार, नीतीश कुमार कह रहे हैं, हम उनको ये बताना चाहते हैं कि नीतीश कुमार से सीखने का काम करें कि सांप्रदायिक सौहार्द किस तरह बनाकर राज्य का प्रशासन चलाया जाता है, किस तरह देश चलाया जाता है, टुकड़े-टुकड़े समाज के करके चाहे जाति के आधार पर हो या धर्म के आधार पर हो, प्रशासन को नहीं चलाया जा सकता। अभी जो घटनाएं घटी हैं, उसमें नंदीग्राम का नाम निंदाग्राम के रूप में बदल रहा है। हम आपके माध्यम से सीपीएम के लोगों से कहेंगे वहां का वातावरण सौहार्द करें, जो उच्च न्यायालय ने मुआवजे की बात कही है वहां मुआवजा दें, एक सर्वदलीय कमेटी लोकसभा के माध्यम से जाकर वहां जांच करे क्योंकि मुख्यमंत्री का बयान आ चुका है और इससे यह प्रमाणित हो चुका है कि मुख्यमंत्री की निगरानी और देखरेख में घटना घटी है इसलिए सीबीआई से जांच कराकर अगर मुख्यमंत्री दोषी पाए जाते हैं तो उन पर कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। &€| (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): Sir, the poor people, who were attacked in Nandigram, were asserting their fundamental rights to hang on to their property and to prevent their farms from being seized. An hon. Member, Prof. Ram Gopal Yadav has spoken on this issue, so also several other hon. Members. When the Chief Minister said that there is no question of setting up of an SEZ in Nandigram, why was there a clamour in forming a भूमि उच्छेद प्रतिरोध कमेटी? Why was it not disbanded? That was the question.

I would just put two simple questions to you. Is it not a fact that in the month of last January, the Haldia Port Authorities had issued a notification for the acquisition of land? Is it not true? Is it not true that it was withdrawn later on? Is it not true that when the Chief Minister was asked the same question by the media and Press, he said, फेड़े दाव, फेड़े दाव – tear it up; throw it away.

Now, Shri Prabhunath Singh has also said the same thing. He also mentioned the letter written by one of the Principal Secretaries of the West Bengal Government to the Government of India. Is it not true? Then, why do you say that there was absolutely no intention of setting up of a SEZ in Nandigram? It is totally untrue now to say this because that suits you; it suits the CPI(M). Sir, Shri Gurudas Dasgupta has left the House after speaking. He quoted hon. Advaniji saying that it is not the Left Front but it is only the CPI (M), who is at fault. He has challenged him to name as to who said that. But he did not. He is a very decent person and he is after all the Leader of the Opposition. He cannot do so. I am doing so. I am naming him. Shri Abani Roy, the General Secretary of RSP, who was with me during the interview in the Lok Sabha Television. When I accused that it is the Left who is attacking the poor people, he said: "Do not say that, say only the CPI (M). We are against it." Go and check the video cassette and you would see as to what he had said and as to whether it is correct or not. Do not say that it is the Left, which is doing it. Is the Forward Bloc doing that? Is the RSP doing this? Is it not a fact that Shri Kirti Goswami, who is the Minister belonging to the RSP in the West Bengal Government, also declared that he would resign from the Ministry? Is it not a fact? Maybe some individuals like Shri Gurudas Dasgupta are with the CPI (M). But except him or one or two persons like him, nobody is with the CPI(M). It is only the CPI (M) who has attacked the people and it is not the Left Front.

I am coming to the next point, which has been narrated by Shri Prabhunath Singh. Why did this thing happen?

Previously, it was called a *Lal Durg*. They did not allow anybody to enter into Nandigram. At that time, it was only the CPM (M) and Left and nobody else. There was absolutely nobody there. They did not allow anybody - neither the Trinamul Congress nor anybody. They did not allow anybody to enter inside. But when some of the people from the same Left Front found that their land is now going to be acquired by the Government forcibly, then, they objected to it. They became CPI(M) rebels. In the first time, I also went with the delegation; Advaniji did not go at that time. At that time, Sushmaji went there and led a delegation in the first week of last January. I was the member of that delegation. Let me tell you that there is not a single, not even one decimal of land which is not cultivable there. Sir, 10,000 acres of land is only cultivable and arable. I could not even believe that this arable land is going to be acquired forcibly by the Government of West Bengal. They say that they are the messiah of the poor people, of the proletariat. [r64]

17.00 hrs.

They are just acquiring the land forcibly. Who are they being supported by? It is the Confederation of Indian Industry, the CII. It is supporting the West Bengal's Communist Party Government and saying that the land should be forcibly occupied; otherwise, no industry could be set up throughout the country.

The Leader of the CPI (M) Party, Shri Acharia himself brought forward a Calling Attention Motion against the Kalinga Nagar firing in Orissa. At that time, he asked why did the Orissa Government fire and kill those people. He further said that action should be taken against the Government. But now, he says that there is nothing wrong with the West Bengal Government. You can ask him whether he himself brought forward the Calling Attention Motion or not. When something happens in Orissa, it is wrong, but when the same thing happens in West Bengal, it is absolutely right! That is the dual policy that the CPI (M) persons always adopt and they are adopting it now also.

Why did this happen? It happened because those people who are majority in number and who belonged to the CPI (M) became rebel and they had the lands. It is the tactics of finishing of the opposition – they burn the houses, rape them, throw them out of the place. They adopted this technique for the last 30 years and when they became rebels, they adopted the same tactics against their own party people and they threw them out. I agree that they threw them out already; it is true that they were thrown out 11 months before.

But my basic point is this. You want that you should bring them in. But how? Is it not the responsibility of the State to bring them in? Is it the responsibility of the 'cadre' to do it? They said that the police could not enter inside Nandigram. What does it mean? It means that the CPI (M) Government has failed; the State has failed; the State is incapable of protecting the people of this state, the people of West Bengal. That is what they themselves said.

So, I am telling that the CPI (M) is so capacious. I can show it from the 'India Today', in what way they entered. You can see it – the red brigade with red scarf with mouths closed. It is all red and they went inside! â€ (Interruptions)

The Chief Minister is saying in a Press Conference that he is a Communist; he cannot go beyond his Party; "they were paid back in the same coin!" And he talks of 'us' to refer to their own Party people and 'they' to refer to the people belonging to other Parties. He says 'us' and 'they'. The Chief Minister is saying like this. This is the language the Chief Minister is using. So, what happened? They had a military-type of attack; a multi-pronged attack was just made from three sides – from every side 200 people or marauders came; and they over-run it. Why did they over-run it? Some people, just a night before, went to the Police Station and told the Police that they would attack from tomorrow, that they should not come, and that they should not intervene. So, the Police sat silently and they did not come at all. From four districts, they recruited the people; people came with firearms and with everything. They outnumbered *Bhoomi Uchhed Pratirodh Samiti* people by ten to one. They are so numerous that they totally outnumbered their enemy. That is the reason for which there was no encounter. They virtually seized it. It is the people's army. So, I will make an appeal to you. Whenever India is going to fight another war with any other country, send the CPI (M) cadre! They are so-capable. â€ (Interruptions) [MSOffice65]

When there is a fear of attack from China, â€ (Interruptions) we are always saying that they are coming into the Indian side. It is the CPM cadre who should be sent to China border to fight with the Chinese Army. This Red Cadre should be sent to Arunachal. So, the Red Cadre should fight with the Red Army of China. They are so capable of doing this.â€ (Interruptions) They should also be sent while fighting with Naxalites. Why are we just debating this thing? The basic thing is most of the people in this country do not know the character of CPM. What is its character?

CPM is a Party which emanated from CPI who supported Joseph Stalin who massacred 20 million people in Russia. That is the Party to whom they supported. When CPI was divided into CPI and CPM in 1963, the CPM was created because they supported China which attacked India. So, for supporting China to attack India they divided their own Party and came to power. All those people who are in West Bengal, Delhi and Mumbai, think that probably the leaders of the CPM, who are graduates and post graduates from Jawaharlal Nehru University, are probably very liberal and are democrats. Their heart probably is at the right place. They are probably thinking like that.

MR. CHAIRMAN : Please conclude now.

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, I am only the second speaker from the biggest Party.

सभापति महोदय : अब समय नहीं है। गृह मंत्री जी को जवाब भी देना है।

श्री खारबेल स्वाई : समय तो थोड़ा आपको और देना होगा।

सभापति महोदय : समय तो आपको बहुत दिया गया।

श्री खारबेल स्वाई : बहुत कैसे दिया गया? सीपीएम पार्टी के मैम्बर एक घंटा बोले। आप देख लीजिए, हमारे लीडर भी इतना नहीं बोले। अगर समय नहीं देना है तो मना कर दीजिए। हम नहीं बोलेंगे।

सभापति महोदय : ऐसा नहीं है।

श्री खारबेल स्वाई : सीपीएम के मैम्बर एक घंटा बोलेंगे और हमारी पार्टी के मैम्बर उनसे दो गुना ज्यादा हैं। हम नहीं बोलेंगे? ...*(व्यवधान)* ठीक है सर, आप पांच-सात मिनट दे दीजिए, मैं अपनी बात खत्म करता हूँ। ...*(व्यवधान)*

So, it is like this. Now, the hon. Member who was just now speaking has won with the highest margin in India. Everybody, even his Party people, know as to how he has won with a margin of five lakh votes. Everybody knows that and he thinks that nobody can drive out CPM from West Bengal. I would reply him after just one minute....*(Interruptions)*

सभापति महोदय : बसु जी, आप बैठिए। आपस की कोई बातचीत रिकार्ड में नहीं जाएगी।

...*(व्यवधान)* *

SHRI KHARABELA SWAIN : I am putting a very basic question. Let the country, the CPM or the House know the distinction between the cadre and the police. Is there any distinction? Is there any distinction between the enemy of the Party and the enemy of the nation? Or, are they same? Is there any distinction between the rule of law and the rule of politburo? The politburo is more powerful than the State and it is the politburo, when Shri Jyoti Basu was offered the Prime Ministership, which refused saying that he cannot become the Prime Minister of the country....*(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: It was the Central Committee.

* Not recorded

SHRI KHARABELA SWAIN Even the present hon. Speaker was also refused to become the President of the country. So, Sir, it is the politburo which is more powerful.

17.09 hrs.

(Mr. Deputy-Speaker in the Chair)

Congress people know it better than me that about two months back the General Secretary of the politburo was almost on the verge of pulling down the rug from under the feet of the UPA Government. The UPA Government was just going to fall not because of the CPM Chief Minister objecting to it but because of the General Secretary of the politburo who is more powerful.[\[R66\]](#)

MR. DEPUTY-SPEAKER: No running commentary.

SHRI KHARABELA SWAIN : So my point is that the people of this country should understand what the CPM Party is. It is totally a totalitarian Party. It is totally a Stalinist and authoritarian Party. They do not have any respect for any democratic principles or any democratic centre anywhere in the world. They have just been finished totally all over the world. As hon. Shri Advaniji said, they are left only somewhere in a very small island State, Cuba and they are in West Bengal. The Chinese communists themselves say that they are no more communists and that they are the capitalists. They also say that they are the followers of America.

Lastly, I would talk about the role of the Congress Party. What is the Congress Party doing? Except only one Minister, Mr. Priya Ranjan Dasmunsi, nobody spoke a word. The Congress Party in West Bengal is behaving like 'B' team of CPM and because of them only, the CPM Party is now in power. There are about 30 to 40 aspirants of Chief Minister in this Congress Party. They are also having a very good friend in Kumari Mamta Banerjee and because of them, they are winning. If there is any Opposition Party in West Bengal, it is the Bharatiya Janta Party. There is no other Opposition Party in West Bengal. We are the only Opposition Party and we will show them in future whether we would come to power or

not...(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: No running commentary. Nothing would be recorded except the speech of Shri Swain.

(Interruptions)* *€'

SHRI KHARABELA SWAIN : Lastly, I would say that their citadel has already started crumbling. The ex-Chief Justice of Calcutta High Court, Justice Chittodas Mukherjee; ex-Chief Justice of Orissa High Court, Shri Sushanto Chatterjee; and ex-Justice of Calcutta High Court, Justice Bhagwati Prasad Banerjee all have condemned the CPM Party severely. Mr. Anjan Dutta whose name was also short listed for getting the Nobel prize in Economics, is now on hunger strike for the last two days. Let them say who is Mr. Mrinal Sen; who is Madam Mahashweta Devi, Ms. Aparna Sen, Mr. Srishendu Mukherjee, the writer, Mr. Shyamal Mitra, the actor, Mr. Kaushik Sen, the artist, Mr. Shekhar Ghosh, Mr. Gautam Ghosh, Mr. Subhabrata Bhattacharjee, Mr. Samir Aich, and Mr. Kabir Suman? They are all intellectuals and they are all against them. Now their citadel is crumbling. I would appeal to the very good people of West Bengal to throw the CPM Party into the Bay of Bengal so that the country could be saved.

* Not recorded

श्री जय प्रकाश (हिसार): उपाध्यक्ष महोदय, आज 12 बजे से नंदीग्राम के मामले को लेकर सदन में बहस चल रही है। ये सारी चर्चा वर्यो हुई, नंदीग्राम में इस तरह का माहौल वर्यो बना, एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने में, अपनी-अपनी खाल बताने में सारे विपक्ष के लोग लगे हुए हैं। मैं एक बात विपक्ष के साथियों से पूछना चाहता हूँ कि जब देश में एसईजैड का कंसेप्ट आया तो उस वक्त इस देश में एनडीए की सरकार थी। वर्या एनडीए की सरकार ने उस वक्त इस बात की तरफ ध्यान नहीं दिया कि भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है और इस देश का विकास कृषि पर निर्भर करता है। उस वक्त ये शर्तें वर्यो नहीं लागू की गईं, जो आज भारतीय जनता पार्टी के लोग या उनके सहयोगी दल सत्ता से दूर हो गए। देश में जब एसईजैड के कंसेप्ट को आगे बढ़ाया तो इन्होंने एकदम आवाज उठाई। मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं और उनके सहयोगी दल के साथियों से तथा वामदल के साथियों से निवेदन करना चाहूँगा कि यदि मूल्यों पर आधारित राजनीति करोगे तो देश की जनता इन लोगों को कभी माफ नहीं करेगी। यदि गुजरात में एस.ई.जैड. स्थापित करने की बात आए, चूंकि वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, इसलिए ये लोग कुछ नहीं बोलते, लेकिन यदि हरियाणा में एस.ई.जैड. स्थापित करने की बात होती है, तो ये लोग विशेष करते हैं। अभी हरियाणा के गुड़गांव में एस.ई.जैड. बनाया, तो विपक्षी दल के साथियों ने गुड़गांव में जाकर बड़ा शोर मचाने की कोशिश की।

हमारी आदरणीय श्रीमती सोनिया गांधी जी ने कांग्रेस शासित राज्यों के सभी मुख्य मंत्रियों को बुलाकर निर्देश दिए कि उनके राज्यों में एस.ई.जैड. स्थापित किए जाएं। वर्या इस प्रकार के निर्देश भारतीय जनता पार्टी, अपनी सरकार के समय अपनी पार्टी की सरकारों के राज्यों के मुख्य मंत्रियों को नहीं दे सकती थी? जब आज हरियाणा प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की सरकार है और आप इस बात को भलीभांति जानते हैं कि गुड़गांव और अम्बाला में एस.ई.जैड. का काम शुरू हो रहा है, तभी हमारे विपक्ष के साथी वहां गए। इनके साथ, इनके सहयोगी दलों के भाई भी गए। वहां किसानों ने एक ही बात कही कि हमारे यहां जो एस.ई.जैड. बनाया जा रहा है, वह बहुत जरूरी है। यह बढ़ाना लेकर कि कृषि योग्य भूमि पर एस.ई.जैड. नहीं बनाया जाएगा, इन्होंने विरोध किया। मैं व्यक्तिगत रूप से इनकी इस राय के खिलाफ हूँ क्योंकि हरियाणा और पंजाब में बहुत कम बंजर जमीन है। सारी जमीन वहां कृषि के काबिल है। यदि इन प्रदेशों का औद्योगीकरण नहीं किया जाएगा, तो ये प्रदेश तरबकी कैसे करेंगे? इसलिए मैं विपक्ष के साथियों से कहूँगा कि वे फिजूल की बयानबाजी छोड़कर देश को आगे कैसे बढ़ाया जाए, इसमें सहयोग दें।

महोदय, एस.ई.जैड.की वजह से नंदीग्राम में दंगे हुए। वहां वर्या करना चाहिए और कैसे दंगे रुकें, इसमें सबको सहयोग देना चाहिए। ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे दंगों में और इजाफा हो। आज एक ही बात पर चर्चा चल रही है। मैं सदन के साथियों से कहना चाहूँगा कि एस.ई.जैड. के कंसेप्ट को जिस प्रकार से कांग्रेस शासित राज्यों में लागू करने की बात की जा रही है, उसके अनुसार काम होना चाहिए। मैं हरियाणा प्रदेश के बारे में बताना चाहता हूँ। हरियाणा के गुड़गांव और अम्बाला में 2500 एकड़ में एक कंपनी एस.ई.जैड. बना रही है। हमसे पहले एन.डी.ए. की सरकार थी। उस समय किसानों की जमीन 2 लाख रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से ली जा रही थी, यानी कौड़ियों के भाव किसानों की जमीन लूटी जा रही थी। आज कांग्रेस शासित राज्य हरियाणा में वहां के मुख्य मंत्री, चौधरी भूपेन्द्र सिंह ठूठा ने, 23 लाख रुपए से 28 लाख रुपए प्रति एकड़ तक एन.सी.आर. में जमीन का मूल्य निर्धारित किया है। पहले जहां इनकी सरकार के समय में 2 लाख रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से जमीन ली जा रही थी, वहां आज 28 लाख रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से जमीन ली जा रही है। जिन लोगों को वहां एस.ई.जैड. स्थापित करने हैं, वे वहां एस.ई.जैड. स्थापित करें।

महोदय, हमारी सरकार ने हरियाणा प्रदेश में जमीन अधिग्रहण की एक नई नीति बनाई है। ऐसी नीति अब तक पूरे देश के किसी प्रदेश में नहीं बनाई गई है। मैं सदन के सभी सदस्यों से निवेदन करूँगा कि वे हरियाणा में जैसी नीति भूमि अधिग्रहण की बनाई गई है, वैसी वे अपने-अपने प्रदेशों में भी बनाएं। हरियाणा प्रदेश में जो भी जमीन एन.सी.आर. एरिया में सरकार अधिग्रहण करेगी, वहां 23 लाख से 28 लाख रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से जमीन का दाम देनी और इसके अतिरिक्त 33 वर्ष तक 30 हजार रुपए सालाना के हिसाब से रायल्टी देनी और इस रायल्टी में प्रति वर्ष 1000 रुपए के हिसाब से इजाफा होता जाएगा। अगर इस तरह की नीति सारे देश में बनाई जाए या भारतीय जनता पार्टी शासित राज्यों में बनाई जाए, तो उससे देश के किसानों की उन्नति होगी। इसलिए मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से कहना चाहता हूँ कि वे आपकी पार्टी द्वारा शासित राज्यों में ऐसा कर के दिखाएं क्योंकि वे सदन में इस तरह की केवल चर्चाएं करते हैं।

महोदय, मैं वामपंथी दलों के साथियों से एक बात जरूर कहना चाहूँगा। मैं गुड़गांव की बात करता हूँ। हमारे श्री गुरुदास दासगुप्ता वहां नहीं बैठे हैं। दो वर्ष पहले एक मामला हौडा कंपनी के नाम से आया था। इस बारे में इंडियन एक्सप्रेस में छपा था। मामला बहुत छोटा था, लेकिन उसके कारण वहां वर्यैधन आवर नहीं चले दिया गया और इस प्रकार से हमारे प्रगतिशील मुख्य मंत्री के प्रगतिशील कार्यों को हमारे सहयोगियों ने तोड़ने की कोशिश की। भारतीय जनता पार्टी के नेता, श्री लाल कृष्ण आडवाणी वहां अभी नहीं बैठे हैं। उस दिन प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने इस मामले को वहां जलियांवाला बाग के कांड से कम नहीं बताया था। आज मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से पूछना चाहता हूँ कि राजस्थान में इंदिरा गांधी कैनाल से जब किसान लोग पानी देने की मांग कर रहे थे, तो वहां वर्यो 6

किसानों को गोतियों से भूल दिया गया था। उस समय राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। वया वहां हजारों किसानों को ताठियों से नहीं पीटा गया, वया वहां ताशें सड़कों पर नहीं पड़ी रही थीं? तब श्री ताल कृष्ण आडवाड़ी वहां किसानों को देखने वयों नहीं गए और अब यहां इस तरह की चर्चा करते हैं?

महोदय, आज मैं विपक्षी साथियों से एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि गुड़गांव का हमारा बहुत छोटा मामला था, लेकिन कुछ विपक्षी लोग जो हरियाणा में प्रतिशोध कार्यों को होते हुए नहीं देखना चाहते थे, इसलिए वामपंथी दलों के साथियों ने उसे तोड़ने का प्रयास किया। मैं वामपंथी दल नहीं कहूंगा बल्कि सी.पी.आई. के नेता श्री गुरुदास दासगुप्ता वहां गए थे।^[67] हमने दासगुप्ता जी से एक बात कही थी कि हरियाणा प्रदेश की सरकार किसान और मजदूर को कभी मरने नहीं देगी। हमारे मुख्यमंत्री ने यह बात कही थी। हमें दोहरी राजनीति को इससे अलग रखना होगा। आप लोगों को भी यदि नंदीग्राम में गोली चली है तो उसकी निन्दा करनी चाहिए। गुड़गांव के अंदर या देश के किसी भी हिस्से में मजदूरों पर जुल्म हो तो उस लड़ाई को लड़ो, लेकिन मजदूरों को बर्गलाना नहीं चाहिए। जिस प्रदेश का औद्योगिकीकरण इतने अच्छे तरीके से चल रहा है, उसकी शांति को तोड़ने की कोशिश किसी भी दल के लोगों को नहीं करनी चाहिए।

महोदय, भारतीय जनता पार्टी के लोग सुबह से यह चर्चा कर रहे हैं कि नंदीग्राम में ऐसा क्यों हुआ। मैं यह कहना चाहता हूं कि इसके बजाय हमें कहना चाहिए कि सरकारी तंत्र के माध्यम से किसान और मजदूर की कहीं मौत न हो। यदि इस प्रकार की कहीं घटना घट जाती है तो उसके लिए एक-दूसरे को सुझाव देना चाहिए। मेरा वाम दलों को सुझाव है, यदि कम्युनिज्म के रास्ते पर चलना है तो पश्चिम बंगाल में किसानों की जमीन को ज्यादा से ज्यादा मूल्य पर एक्वायर करनी चाहिए। हमारी सरकार ने मजदूरों के हित में काम किया है, जिसमें एसईजेड के तहत एक्वायर की जाने वाली भूमि पर 25 प्रतिशत लोकल मजदूरों को हम काम देंगे। इसलिए मैं वाम दल के साथियों से कहना चाहता हूं कि आप कांग्रेस के समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष तानेबाने से कुछ सीखने का काम करें कि जहां पर भी फैक्ट्री लगनी वहां पर लोकल मजदूरों को 25 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। नंदीग्राम में जो कुछ हुआ, उसको पूरा देश बुरा मानता है, लेकिन वाम दल के साथी केवल यह कहकर अपना पल्ला नहीं झाड़ सकते हैं कि देश के गृह मंत्री ने सीआरपीएफ और आरपीएफ नहीं भेजी। लेकिन हमारे गृह मंत्री ने यह कहा है कि सीआरपीएफ की दो बटालियन जिसमें करीब दो हजार कांस्टेबल होते हैं, वे कई महीने से वहां पर थे। फिर भी ऐसी नौबत क्यों आई? इसके लिए जो भी लोग दोषी हैं, उनको सजा मिलनी चाहिए, चाहे वे किसी भी दल के लोग हों। इसलिए मैं वाम दल के साथियों से निवेदन करूंगा कि जिस प्रकार से कांग्रेस शासित राज्यों में और खास तौर से हरियाणा प्रदेश में किसानों के साथ न्याय किया जा रहा है, उसी तरह से यदि आप भी किसानों को उनकी जमीन का ज्यादा मूल्य देंगे, मजदूरों को नौकरी देंगे तो नंदीग्राम जैसी घटना देश में दोबारा नहीं घटेगी। इसलिए मैं सभी साथियों से निवेदन करता हूं कि भाषणबाजी को छोड़कर नंदीग्राम में एवं पश्चिम बंगाल में शांति के लिए मिलजुल कर काम करना चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय : मेरे पास बोलने वालों के काफी नाम हैं चूंकि मंत्री जी ने 6 बजे जवाब देना है, इसलिए मैं चाहूंगा कि सदस्य अपना भाषण चार से पांच मिनट में समाप्त करने की कृपा करें।

PROF. M. RAMADASS (PONDICHERY): Respected Deputy-Speaker Sir, our Party, PMK, participates in this discussion with a very heavy heart and we register our deep anguish over what has happened in Nandigram. All the incidents that have taken place have pained us and the entire Parliament should express its sentiments to the people of West Bengal who have lost their lives, property and everything.

Now, we do not want to politicize the issue and take political advantage. But Mr. Swain has provoked me to make one or two observations. He asked what has the Congress Government or the Congress Party been doing in this issue. I would like to inform him, although he is not present here now, that the Government, under the leadership of Dr. Manmohan Singh, has come out with a beautiful land policy as far as SEZ is [\[MSOffice68\]](#) concerned.

They are going to bring an Act for rehabilitation and resettlement of those who are likely to be affected by the acquisition of land. Madam Sonia Gandhi has already clearly indicated that no fertile land will be taken over for the formation of SEZs. Hon. Minister has tried his best to make the position of the Congress Party clear. Therefore, there is no question that the Congress Party is not doing anything.

Shri Swain was exuding confidence that over a period of time the BJP would come to power in West Bengal. I am only wondering that this is the greatest joke of the year, rather the greatest joke of the decade that BJP is going to form a Government in West Bengal. We would be happy if fifty Members of BJP come to this Parliament in the Fifteenth Lok Sabha. It is because their behaviour, their disruptions in the House and the manner in which they are doing it, have all pained the people. So, they are not going to be returned. He was talking about the Communists. He has not understood the history. He has not studied Das Kapital. He is not aware of the dogma of capitalism, the labour class, how this Party has played its role in forming the secular credentials in this country.â€ (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN : I have read it. You can discuss it with me. â€ (Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Swain, please do not disturb.

â€ (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN : Sir, he took my name and said that I have not read it. I am only saying that I have read it and he can discuss it with me. ... (Interruptions)

PROF. M. RAMADASS : There is no problem. We are friends and we can discuss it.

He should not undermine the contributions made by this political Party. â€ (Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Only the speech of Prof. M. Ramadass will go on record.

*(Interruptions)**

PROF. M. RAMADASS : Mr. Deputy-Speaker, Sir, what should not have happened, had happened in West Bengal. Let us try to forget the past. At the same time, the Party in power must also understand that there has been lawlessness in the State and the Government could not carry on its constitutional responsibilities as per the provisions of the Constitution. Therefore, hereafter the Government should be alert and try to restore law and order. It should not say that police was not able to enter; people were butchered and that farmers were killed. All these are no excuse. The Governor, I think, has added to the sensitivity of the issue by making a statement. What he should have done is, he should have sent a simple statement to the Central Government explaining the position prevailing in West Bengal. It is for the Central Government to tackle the issue. I would only say that the Central Government and the West Bengal Government must work for a healing touch so that there can be peace and there can be order in the State.

* Not recorded

We should be able to provide adequate compensation. It should not be just monetary compensation. I would feel that a job should be provided, as a bread winner, to one person in every family which has been affected there. There is no point in giving Rs. 1 lakh or some other monetary compensation. That would not suffice for the people who have made sacrifices. They should be provided with jobs.

There should be a national policy as far as the SEZ is concerned. What we have to learn from this episode and experience is that whenever people oppose any move and if it is a genuine opposition, the Government must bow its head.

As far as the SEZ is concerned, land is the most important input. Today, land is a symbol of social status for the people. Land is a source of livelihood. Therefore, if you take away land, people develop a sense of alienation. When they develop that sense of alienation, they oppose it tooth and nail. So, we should understand the feelings and sentiments of the people before taking over the land. The Government should evolve a uniform policy, which should be applicable to all the States.

In our view, the Government can launch SEZs because they have got their own advantages. They would provide employment; promote exports and also bring about rapid economic development in the country. It would definitely hasten the process of nine per cent growth rate in the Indian economy. Therefore, they are necessary. At the same time, we should realize that this concept of SEZ also produces counter effects, as has been shown by a number of evidences and research reports that we have had.

We should have following ingredients in the national policy on SEZ. One is that the Government should not intervene in the acquisition of land.[\[MSOffice69\]](#)

Let the forces of supply and demand in the market decide. Let the buyer and seller of the land decide the price at which the land can be acquired. If the farmer is willing to sell and the buyer is willing, let them settle at a price and then give the land. If the Government intervenes there, you are creating an imperfect situation where the farmer is at a loss. Therefore, the farmer should not be made to lose his property there and that should be taken care of. Whenever it is necessary, it should be only a barren land, uncultivable land and not the fertile land. That should be taken into consideration. Whenever the farmer wishes to give, it should be given on the basis of lease for 50 years or 60 years and each farmer who gives land, must be able to get a share in the company so that whenever there is a profit for the company, it will go to them. The jobs should be given to the persons who are displaced by the land policy. So, the Government should take an enlightened view and try to create SEZ without affecting the farmers. This is the greatest lesson that we have learnt from the Nandigram episode. We pray Almighty God giving the will, let this kind of Nandigram episode not recur in the future.

17.31 hrs.

(Mr. Speaker in the Chair)

SHRI ASADUDDIN OWAISI (HYDERABAD): Sir, the discussion under Rule 193 has two parts to it. One is about the SEZ and the other is consequent large- scale violence.

As far as SEZ is concerned, this is a concept which has been borrowed from China. In China, you do not have democracy. The land can be acquired. But the law which is prevalent in our country – the Land Acquisition Act – talks that the land can be taken only for public purpose. Now, how long can the Indian system manufacture industrialists? How long are we going to make these individuals millionaires, billionaires or trillionaires? Even in a country like the United States which is known to be headquarters of capitalism, the US Supreme Court in the famous Detroit case and recently in 2005 in *Kelo vs. City of New London* have ruled that land should not be given. If the UPA Government is going to bring in a legislation, it should very clearly say that any industrialist or any company who wants land, let them go directly and purchase the land. Why should the common man suffer?

Now, coming back to the violence which took place, Sir, the Indian political wheel has turned its full circle. As far as violence is concerned, especially against the minorities and the weaker sections in the last 60 years of our Independence, there are many black marks on the Congress Party. There are many marks and scars on the BJP. And now the same is there on the Left Parties, viz, CPI(M). A startling revelation was made when last year only the Sachchar Committee came out with its startling findings as to what has happened in West Bengal.

Sir, I had been to Nandigram in the month of March and I have seen what has happened over there. I am surprised to hear the speech of the hon. Member, Mohd. Salim who is not present here now. The history tells us that Sirazudullah was deceived by Mir Jaffer. So, the poet has said very good thing. Instead of

saying Jaffer as 'Danga', he could have said, *...(Interruptions)

MR. SPEAKER: That will be deleted.

â€¦ (Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI : Did you understand what I said? ...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Dr. Dome, I have already done it. Please sit down. Please take your seat.

â€¦ (Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI : I am a Muslim from Hyderabad and not from Nandigram. You cannot calm me down. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER: There is no question of calming you down. You need not look at him. You look at the Chair. Dr. Dome, please sit down.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Shri Owaisi, you also do not abuse your colleagues in the House.

â€¦ (Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI : Sir, I have not abused. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER: I have deleted. You please continue your speech.

â€¦ (Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI : Sir, I will never question your decision.

Coming back to the violence in Nandigram, the West Bengal Government wrote a letter on 27th October whereas the firing happened in March. Why did you sleep for six months? You have failed in discharging your constitutional duty to protect the people.[\[a70\]](#)

* Not recorded

It is a fact that there is no more distinction left in West Bengal between the cadre and the Government. There is no distinction left now. Why is it that you have to resort to your cadre? I would request the hon. Home Minister, through you, Sir, that the Ministry of Home Affairs should hire the CPI (M) cadres as consultants to deal and tackle the naxalism! The Government of Andhra Pradesh should disband the Greyhound Force and include these people because we can learn more from them. Where did you get the weapons from? I can understand the Maoists have weapons. Where did you get the rifles from? How did you shoot those people? Where did you get the firm arms from? So, for six months, you have been sleeping here. It is high time that West Bengal realised it. The reason that I have said is this. The Indian political wheel has turned its full circle after what you have done to the Muslims. Who has rapedâ€¦*

MR. SPEAKER: No. This is not right. I will not allow this.

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): This should not go on record.

MR. SPEAKER: Do not do this. Do not try to create complications.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : I am really disheartened here. By sitting here for the last five hours, I have listened to the so-called secular parties' speeches. Because of political convenience, you do not want to criticize what has happened in Nandigram because you are looking into 2009. I am telling you that rule of law, principles will tell you who has committed wrong. Every time, Gujarat and Godhra are mentioned. Yes, there is no difference between Gujarat and West Bengal. There are only two differences. In Godhra in Gujarat, some people killed others and left the bodies. You have even taken away the bodies from West Bengal!...(*Interruptions*) You could not even find the bodies there. It is really surprising to see what has happened here today.

Can the Union Government give a clarification that what I am saying is right that it is the State Government of West Bengal which has recommended that visa extension should be given toâ€¦* You talk about Muslims. You talk about

* Not recorded

love of Muslims. â€¦ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: That name will be deleted. She is not here.

SHRI ASADUDDIN OWAISI: She is not even an Indian.

MR. SPEAKER: She is not here. I do not know whether she is an Indian or not. If one individual is staying in this country, therefore, it cannot be a matter of right.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : It is the late Prime Minister Shri Rajiv Gandhi who has banned that bookâ€¦...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Dr. Ram Chandra Dome, will you stop talking?

SHRI ASADUDDIN OWAISI : I am not from Nandigram. You cannot cow me down. Do not tell me like this.

अध्यक्ष महोदय : नाम लेने की कोई जरूरत नहीं है। That will be deleted.

श्री असादुद्दीन ओवेसी : स्पीकर साहब, आप जो कहते हैं, हमारे सर आंखों पर हैं। आप स्पीकर हैं।...(*व्यवधान*)

अध्यक्ष महोदय : जब आप सही बोलते हैं तब आपको इंटरप्ट नहीं करते, जब रूल के मुताबिक नहीं होता तभी बोलते हैं।

â€¦(*व्यवधान*)

श्री असादुद्दीन ओवेसी : मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ।...(*व्यवधान*)

MR. SPEAKER: The time given to you is over.

श्री असादुद्दीन ओवेसी : लीडर ऑफ औपोजीशन वैंट बंगाल गए। लेकिन क्या यह वहां जाकर एहसान ज़ाफरी की बेवा से मिलकर उसे पोछा दे सकते हैं? अहमदाबाद में जिन लोगों को कत्ल कर दिया गया, क्या आडवाणी साहब किसी एक से भी जाकर मिले? आप आज तक किसी भी एक आदमी से नहीं मिले और जिस शरूख की खियादत में कत्लेगारत गिरी हुई, आप उसकी दोबारा तारीफ कर रहे हैं।

MR. SPEAKER: Who are you talking of?

â€¦ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: It is not necessary to bring those names. I have a lot of respect for you. I have a lot of admiration for you. Please conclude.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : This shedding of crocodile tears here is very much surprising to me. It is an eye-opener that the secular parties which are here do not want to talk about Muslimsâ€¦(*not recorded*). Because of political convenience, you do not want to criticize the Left Front Government....(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: That will not go on record.

â€¦ (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: What are you talking about? I will see that. Bring this to me.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : What the Left Front Government has done is that these people have the Hobson's choice. You take it or leave it. The Muslims in West Bengal are suffering from fear syndrome. It is high time that the Union Government should send a Parliamentary Delegation. Let us go into what is happening....(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Please take your seat. Nobody is the sole champion of any community in this country.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : It is very true. Even the CPI (M) does not have the responsibility in upholding the secular values.

MR. SPEAKER: You are right. Please conclude now.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : In conclusion, I would request the Central Government to send a Parliamentary Delegation to Nandigram as it was done in the case of Gujarat also. Let the facts come out. Why is the CPI (M) hiding anything? What is their fault?

With these words, I conclude.

SHRI SUBRATA BOSE (BARASAT): I shall be very brief because the time is almost coming to an end and the Home Minister is to reply. A lot has been said on this question of Nandigram. As hon. Members have already mentioned, there was a proposal, only a proposal, to set up an SEZ in Nandigram. People perhaps became afraid of eviction from land and they started agitation. As soon as the agitation took pace, the hon. Chief Minister of West Bengal immediately announced that he would not acquire any land against the wishes of the people. That should have been the end of the agitation, but it did not. I would not like to go into details to tell as to what happened over these few months because it has already been dealt with. There is only one fact that I would like to mention. It is also a fact that while the agitation was going on by the Bhoomi Uchhed Pratirodh Samiti, a large number of persons were forced to flee from Nandigram. They came back. Now, some people have again been forced to go out. This is not an ideal solution. I think it is high time to find out as to where we have been having problems and it is not proper that this problem should be allowed to continue. I think, very determined efforts should be made to bring back peace in that area. I think that primarily the responsibility lies on the Government of West Bengal and also on the hon. Chief Minister. You will recall, Sir, that a very respected leader of my Party and who is also a very senior and respected leader of the Left Front was asked some months ago to organize an all-party meeting, which he did. But, unfortunately, that meeting was not successful. It was scuttled. I think the problem of Nandigram, the trouble in Nandigram, cannot be allowed to continue. There is no doubt also that in certain sections of the people, they have lost confidence in the Government. I think that the confidence has to be restored and I look upon the hon. Chief Minister of West Bengal to ensure that the confidence is restored. He should now take the lead to bring back peace in Nandigram. I appeal to all parties to cooperate to bring back peace in West Bengal and Nandigram, in particular.

SHRI SANAT KUMAR MANDAL (JOYNAGAR): Mr. Speaker, Sir, I would like to say a few words about this issue. The recent incident at Nandigram in West Bengal is most unfortunate and highly atrocious. As through wide media coverage, it is evident that the prevailing state of affairs of people is very much deplorable there. On behalf of my Party, RSP, I appeal to all political parties as also the Government, the incumbent Government and the people to restore peace and normalcy in the affected region in Nandigram.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर) : महोदय, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं सुबह से बैठकर इस डिबेट को सुन रहा हूँ।

सबसे पहले सुषमा जी के नेतृत्व में वहां जो डेलीगेशन गया था, उसके एक सदस्य के रूप में मैं नन्दीग्राम गया था। इसलिए मैं यहां जब बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ तो मैं केवल हवा में बातें नहीं कर रहा हूँ, मैं वहां की स्थिति देखकर आया हूँ।

आज मैं देख रहा हूँ कि नन्दीग्राम की घटना पर बड़ी राजनीति हो रही है। कांग्रेस की तरफ से प्रियरंजन दा ने जैसा वे बंगाल में तीखा बोलते हैं, वैसा तो नहीं बोला, लेकिन थोड़ी हिम्मत की है, वह भी तब, जब कम्युनिस्ट साथियों ने उन्हें थोड़ा भड़काया। इसलिए मैं अपने कम्युनिस्ट साथियों को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने प्रियरंजन दा से कुछ अच्छी और सच्ची बातें बुलवाने की कोशिश की है। हम भी सरकार में रहे हैं और सरकार के दबाव से वाकिफ हैं...(*व्यवधान*)

MR. SPEAKER: I hope it was a humour.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : हमें सरकार का दबाव मालूम है और यह जो सरकार की बात कही गयी है, चूंकि सारी बातें आ चुकी हैं, इसलिए मैं उनको रिपीट नहीं करूंगा और मैं कोई ऐसी बात नहीं कहूंगा जिससे, नन्दीग्राम का माहौल पहले ही खराब है, इस सदन का भी माहौल खराब हो।

मैं अपनी सीपीआई(एम) के साथियों से कहूंगा कि जब माइनारिटी का कोई व्यक्ति बोले तो उसे इतना जोर से डांटने का काम मत कीजिए। इस देश के संविधान में आर्टिकल 30 के अंतर्गत माइनारिटीज के कुछ राइट्स हैं, उनकी इज्जत आपको भी करनी चाहिए। बहुत सख्ती से आपने ओवैसी साहब को डांटा, लेकिन उन्होंने कहा कि वे नन्दीग्राम के नहीं बल्कि हैदराबाद के हैं, इसलिए वे आपकी डांट से डरे नहीं...(*व्यवधान*)

श्री राम कृपाल यादव (पटना) : आप माइनारिटी के हितचिन्तक कब से हो गए हैं?

श्री अनिल बसु (आरामबाग) : आप तो राम भक्त हैं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, छोड़िए इस बात को।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मैं मावर्स-भक्त नहीं हूँ।

अध्यक्ष महोदय : आपको जिसकी भक्ति करनी है, उसके लिए आपको पूरा हक है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मैं तो खुदा को मानता हूँ, उसके लिए मुझे इनके सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है। मैं आपके साथ ही डेलीगेशन में सउदी अरब गया था। वहां मैं उमरा करने भी गया था और वहां वही जा सकता है जो मुसलमान होता है। इसलिए मुसलमान होने के लिए मुझे सीपीआई(एम) के सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : वह तो उसके खिलाफ जाता है।

MR. SPEAKER: You were a very valuable member of the Delegation.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मुझे यह लग रहा है कि इस पूरी घटना के बारे में कांग्रेस के साथियों ने बोला तो है, लेकिन वे अन्दर से बहुत खुश हैं। न्युविलयर डील पर जब चर्चा हो रही थी, उसके बारे में जब भी सरकार की ओर से कोई छोटा सा बयान आता था तो सीपीआई(एम) के साथी बड़ी-बड़ी प्रेस कॉन्फ्रेंस करते थे, प्रेस के लोग दोड़कर कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर में जाते थे। गुरुदास दासगुप्ता जी, सीताराम येचुरी जी और करात जी की बातें छपती थीं। हम लोगों की कोई बात टीवी पर आती ही नहीं थी, सभी जगह यही लोग छाए हुए थे। आज कल स्पेस बढ़ गया है। न्युविलयर डील पर इन्होंने पहले बोल लिया, लेकिन जब से नन्दीग्राम की घटना हुई, तब से इनको यह डर हो गया है कि यदि हमने चुनाव करवा दिया तो केरल और पश्चिम बंगाल में जीरो पर आउट हो जाएंगे। इसलिए ये लोग डर से बोल नहीं रहे हैं। कांग्रेस इसका पूरा फायदा उठा रही है। हम लोगों को भी यह अच्छा लग रहा है। मैं तो नया चुनकर आया हूँ, मुझे लग रहा था कि चुनाव हो जाएंगे, लेकिन नन्दीग्राम की घटना ने कांग्रेस के लिए आवसीजन का काम किया है। मुझे दुख इस बात का होता है कि वहां अकलियत के लोगों का खून बह रहा है, वहां इतनी बड़ी तादाद में अकलियत के लोग मारे गए। मैं खुद नन्दीग्राम गया था। ...(व्यवधान)

श्री राम कृपाल यादव : गुजरात की घटना के समय आप कहां थे?

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : महोदय, मेरे लिए यह बात कहना बहुत जरूरी है क्योंकि ये लोग बार-बार गुजरात की बात कहते हैं, लेकिन जब गुजरात में आग लगी थी, उस समय ये लोग पटना में बैठकर बयान दे रहे थे। आडवाणी जी के नेतृत्व में जब वहां डेलीगेशन गया था।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप ऐसी-ऐसी बातें बोल रहे हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आडवाणी जी के नेतृत्व में जब डेलीगेशन गुजरात गया, उस समय आडवाणी जी होम मिनिस्टर थे और मैं सिविल एविएशन मिनिस्टर था। मैं आडवाणी जी के साथ वहां गया था। मुझे याद है कि उसी दिन बालयोगी जी का देहान्त हुआ था। गुजरात में जलती हुई आग में सबसे पहले जाने की हिम्मत हमने की थी। आप बैठकर सिर्फ बयान दे रहे थे।...(व्यवधान) मैं सिर्फ विषय पर बात कहना चाहता हूँ लेकिन मुझे बार-बार इंटरप्ट किया जा रहा है। मैं जानता हूँ कि आपका स्नेह और आशीर्वाद मेरे साथ रहता है। उसकी लिबर्टी लेते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि पूरे देश में इस तरह की चर्चा हुई है। मैं सीपीआई(एम) के बारे में जानता हूँ कि आपने समरकन्द, बुखारा में क्या किया, चेचन्या में क्या किया, पूरे सीआईएस कन्ट्रीज को आपने कैसे कब्जा किया, वहां मस्जिदों और मस्जिदों को बंद किया। हम यह भी जानते हैं कि आपकी मुसलमानों के बारे में क्या राय है, लेकिन मैं बोलना नहीं चाहता हूँ क्योंकि हमारे पास आज समय की कमी है। लोग जानते थे कि आप बड़े सेकुलर हैं, आप तो बहुत अच्छे हैं, आपका लाल झण्डा हम थाम लेंगे, लेकिन इस घटना से आपको जितना नुकसान हुआ है उसकी आप कल्पना नहीं कर सकते हैं।...(व्यवधान)

श्री अनिल बसु : आप भी तो लाल झण्डे में थे।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आप सत्तर कमेटी रिपोर्ट की चर्चा करते हैं और गुजरात से तुलना करते हैं। ओवैसी साहब ने गुजरात से तुलना की, तो उनको सत्तर कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर यह तुलना भी करनी चाहिए कि भारत में अगर कहीं मुसलमानों की पर कैपिटल इनकम सबसे खराब है तो वह पश्चिम बंगाल है और सबसे अच्छी गुजरात में है। [\[R71\]](#) मुसलमानों का परकैपिटल इनकम अगर सबसे अच्छी है तो वह भाजपा शासित राज्य गुजरात में है। आपने मुसलमानों की हालत क्या की, यह पूरा देश और यहां के मुसलमान भी जानते हैं। आप सिर्फ उनके लिए नारा लगाते हैं, लेकिन मुसलमान इससे खुश होने वाले नहीं हैं। मैं कांग्रेस पार्टी के लोगों से कहना चाहता हूँ कि अगर गुजरात में इतना कुछ होता तो पता नहीं आप क्या करते। इसलिए मैं कांग्रेस पार्टी के सदस्यों से अपील करना चाहता हूँ कि भले ही आप कम्युनिस्ट पार्टी की मदद से सरकार चला रहे हैं, अगर आपने नन्दीग्राम की घटना के लिए वहां की सरकार के खिलाफ एक्शन नहीं लिया तो आपको और कम्युनिस्टों को देश का मुसलमान अलग-अलग नजरिए से नहीं देखेगा, वह एक ही पैमाने पर आप सबको देखेगा।

MR. SPEAKER: Nobody represents the entire community. Do not say these things.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : मैं उस कम्युनिटी की बात कर रहा हूँ जिसका मैं सदस्य हूँ। अगर मैं उसके हित की बात नहीं करूंगा तो फिर क्या करूंगा।

MR. SPEAKER: I also told him that you cannot speak on behalf of the entire community.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : माइनोरिटी तो संविधान का शब्द है। उस पर जितनी ज्यादातियां हुई हैं, उन्हें हम भूल नहीं सकते। इस पूरे मुद्दे पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि नन्दीग्राम की जो घटना हुई, उससे पहले छोटा अंगनिया और गड़गोता में भी घटनाएं हो चुकी हैं, जिसमें 40 लोग मारे गए थे। दोषियों को पकड़ने के लिए जब सीबीआई तलाश रही थी, जो अकलियत को मारने में एक्सपर्ट हैं, वे लोग नन्दीग्राम में पकड़े गए, *

MR. SPEAKER: Do not mention those names. It is not permissible under the rules.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : दो अपराधी पकड़े गए।

अध्यक्ष महोदय: यह ठीक है कि दो अपराधी पकड़े गए, लेकिन किसी का नाम न लें। आप तो मंत्री भी रह चुके हैं इसलिए आपको सब मालूम है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : यहां पर ऐसे-ऐसे लोगों के नाम लिए जाते हैं,

अध्यक्ष महोदय : जब हम वहां बैठते थे, तब भी हम कहते थे कि ऐसा नहीं होना चाहिए।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : इस संविधान ने हमें इजाजत दी है कि जो समाज के कमजोर तबके हैं, पिछड़े, दलित और अविलयत के लोग हैं, उनकी डिफाजत की जाए। इसीलिए बीजेपी अविलयत की डिफाजत की बात करती है। अगर हम ऐसा करते हैं तो आपको क्यों परेशानी होती है, क्या आपने ही अविलयत का पेटेंट करा रखा है। इसलिए अगर उन पर जुल्म होगा तो हम उसके खिलाफ आवाज उठाएंगे। आपने हिन्दुस्तान के अविलयत के लोगों को सिर्फ वोट ही माना है, जबकि हम उन्हें इस देश का सम्मानित नागरिक मानते हैं। इसलिए हमारी विपक्ष के नाते यह जिम्मेदारी है कि जो भी इस मुल्क में पैदा हुआ है, उसकी पूजा पद्धति कोई भी हो, उस पर अगर जुल्म होगा, तो भारतीय जनता पार्टी उसके खिलाफ आवाज उठाएगी। अगर हम ऐसा करते हैं तो आपको परेशानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि आपने कोई इस मामले में पेटेंट नहीं करा रखा है।

अध्यक्ष महोदय, हमें नंदीग्राम पर आपका संरक्षण चाहिए। आप भले आदमी हैं, अच्छे आदमी हैं। आपका हम पर रनेह भी रहता है। आपकी बड़ी इज्जत है, मैंने यह सब देखा है। मैं भी आपके साथ गल्फ गया था। लोग आप पर भरोसा करते हैं। मैं कोई राजनीति नहीं कर रहा हूँ, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप अपने प्रभाव का इस्तेमाल कीजिए और नंदीग्राम के अविलयतों, दलितों और पिछड़े लोगों को सहाय दीजिए। इतिहास इस बात को लिखेगा कि अध्यक्ष महोदय ने इस विषय पर चर्चा कराई। आप इस सरकार को डांट पिलाएं, क्योंकि हमारी बात तो ये सुनते नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय : हम तो सभी को कहते हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : आप वैस्ट बंगाल सरकार को भी डांटिए।

अध्यक्ष महोदय : डांटने के लिए ही तो मोशन एलाऊ किया है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : जब मैं पहली बार इस सदन का सदस्य चुनकर आया था, तो मैं आपको सुनता था और आपको टीवी पर देखता था। हमने यहां नीचे बैठकर आपसे बहुत कुछ सीखा है, क्योंकि आप सत्ताई की तरफ रहते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप केन्द्र सरकार से कहें कि भले ही उसे नंदीग्राम से ऑक्सीजन मिल गई हो और वह न्यूविलयत डील करे, लेकिन इस मुद्दे पर भी ध्यान दे। कांग्रेस पार्टी अगर सरकार चलाने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी को दबा रही है तो ठीक है, खूब दबाइए, लेकिन नंदीग्राम के लोगों को जरूर न्याय दीजिए। इतना ही कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

MR. SPEAKER: This last sentence I agree with you.

SHRI ABU HASEM KHAN CHOUDHURY (MALDA): Thank you Mr. Speaker Sir for having given me this opportunity. 'Nandigram' issue has become a popular issue today and that is why you have given us the opportunity to debate on it.

Sir, many small and mini Nandigrams have happened in these 30 years in West Bengal, but other than West Bengal, no State or the Parliament has taken interest to listen to us. So, it is very kind of you to have given this opportunity.[\[r72\]](#)

I would like to thank the electronic media, many Political parties, intelligent people of West Bengal and last but not least, the intellectuals of West Bengal who had leaning towards Left but they all came out. The public opinion is ripe to change.

Sir, in 30 years, Left Front felt that distribution of the land and giving to the poor has been an excellent job that they have done. It is true; the consecutive election results showed that the land distribution to the poor has an impact on the result of the elections. With that confidence, Buddhadeb Bhattacharya ji, without consulting people have started his Special Economic Zone. We see many times, the advice of Jyoti Basu, the Former Chief Minister has been ignored. When the BDO announced about the land acquisition of Nandigram, there was trouble. Not enough information was given, and the people were scared that their survival, their land, everything they had will go away. They encircled the Panchayat office. Police uniformed cadre and anti-social elements of Left parties attacked the innocent people who had come there for getting information, for knowing what had happened to the land. In that clash, 11 people died. Then again on 14th of March, in Nandigram, the protesters had anticipated a response from the police. So, they had placed women and children in front of the March to deter the police from instigating the violence. But then, again, police and so-called terrorist, anti-social elements were on the one side; on the other side were the innocent people. Again there was a clash. Those who have eye-witnessed the situation told us that when the protesters were running away, fleeing, then the assailants chased them and shot the fire. It is very unfortunate. Who gave the permission to the police to shoot the innocent people? It would also have been quite reasonable to use non-lethal crowd dispersal equipment rather than shooting them.

Sir, even 11 months down, we see that the people who rose in revolt against the SEZ situation, they have been killed, raped, and all other mishaps have happened. The eminent Left Historian Mr. Sarkar compared Nandigram riot with that of Gujarat. He says that in Gujarat situation, the Government was quiet for some time.[\[r73\]](#)

18.00 hrs.

The same thing happened in West Bengal as well under Shri Buddhadeb Bhattacharjee.

Sir, the former Finance Minister of West Bengal, Shri Ashok Mitra says: – he wrote on November 14 in *Anandabazar Patrika* – "Till death I will remain guilty to my conscience if I keep mum about the happenings in Nandigram." *â€¦ (Interruptions)*

MR. SPEAKER: As it is your maiden speech, I am not opposing. That is not the rule. You need not quote. You just give the substance of that.

SHRI ABU HASEM KHAN CHOUDHURY : He said that those against whom I am speaking have been my comrades at some point or the other.

The High Court of Kolkata has also expressed its opinion that this has been absolutely unconstitutional. Also our Governor, Shri Gopal Krishna Gandhi has said that there has been a war zone, and the situation is unlawful and unacceptable.

The National Human Rights Commission have also said that the incident in Nandigram is just like the incidents that happened in Gujarat in the aftermath of Godhra incident.

Sir, according to the Report, there were a lot of poor people who had been killed, butchered and raped. Shri Buddhadeb Bhattacharjee has shown his moral will. He has never listened to the advice of Shri Jyoti Basu. He has asked him to call the meeting of all the parties instead of sending the Police. All these have created the problem. Nandigram issue is not just the one issue. In West Bengal, this highhandedness running of the Government is always there, and the people have suffered for the last 30 years under the rule of the Left Front.

MR. SPEAKER: I compliment you for your maiden speech.

Now, the hon. Home Minister.

â€¦ (Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, my name is also there. Please allow me to speak.

MR. SPEAKER: How long will you speak?

SHRI BASU DEB ACHARIA : I will take five minutes.

MR. SPEAKER: Your five minutes will be 50 minutes!

â€¦ (Interruptions)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY (SABARKANTHA): Sir, my name is also there. Please allow me to speak also. *...(Interruptions)*

MR. SPEAKER: He is everybody's target. Now, Shri Basu Deb Acharia.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, what has happened today in the city of Kolkata has been happening in Nandigram. *...(Interruptions)*

MR. SPEAKER: You can strictly speak only for five minutes.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, the fundamentalist and the extremist forces were ganged up in the State of West Bengal to destabilize a popular Government, which got the massive mandate in 2006 Assembly election. *...(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Let us extend the sitting of the House by another 45 minutes. This extension includes the time to be taken for the reply of the Home Minister.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, we cannot forget what happened on 12th December, 1994 when a large number of sophisticated arms and ammunition were brought to West Bengal and dropped in the district of Purulia, which is my district.

Sir, the main accused in that conspiracy, Mr. Peter Bleach made a statement while he was in the jail that they brought those arms to use against the Left Front Government of West Bengal and also to use those arms in the next Assembly election which was held in March 2006.[\[h74\]](#)

The main accused was released by Shri L.K. Advani, when he was the Deputy-Prime Minister-cum-Home Minister—*(Interruptions)* A canard is being spread...*(Interruptions)*

SHRI KHARABELA SWAIN : This is wrong...*(Interruptions)*

SHRI BASU DEB ACHARIA : When he was the Home Minister, Mr. Peter was released by him—*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: What are you talking?

SHRI BASU DEB ACHARIA : Mr. Speaker, Sir, he was released by him, when he was the Home Minister.

MR. SPEAKER: Was he released by him!

SHRI KHARABELA SWAIN : How can he say it?...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: I do not remember.

—*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Hon. Members, I earnestly request you to cooperate. He is making a statement; if he is making it with a sense of responsibility, I take it. But if it is wrong, I will look into it.

—*(Interruptions)*

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, I raised this issue when they were in power. In this very House, this issue was raised...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: We have all respect for him. If it is wrong, it would be withdrawn.

—*(Interruptions)*

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : कानून छोड़ता है।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, कानून छोड़ता है।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : होम मिनिस्टर को तो पावर ही नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, आप लोग जानते हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : ये अपना बयान वापिस लें।

SHRI UDAY SINGH : Sir, he must apologize...*(Interruptions)*

How can a Home Minister release anybody?...*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Sorry, I will not allow these types of cross questions. I earnestly request you to cooperate. It is already 6 o' clock.

—*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Probably, pardon was given. I do not know; pardon might have been given, I do not know.

—*(Interruptions)*

MR. SPEAKER: Pardon is given in the name of the President.

—*(Interruptions)*

SHRI BASU DEB ACHARIA: Sir, everybody knows that they have no power to issue notification in regard to land acquisition...*(Interruptions)*

SHRI UDAY SINGH : Nobody knows...*(Interruptions)*

SHRI BASU DEB ACHARIA : There was no notification in regard to SEZ also...*(Interruptions)*

SHRI BASU DEB ACHARIA : There is likely a proposal. But a canard was being spread there that a large quantum of land would be acquired for setting up of SEZ for chemical hub.

MR. SPEAKER: Mr. Acharia, within two minutes, you have to conclude.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Why two minutes, Sir? Give me some more time. They have already taken three to four minutes of time by interrupting me...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Please, conclude your speech. Let there be no disturbance, please.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, can we allow a State within a State? Can we allow a liberated zone within a State? What was happening during the last 11 months? Neither the Leader of the Opposition nor the Members, who spoke on this, have ever referred to the point that thousands of the people were uprooted, driven out of their homes, roads were dug up and destroyed and the entire area was separated; there was no development for the last 11 months. Can any State Government allow this situation? Now, the Leader of the Opposition has demanded the Central intervention.

Sir, when the same demand was made by us from that side in 2002, during the post-Godhra carnage, he refused to invoke the Article 355. He may remember that when we in this House made the same demand for invoking Article 355 for intervention of the Central Government; when the House made the demand to refer that matter to the CBI, he refused...(Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI : Did you accept CBI inquiry?...(Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA: You do not know. The CBI is inquiring.

MR. SPEAKER: Mr. Owaisi, please take your seat.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Mr. Acharia, you address the Chair.

â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER: Mr. Owaisi, this is not proper. You are not aware that there is a CBI investigation going on.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : By the Government?

MR. SPEAKER: Yes, by the Government. You are ignorant.

â€¦ (Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, during the last 30 years, there has not been a single communal riot in the State of West Bengal.[\[r75\]](#)

In the State of West Bengal the percentage of Muslim population is 26 per cent. There is complete harmony. â€¦ (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please conclude now.

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, time has come now. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER : Please. This is unfair. Both of you spoke without interruption.

â€¦ (Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA : Sir, almost all of those affected, except 300 people now staying in the rehabilitation centre have gone back. We should make an appeal to all to go back to their home and to villages. Nandigram was a peaceful area and there had not been any such incident during the last 30 years. So, we should try, all the political parties should come forward for restoration of peace and harmony so that the people can stay in their houses and development work can start and schools which are closed for eleven months can be reopened and peace and harmony is restored.

श्री मधुसूदन मिश्री : सर, मैं आपका शुक्रगुजार हूँ। यह पूरा सवाल ही मानवता का है। जब मार्च महीने में यह पूरा हादसा हुआ तो हम खेजुरी होते हुए सोनाचूरा गांव के अंदर गये थे, जहां 14 लोगों की हत्या हुई थी। खेजुरी का वह पूरा रास्ता ऐसा था कि जहां पर वह रास्ता बनाया गया था, वहां पर पुलिस छाजिर थी। गांव के अंदर बहुत कम लोग मौजूद थे, काफी लोग वहां से चले गये थे। उस वक्त भी आडवाणी जी गये थे और इस बार भी गये हैं। लेकिन मुझे इस बात की बड़ी हैरानी होती है कि उन्होंने आज जो पूरा इश्यु मानवता और एस.ई.जेड. के नाम पर उठाया है, लेकिन जैसे आज यह कहा गया है कि इनकी खुद की कांस्टीटुंसी में, गुजरात में इतने लोग मरे, लेकिन आज के दिन तक आडवाणी जी उनके पास नहीं गये। ...[\(व्यवधान\)](#) मैं इनसे ही कहना चाहता हूँ कि ...[\(व्यवधान\)](#)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन : यह पुरानी सरकार की बात है...[\(व्यवधान\)](#)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Why do you not listen? Do not be impatient. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER : You please address the Chair.

â€ (Interruptions)

श्री मधुसूदन मिस्त्री : मैं इनसे भी यही कहना चाहता हूँ कि उस वक्त नन्दीग्राम में करीब 55 लोग घायल हुए थे, जो नन्दीग्राम हास्पिटल में थे और जो सीरियसली घायल लोग थे, वे तुमलुक हास्पिटल में थे। इस बात को एक हफ्ते से ज्यादा हो चुका था, जिसमें दो औरतों के साथ रेप भी हुआ था। मैंने रिपोर्ट भी लिखी, मेरे पास उनके नाम भी हैं, मैं यहां बताना नहीं चाहता हूँ, परंतु स्टेट की ओर से वहां कोई मदद नहीं दी गई थी। हास्पिटल के अंदर जो सेवाएं मिलनी चाहिए थीं, वे नहीं दी गई थीं, कम्पैनसेशन भी नहीं दिया गया था। इतना ही नहीं उन्हें सांत्वना देने के लिए स्टेट की ओर से कोई नहीं गया था। यह सबसे बड़ी बात है, जो मैं आपसे बता रहा हूँ।

श्री बसुदेव आचार्य : आप सच बोलिये, गलत मत बोलिये। वहां हैल्थ मिनिस्टर खुद हास्पिटल गये थे।

श्री मधुसूदन मिस्त्री : मुझे दूसरी हैसानी इस बात की है, मुझे डाइकोटोमी है। मैं सच ही बोल रहा हूँ। इसमें डाइकोटोमी यह है कि...(व्यवधान) आप मेरी बात सुनिये।

DR. RAM CHANDRA DOME (BIRBHUM): The Health Minister has gone there. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER : Please sit down Dr. Dome.

â€ (Interruptions)

MR. SPEAKER : Do not record anything else except the speech of Shri Mistry.

(Interruptions)* â€

श्री मधुसूदन मिस्त्री : आज सुबह से हमने देखा कि मि. सलीम और मि. दासगुप्ता अपनी रिस्पॉसिबिलिटी शर्क कर रहे थे कि सैन्ट्रल गवर्नमेंन्ट ने फोर्सेज समय पर नहीं भेजी, जिसकी वजह से डिले हुआ है और उसी वजह से यह हुआ है। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि इतने लोग इनके यहां से बोले, क्या अपने कैडर को आपमें से किसी ने भी क्विटसाइज किया? क्या कैडर स्टेट से ज्यादा बड़ा है? स्टेट के रूल्स के अंदर क्या स्टेट उसे अलाउ करेगा? वह लिबरेटिड है, तो स्टेट को उसके ऊपर अपना कंट्रोल जमाना है या उनके कैडर को जमाना है। इसी तरह से उनकी आर.एस.एस. ने गुजरात में उस वक्त जो कुछ किया, उसे उन्होंने भी क्विटसाइज नहीं किया। वे लोग भी इतने ही जिम्मेदार हैं। उन्हें बोलने का कोई मोरल राइट नहीं है और आज के दिन जब ये पूरी चीज सामने आई है तो फिर भी वे अपने कैडर को क्विटसाइज करना नहीं चाहते हैं। मैं इनसे यह कहना चाहता हूँ कि क्या आपकी कैडर आपके राज्य से बड़ी है? आपने अभी तक जो कुछ भी तथ्य यहां रखे हैं, उससे साफ होता है कि क्या वैस्ट बंगाल की सरकार नन्दीग्राम में लॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन रेस्टोर करने में फेल हुई है? आपकी इनवैस्टिगेशन एजेन्सीज क्या कर रही थीं? ...(व्यवधान)

ये सब सवाल इनके सामने हैं। मेरी इनसे विनती है कि मेहरबानी करके दूसरे किसी को एवयूज मत करिये**[b76]**। कांग्रेस को एवयूज मत करिये। आपके जो फेल्योरस हैं, उन्हें आप एडमिट करिये और वहां पीस रेस्टोर करने में जितनी जल्दी काम करेंगे, उतना ठीक रहेगा।

* Not recorded

गृह मंत्री (श्री शिवराज वि. पाटील) : अध्यक्ष महोदय, आज यहां जो चर्चा हुई है, वह बहुत ही स्वागतयोग्य है। जिन-जिन सांसदों ने यहां चर्चा करने के लिये पहल की है, उन सब का आभार मानना चाहिये और अभिनन्दन करना चाहिये। मैं आपका भी अपनी तरफ से इस के लिये शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

अध्यक्ष जी, यहां एक बात सदन में जो नजर आई, वह यह रही कि सब तरफ से कहा गया कि जो कुछ वहां हुआ है, उसके लिये सब के मन में दुख की भावना है और सब ने अपनी तरफ से सहानुभूति प्रकट की है। चाहे बायें ओर से बोलने वाले हों, चाहे दायें ओर से बोलने वाले हों या सामने बैठे बोलने वाले हों...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : और वेयर के सामने वाले हों।

श्री शिवराज वि. पाटील : सब ने अपनी ओर से अपनी संवेदनार्य और सहानुभूति व्यक्त की हैं। जब भी किसी मनुष्य का खून बहता है, किसी महिला पर अत्याचार होता है या किसी का घर जलता है या किसी को अपना घर छोड़ना पड़ता है या इस प्रकार का दुख झेलना पड़ता है, जो न्याय के बगल में खड़े होने वाले लोग हैं, उन्हें बहुत दुख होता है। सदन को भी इसका दुख हुआ है। आज की चर्चा से यह मैसेज जाना चाहिए। कि ऐसी घटनायें कहीं भी नहीं होनी चाहिये। भारत के किसी भी प्रान्त में नहीं होनी चाहिये, किसी शहर या देहात में नहीं होनी चाहिये।

अध्यक्ष जी, सब से बड़ी बात जो हमारे सामने आयी, उसे देखना पड़ेगा कि वहां क्या हुआ? वहां पर वास्तव में क्या हुआ? शायद राज्य सरकार के मन में वहां कैमिकल हब बनाने की बात आयी। उन्होंने सोचा कि नन्दीग्राम के पास कैमिकल हब अच्छी तरह से हो सकता है। सरकार ने और मुख्यमंत्री जी ने मुझे बार बार टेलीफोन पर बताया है कि उन्होंने जमीन लेने के लिये किसी प्रकार कोई नोटिफिकेशन नहीं निकाला है और सरकार वह जमीन लेना भी नहीं चाहती है। उन्होंने यह बात बार-बार बाहर और हर जगह कही है। जब लैंड एक्विजीशन की बात आयी तो वहां के काश्तकार गुरुसे में आये, उन्होंने एजीटेशन किया कि उन लोगों की जमीन बहुत ज़रखेज़ है, उसे नहीं लिया जाना चाहिये। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि पश्चिमी बंगाल की सरकार ने खुलेआम कहा है कि सरकार वह जमीन नहीं लेने जा रही है। उन्होंने इसमें कोई एम्बीनिटी नहीं रखी, उनके कहने में किसी प्रकार का कोई अंतर नहीं था कि हम यह जमीन नहीं लेने जा रहे हैं। अगर काश्तकार नहीं बनाने देना चाहते हैं तो यह नहीं बनेगी। सरकार इसे हलदिया या आईलैंड में बनायेगी, ऐसा कहा गया। एजीटेशन समाप्त हो जाना चाहिये था, मगर नहीं हुआ। वयों नहीं हुआ, इस पर हमें सदन में बैठकर सोचना जरूरी है। जब तक उसके बारे में सोचेंगे या तथ्य हमारे सामने नहीं पहुंचेंगे, कहीं ऐसा दूसरी जगह न हो जाये तो उस मामले का निपटारा करने में कोई मदद नहीं होगी। मगर यह बात सही है कि वहां पर एजीटेशन समाप्त नहीं हुआ है और शायद कम्युनिस्ट पार्टी के बाजू में खड़े होने वाले विपक्ष के लोग वहां से निकल गये। वे अपने घर से दूर हो गये और अपनी जमीन से दूर हो गये। **[s77]** हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि 10-11 महीनों तक वे दूर रहे। उनको वापस भेजने का प्रयास किया गया। पुलिस की मदद से प्रयास किया गया मगर नहीं हो सका। पुलिस की मदद से जब प्रयास किया गया और खासकर वैस्ट बंगाल की पुलिस की मदद से प्रयास किया गया तो वहां की हालत ऐसी हो गई कि फिर कुछ और जानें चली गई। पुलिस की

जानें चली गई, निरपराध लोगों की जानें चली गई, और कुछ लोगों की जानें चली गई। किसी की भी जान जाए, वह जान ही है। उसके लिए हमें दुःख होना बहुत जरूरी है। उसके बाद की परिस्थिति वहां ऐसी हो गई कि वहां पर कोई प्रयत्न करने के बाद भी एक बार और फायरिंग हो गई और उसमें भी जानें चली गई। ऐसे दो-तीन बार वहां फायरिंग होकर जानें चली गई। उसके बाद ऐसा कदम उठाया गया कि जो लोग वहां से बाहर चले गए थे, उनको वापस लाया गया और यह बहुत अच्छी चीज़ है। ऐसा ही होना चाहिए। किसी को अपना घर छोड़कर बाहर जाने के लिए हमारे देश में कोई मजबूर नहीं कर सकता और नहीं करना चाहिए। अपना खेत छोड़कर जाने के लिए किसी को मजबूर नहीं करना चाहिए। खुद अपने घर में वह आ जाए तो किसी को उसके बारे में कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए, मगर वैसा हुआ। उसके बाद जो हुआ, उसको भी ध्यान में रखना जरूरी है। माफ करना, मैं यहां पर किसी पक्ष का अभिविवेक लेकर नहीं बोल रहा हूँ, माफ करना, मैं किसी को दोष लगाने के लिए या हमारा कोई कर्तव्य नहीं है, हमारा कोई दायित्व नहीं है, यह बताने के लिए नहीं कह रहा हूँ। जो हमारी बात समझ में आए, जो तथ्य हमारे सामने आए, आपके समक्ष हम रखना चाहते हैं और उन बातों को ध्यान में रखकर आप जैसा मार्गदर्शन करेंगे, वैसा सरकार काम करेगी, यह मैं कहना चाहता हूँ। मगर इसके बाद की जो बात हुई, वह यह हुई कि कुछ लोग जो वहां से बाहर गए थे, वे तो आकर बस गए मगर कुछ लोग और बाहर चले गए। वे ऐसे लोग बाहर चले गए जिनको मन में डर लगा कि पहले हमने विरोध किया था इसलिए हम यहां नहीं रह सके। वहां से बाहर जाकर भी उनकी व्यवस्था आज भी वहां की सरकार ही कर रही है, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है। उनके खाने-पीने और रहने का इंतज़ाम वहां की सरकार द्वारा ही हो रहा है। मगर इन सारी चीज़ों में और एक चीज़ ध्यान में लाना जरूरी है और हमारे देश में लाना जरूरी है कि हम देखते हैं कि ऐसा कोई अधिवेशन नहीं जाता हमारी संसद का जबकि हमने उसमें कानून और सुरक्षा की चर्चा नहीं की हो और कोई ऐसा वक्त नहीं, कोई ऐसा सत्र नहीं जाता है कि जिस समय प्रांत की सरकार को या केन्द्र की सरकार को इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता। मगर वहां की हालत ऐसी हो गई कि वहां पुलिस नहीं जा सकती थी, वहां पर सरकारी नौकर भी नहीं जा सकते थे, वहां पर कुछ लोगों के कहने से ही काम चलेगा। ऐसी परिस्थिति लोकतंत्र में कैसे बनी रह सकती है? इसको तो रोकना पड़ेगा, किसी को तो रोकना पड़ेगा। केन्द्र सरकार द्वारा तो रोकने का सबाल ही पैदा नहीं होता क्योंकि जिस प्रकार की घटना है और जिस प्रकार का हमारा संविधान है, उसको देखते हुए यह तो संभव नहीं है। एक गांव हो या दो गांव हों, वह कोई बड़ी जगह नहीं है, लिबूलाइज़ हो तो कोई डरने की बात नहीं है, मगर यह माहौल पैदा होना कि वहां कोई सरकारी नौकर ही नहीं आ सकता, ऐसा नहीं किया जा सकता। अगर एक जगह पर ऐसा हो गया तो दूसरी जगह पर भी होगा, एक प्रांत में होगा तो दूसरे प्रांत में भी होगा। अनेक प्रांतों में अगर ऐसा हो गया तो उसके बाद सरकार की कोई साख नहीं रहेगी और वहां पर सरकार नहीं चलेगी। इस प्रकार की परिस्थिति वहां पर पैदा हुई थी और उस परिस्थिति का निपटारा करने के लिए जो भी कदम उठाए गए हैं, मैं समझता हूँ कि किसी ने कुछ कहा और किसी ने कुछ कहा। मैं तो यहां पर एक जज के नाते बैठकर इसको दोष दे रहा हूँ या इसको संरक्षण दे रहा हूँ, यह काम मैं नहीं कर सकता, कोई भी नहीं कर सकता, जब तक हम पूरी तरह से नहीं देख सकते। मगर कुछ गलतियां हुई हैं उसमें। पहली दफा गलतियां हुई हैं, दूसरी दफा गलतियां हुई हैं, तीसरी दफा गलतियां हुई हैं या चौथी दफा गलतियां हुई हैं, उन गलतियों को समझकर फिर नहीं होना है, इसके लिए कदम उठाना जरूरी है। इसके लिए आज क्या करना जरूरी है? यह परिस्थिति देखने के बाद सबसे अहम बात है कि आज क्या करना जरूरी है। मैं ऐसा समझता हूँ और मेरे ख्याल से पूरा सदन यह मानता है कि वहां पर किसी भी पार्टी के लोग हों, किसी भी धर्म के लोग होंगे, किसी भी भाषा के लोग हों, कोई भी विचार रखने वाले लोग हों, अगर उनको घर छोड़कर मजबूरी में बाहर जाना पड़े तो वह हम सब लोगों की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे वापस आए। खास कर स्टेट गवर्नमेंट की जिम्मेदारी है और वह इस जिम्मेदारी को निभा रही है। मैं उसमें दोष लगाने के मूड में नहीं हूँ, मैं दोष लगाना नहीं चाहता। ...**(व्यवधान)** हम सब लोगों की जिम्मेदारी है, उनकी यह जिम्मेदारी होनी चाहिए। ...**(व्यवधान)** सारे लोगों को, चाहे किसी भी पार्टी के लोग हों, वे कम्युनिस्ट पार्टी के लोग हों, कांग्रेस पार्टी, तृणमूल कांग्रेस या बीजेपी के लोग हों, किसी के लिए भी अपना घर छोड़ कर बाहर जाने जैसी परिस्थिति वहां नहीं होनी चाहिए। उन्हें अपने घर तक लाकर, उन्हें वहां बसा कर और उन्हें पूरी तरह से संरक्षण देने की जिम्मेदारी वहां की सरकार को प्रमुख रूप से करनी जरूरी है, ऐसा मैं बड़ी विनम्रता से कह रहा हूँ। मैं यह नहीं कहता कि वे यह नहीं कर रहे हैं, वे करते होंगे और अगर वे नहीं करते होंगे तो उन्हें ऐसा करना चाहिए, हमें यह बोलना चाहिए। अपना-अपना बोलने का तरीका है, आप गालियां देकर बोलते हैं और हम सभ्य भाषा से बोलते हैं। यह अपना-अपना बोलने का तरीका है, जिसे जो तरीका अपनाता है, वह अपनाए।

दूसरी बात यह है कि उनकी प्रोपर्टी की पूरी रक्षा होनी चाहिए। उनका अगर घर, खेत एवं नौकरी है तो उसकी रक्षा होनी चाहिए। उन्हें किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होनी चाहिए। तीसरी बात यह है कि उन्हें पूरा कम्पनसेशन मिलना चाहिए। सरकार ने कम्पनसेशन देने की घोषणा की और एक-एक लाख रुपए का कम्पनसेशन दिया। हम अपनी और अपनी सरकार की तरफ से भी सिविलोरेटि रिप्लेसमेंट एक्सपेंडीचर के तहत किसी की मृत्यु हो गई है तो उसे हम कम्पनसेशन एक लाख रुपए देने तक की इजाजत देते ही हैं। मगर शायद कोर्ट ने कहा है कि पांच-पांच लाख रुपए कम्पनसेशन देना चाहिए और वह देना चाहिए। अगर किसी बहन की कोई मजबूरी हो गई है तो उसे वे जिस प्रकार से कम्पनसेट कर सकते हैं, पूरी तरह से कम्पनसेट करना मुश्किल हो जाता है, परन्तु जिस प्रकार से भी कम्पनसेट कर सकते हैं, उस प्रकार से करना चाहिए। एक बहुत अहम चीज़ यह है कि इस चीज़ को पार्टी लाइन पर नहीं ले जाते हुए, एक प्रकार से, धार्मिक या जाति के नाम पर कोई कार्यवाही नहीं होनी चाहिए। अगर यह चीज़ें, हम सब मिल कर, यहां कर सकें, तो मैं समझता हूँ कि हमने अपना दायित्व पूरा किया, ऐसा कहा जा सकता है। एक बात इस संबंध में यह पूरी गई कि यहां पर क्या माओइस्ट लोग भी आ रहे थे और काम कर रहे थे। यहां पर कुछ भाईयों ने कहा कि माओइस्ट लोगों का इसके अंदर कुछ हाथ था। हमसे पूछा जाता है कि आपका इसमें क्या कहना है। हमें बहुत सारे मालुमात होते हैं, लेकिन यहां पर बैठे हुए हमारे जो वरिष्ठ साथी और दूसरे साथी हैं, वे अच्छी तरह से जानते हैं कि हम पूरे मालुमात होने पर भी सारा कुछ सामने नहीं रखते हैं और वह इसलिए नहीं रख सकते हैं कि उसका जो फायदा होना चाहिए, वह फायदा होने की बजाए नुकसान न हो। मगर मैं यह कहना चाहूंगा कि हमारे पास जो इन्फोर्मेशंस हैं, उनके मुताबिक कुछ लोगों ने वहां जाकर दंगे-फसाद करने के लिए लोगों को उकसाने का प्रयत्न जरूर किया है, कोशिश की है। वे सामने नहीं आए हैं। मगर उन्होंने कोशिश जरूर की है। उन्होंने वहां कुछ हथियार भी लाने की कोशिश की है। वे मालुमात हमारे पास हैं। अगर इस प्रकार का कोई प्रयास हमारे समुद्र के किनारे के हमारे देश के एक हिस्से में हो रहा है तो हम सब लोगों की जिम्मेदारी होती है कि पार्टी अभिविवेक छोड़ कर, किसी पार्टी एवं प्रांत का ध्यान न करते हुए देश की सुरक्षा के लिए जो करना चाहिए, वह जरूर करना चाहिए ।

मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि वहां जो हथियार मिले हैं और वहां की जो मालुमात हैं, उसे ध्यान में रखते हुए हमें एहतियात रखना जरूरी है। मुख्य मंत्री जी और गवर्नर साहब से भी मेरी बात होती है और जब भी बात होती है तो मैं ऐसा समझता हूँ कि उनका समाधान होता है और जब वे मुझ से बात करते हैं तो हमारी समस्याओं का भी समाधान होता है। जब हमें समाधान नहीं होता, तो हम कहते हैं कि उस काम को ऐसे नहीं, ऐसे कर लिया जाए, तो अच्छा रहेगा और वे भी हमें ऐसा ही बोलते हैं और इस प्रकार हम एक दूसरे को समझाकर, एक दूसरे को बताकर काम कर लेते हैं। इसीलिए जब हम सरकार से बात करते हैं, तो कोई मुश्किल नहीं आती है, लेकिन जिन लोगों को पूरी तरह से मालुमात नहीं है, उनकी तरफ से बात आती है, तो हमें बहुत मुश्किल आ जाती है, क्योंकि उसमें सारी चीज़ों में एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण करने की बात आ जाती है, जो नहीं होनी चाहिए। मगर मैं यह बात बड़ी नम्रता के साथ कहना चाहता हूँ कि यह बात हो।

महोदय, सी.आर.पी.एफ. की बात आई है। मैं उसे बहुत लम्बा नहीं करना चाहता और उसे रिपीट करने की जरूरत भी नहीं है। वैस्ट बंगाल की गवर्नमेंट अच्छी तरह से जानती है कि हम क्या कर रहे हैं, लेकिन सदन की मालुमात के लिए मैं फिर से एक बार रिपीट करना चाहता हूँ। हमारे पास जो 8 लाख पैरामिलिट्री फोर्सेस हैं, उनमें से 6 लाख फोर्सेस इंटर नैशनल बॉर्डर पर तैनात हैं। जो 2 लाख फोर्सेस बची हैं, उनमें से करीब पौने दो लाख फोर्सेस अलग-अलग जगह पर तैनात

हैं और बाकी जो हैं, वे ऐन वक्त पर काम आने के लिए हैं। रिजर्व फोर्स का मतलब आजकल अलग हो गया है कि जिन को फोर्स देते हैं, उन्हें वे अपने पास रख लेते हैं। वे वापस नहीं भेजते हैं और वह रिजर्व फोर्स नहीं रहता है। वह पूरा का पूरा परमानेंट फोर्स हो जाता है। हमारे साथी हमें लैटर लिख देते हैं कि हमें इतनी फोर्सेस दे दो। हम उन्हें कहते हैं कि आप ऐसा मत करें। हम आपकी मुश्किल जानते हैं। मगर यह जरूरी नहीं है कि उस मुश्किल को हम कहीं एक्सपोज करें। हम एक्सपोज तो कभी भी नहीं करते, करेंगे भी नहीं, क्योंकि आपकी मुश्किल हम से ज्यादा कौन जानता है। हम सब इस सुख-दुख से गुजर रहे हैं। इसलिए हम जानते हैं, इसलिए हम कुछ नहीं करेंगे, मगर यह होता है। सी.आर.पी.एफ. का मामला यह है कि कहीं भी घटना हो गई, तो दूसरे दिन हमारे पास लैटर आ जाता है। हम जितनी मदद कर सकते हैं, उतनी हम करते हैं। इस मामले में भी हमने की है। वैंस्ट बंगाल की गवर्नमेंट से भी मैंने बात की है और मैंने कहा है कि यदि बहुत जरूरी है, तो मैं इंताजाम करूंगा और मैं आपको बताना चाहता हूं कि कहीं से फोर्सेस विथड्रॉ की हैं, ट्रेनिंग में जो लोग हैं, उन्हें विथड्रॉ किया गया है और वहां फोर्सेस भेजी गई हैं। वैसे भी उनके पास दो बटालियन थीं। उनकी कोई शिकायत नहीं है और शिकायत भी होगी, तो हो सकता है कि पूरे एरिया में डिप्लाय करने के बाद, कहीं ज्यादा फोर्सेस की जरूरत पड़े। किसी ने मांगा और हमने सोचा कि नहीं, ऐसा नहीं है। यह नहीं है, जल्दी मिल जाए, तो ठीक है। मैं इतनी बात समझ सकता हूं। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं दूंगा। यह बात सिर्फ इतनी ही है।

महोदय, जो दूसरी बात है, वह एस.ई.जैड. की बात है। एस.ई.जैड. की बात यहां कही गई है और मेरे ख्याल से इस बारे में हमारे साथी मंत्री, श्री प्रियंजन दासगुंभी जी ने कहा है। इस चर्चा का महत्वपूर्ण अंग यह है कि किन मुद्दों पर हमारा मतैवय हो रहा है। यह हमें समझ में आता है। बी.जे.पी. के साथियों और कांग्रेस के साथियों की तरफ से एक ही आवाज उठी है और वह आवाज यह है कि अगर आपको जमीन लेनी है, तो ऐसी जमीन लीजिए जो उपजाऊ नहीं है, जो जमीन खेती के लिए ज्यादा मौजूद नहीं है, वैसे जमीन लीजिए और ऐसी जमीन लेने के बाद, आप उन्हें काफी कंपेंसेशन दीजिए। कंपेंसेशन देने के बाद भी यदि उस जमीन से आगे चलकर उन्हें कोई प्रॉफिट मिलता है, तो उस प्रॉफिट में भी उन्हें शेयर दीजिए। चौथी बात यह है कि अगर दे सकते हैं, तो उसमें उन्हें एम्प्लायमेंट दे दीजिए। यह करना बहुत जरूरी है। आज हमारे एग्रीकल्चर मिनिस्टर साहब यहां हैं। हम सब लोग यहां बैठे हुए हैं। वे जानते हैं कि हमें एग्रीकल्चर पर बोझ कम करना है और इंडस्ट्री में या सर्विसेस में उसे बढ़ाना है, तो उसका रास्ता निकालना पड़ेगा और वह रास्ता ऐसा ही हो सकता है कि जो जमीन उपजाऊ नहीं है, वहां इंडस्ट्री को खड़ा करें और एग्रीकल्चर का बोझ वहां शिफ्ट किया जाए। जिसकी जमीन हम इंडस्ट्री के लिए ले रहे हैं, उसे मुआवजा काफी ज्यादा देना चाहिए। इस बात का विचार हमारी नेता ने भी किया है, हमारी सरकार ने भी किया है और आप सब ने भी यही विचार प्रकट किए हैं। इसलिए इस बारे में लैंड एक्वीजीशन और रीहैबिलिटेशन की पॉलिसी बनाई जा रही है। लैंड एक्वीजीशन की पॉलिसी के अंदर, एक्वीजीशन के बाद जो सौलेशियम दिया जाता है, अगर मार्केट प्राइस 1 लाख रुपए है, तो उसके ऊपर हम सौलेशियम 35 परसेंट देते हैं, यानी उसे 1 लाख 35 हजार रुपए दिए जाएंगे। हमने इस बारे में सोचा है कि हम इस सौलेशियम को और कैसे बढ़ाकर दे सकते हैं। अगर किसी एक काम के लिए जमीन ली है और उस जमीन को दूसरे काम के लिए लेते हैं या उससे मार्केट में पैसा कमाते हैं, तो उसमें से भी किसान को कुछ मिलना चाहिए या नहीं मिलना चाहिए, इस पर विचार हो रहा है। यदि किसी की कंपनी है, तो उसके शेयर उसे मिलने चाहिए या नहीं, इस सब पर विचार हो रहा है।[\[r78\]](#)

यह पॉलिसी हमारी सरकार के सामने है और वह आपके सामने भी आएगी। आप उसके अंदर जो विचार देंगे, उनको हम देखकर आगे चलेंगे। सबसे अहम बात यहां जो हो रही है, वह यह है कि इस तरह का वातावरण नहीं होना चाहिए। आज कलकत्ता में जो कुछ हुआ, उसके बारे में मुझ से पूछा गया, लेकिन मुझे जहां तक मालूम है कलकत्ता में बदकिरमती से एजिटेशन शुरू हो गया और रास्ते के ऊपर बाल्डर्स रखे गए, गाड़ियों को रोका गया और पथरावबाजी हुई, जिसमें 50 लोग घायल हो गए, डिप्टी पुलिस कमिश्नर भी घायल हो गए। पुलिस ने कंट्रोल किया है। रेपिड एक्शन फोर्स भी लगाई गई और उसने भी कंट्रोल किया। उन्होंने और राज्य सरकार ने बताया कि सिचुएशन थोड़ी टेंस है, लेकिन पूरी कंट्रोल में है। आर्मी की तरफ से पलैंग मार्च भी करवाया गया।

सबसे बड़ी बात फियर साइवलोजी की है। अगर डर की भावना मन में पैदा हो और जो नीति नियम से जीता है, उसके मन में ज्यादा डर पैदा हो तो अच्छी बात नहीं है। वह डर कम करने के लिए सरकार को कदम उठाना जरूरी है। प्रांत की सरकार अगर कदम उठाती है, तो हम जरूर उसके बाजू में खड़े होंगे। लोगों की मदद से भी डर की भावना कम करना जरूरी है। डर बढ़ाने की बजाए डर कम करने का काम हम सभी को मिल कर करना चाहिए। आडवाणी साहब ने दो-तीन सुझाव आर्टिकल 355 के संबंध में दिए थे। मैंने व्यक्तिगत तौर पर होम सैक्रेटरी, चीफ सैक्रेटरी से अनेक बार बात की है, हमने गवर्नर साहब से भी बात की है और डायरेक्टिव्स दिए हैं कि कोई भी अपना घर छोड़ कर बाहर नहीं रहेगा। जिसको भी लाया गया है, उसे पूरा प्रोटेक्शन दिया जाएगा। कोई भी मोटर साइकिल या किसी भी वाहन पर वहां घूमना नहीं चाहिए और किसी को डराना नहीं चाहिए। इसके अलावा हमने कहा है कि इनका पूरा कम्पेंसेशन इन्हें दे दिया जाना चाहिए और इसके साथ हमने यह भी कहा है कि जिस प्रकार से आपको फोर्सेस की जरूरत है, पीसफुल एरिया से आप फोर्सेस विड्रॉ करके, जहां जरूरी है, वहां डिप्लाय कीजिए। इसके बाद भी अगर हमारी मदद की जरूरत है, तो हम आपकी मदद जरूर करेंगे। मेरे ख्याल से हमारे बीच में चर्चा हो गई है और इस चर्चा में ही समाधान है। एक ताल्लुका या दो ताल्लुका कुछ दिन के लिए अगर डिस्टर्ब रहा तो यह चर्चा का विषय जरूर है। जैसा कि सुझाव आडवाणी जी ने दिया कि डायरेक्टिव्स होने चाहिए आर्टिकल 355 के बाद भी, हमने ऐसा करने का प्रयास किया है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : मुझे दो-तीन छोटे सवाल पूछने हैं जो मैंने अपने भाषण में कहे थे। एक सवाल है वहां ऑल पार्टी डेलीगेशन भेजने के बारे में आपकी क्या राय है? मुझे लगता है कि पहले यही अप्रॉव गुजरात में अपनाया, यही अप्रॉव अयोध्या में अपनाया और मुझे लगता है कि नंदीग्राम में भी अगर सब दलों का एक प्रीनिशियमंडल जाएगा तो उसका लाभ होगा।

दूसरा सवाल है कि सार्वजनिक रूप से वहां के राज्यपाल ने एक बयान दिया है। मुझे लगता है कि केंद्र सरकार की ओर से उनसे रिपोर्ट मांगी जाए कि आज नंदीग्राम की स्थिति क्या है? यहां पर कुल मिलाकर जो अलग-अलग बातें कही गईं, उस संदर्भ में उनके पास जो इनपुट्स हैं, उन्होंने वहां जाकर जो देखा है और ऐसा वक्तव्य दे दिया है जो साधारणतया कोई राज्यपाल नहीं देता, जब तक उनको ऐसी जानकारी न हो। इसलिए नंदीग्राम की पूरी रिपोर्ट आप उनसे मंगाइए।

तीसरी बात है कि आज जो कोलकाता शहर में घटनाएं हुई हैं, उसका क्या कारण है? उसमें अगर आपने कहा है कि आर्मी को पलैंग मार्च करवाया गया है तो क्या आपसे पूछा गया, क्या आपसे कहा गया कि वहां स्थिति इतनी खराब है? [\[r79\]](#) क्या आपसे कहा गया कि हमको आर्मी की जरूरत है, स्थिति इतनी खराब है? मेरे ये तीन सवाल हैं।

SHRI GURUDAS DASGUPTA : I have heard attentively. He said that the Government of India accepts the presence of naxalites in Nandigram, and that might have been the response of that. ...(*Interruptions*)

SHRI UDAY SINGH : No. He never said that. ...(*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DASGUPTA : Let him say that. Nobody needs to assist the Home Minister. ...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Why are you bothered? He could reply.

â€ (Interruptions)

SHRI UDAY SINGH : Sorry, Sir.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : Shri Advani, this is strange.

The point is, as I have understood him, he said that there was a presence of a group of naxalites there, who did not come in the forefront, but from the rear, they might have been involved in creating disturbances there. I would like to know this from him. Modern arms have been recovered from that area. What is the source of arms? Do they belong to the same people whom he describes as naxalites or they have been procured by the farmers? How those arms could have been there in the possession of peaceful farmers? This is question number one.

Secondly, he had a talk; Home Secretary had a talk with the Chief Secretary on a number of occasions and they have said that all the people who have left their homes should be sent back, and protection should be given. Is it a directive as Shri Advani has asked for or was it an advice?

श्री प्रभुनाथ सिंह : दो बातें हमें कहनी हैं। एक तो जानकारी लेनी है कि माननीय गृह मंत्री जी का जो बयान हुआ, वह इतना विद्वतापूर्वक हुआ कि हम समझ नहीं पाये, जैसे इन्होंने बताया कि एक बार भूल हुई, दो बार भूल हुई, तीन बार भूल हुई, चार बार भूल हुई तो किसकी भूल हुई, कैसे हुई, यह हम समझ नहीं पाये? लेकिन हम आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी से यह जानना चाहते हैं कि अगर किसी की भूल हुई तो उस पर क्या कार्रवाई हो रही है और राज्य सरकार अपने दायित्व का निर्वाह कर रही है या नहीं? गृह मंत्री होने के नाते आपका दायित्व नंदीग्राम के मामले में क्या बन रहा है? दूसरे यह कि घटना के बाद जिस तरह का बयान वहां के मुख्यमंत्री का आया है, इससे स्पष्ट लगता है कि वहां जो मुकदमे दर्ज हुए हैं, उनमें निष्पक्ष जांच राज्य सरकार नहीं कर सकती है। उच्च न्यायालय ने भी उस पर टिप्पणी की है। ऐसी परिस्थिति में आप सी.बी.आई. से जांच कराना चाहते हैं या नहीं, स्पष्ट बताइये।

MR. SPEAKER: Your leader has asked; we cannot go on like this.

SHRI AJOY CHAKRABORTY (BASIRHAT): I want to ask only one question.

MR. SPEAKER: What is the question?

SHRI AJOY CHAKRABORTY : How many persons have been arrested by the police?

MR. SPEAKER: This is a State matter; how can he reply to these details? No. This is the trouble. ये सब मुद्दे उठाने से काम नहीं चलता। Whatever you wish to say, you can say.

श्री शिवराज वि. पाटील : बहुत सारे प्रश्न पूछे गये हैं। अगर मैं कुछ भूल भी गया होऊं तो उनसे बाद में पूछूंगा।

आडवाणी जी के जो प्रश्न थे, उनमें पहला प्रश्न यह था कि 'is it possible to send an All Party Delegation?' This is a suggestion given by him; it is naturally before the House; we shall have to consult other parties and others, and then, we can take a decision. But at this point of time, I am not in a position to say 'yes' or 'no'. After consultation, we can say something.

I would have liked very much that the matter relating to the Governor would not have been raised on the Floor of the House.

MR. SPEAKER: I have said that it was so, but Shri Advani did not appreciate my submission.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: We do realize that the Governor is there and he is watching and reading the information from the Media and other places. He might have felt this way or that way also, but it is not proper for us to discuss about the Governor, on the Floor of the House.

MR. SPEAKER: It cannot be done under the rules also.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I may be excused, if I do not comment anything on that.

As far as the flag march by the Army in that area is concerned, it is not necessary for the State Government to consult the Union Government to obtain the assistance of the army. If the State Government comes to the conclusion, that it is necessary, even the Collector, even the Divisional Commissioner or even the District Magistrate can ask for the assistance, and that way they have done it. [\[MSOffice80\]](#)

I do not think either the Home Ministry or the Defence Ministry was contacted.

As far as the matter relating to CBI investigation is concerned, we shall have to understand that we are governed by laws in the country. Rule of law prevails here. Even if I want to send an investigating agency to any of the States to investigate, I cannot because that is not allowed by the Constitution. That is not allowed by the law. If you want that the

CBI should inquire into a particular matter, it is for the State Government to suggest that the CBI should inquire into it or the Court to suggest that it has to be inquired into by CBI. I think, in this case the matter has been referred to CBI and the CBI has been looking into this. This is about Shri Prabhunath Singh's question. I beg your pardon I have just forgotten the questions put by Shri Dasgupta.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : I had asked two questions. One, as far as I remember, you have agreed that there has been presence of a group of people from outside whom you describe as fundamentalists or extremists and they might have been responsible from the rear, not coming to the forefront, in creating disturbances. I wanted to know, by this do you accept that there have been naxalite people there who fermented the trouble.

Secondly, police or paramilitary forces have been able to discover large quantity of arms. What is the source of these arms? Where from these arms had come?

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: If you read the speech which has been recorded on the film and in black and white also, you will find that I have not said all that you are saying now. I have just said that some information is there. Please do not read anything more than that in my speech. I am certainly not going to discuss this issue in detail. If you ask for a discussion, I will collect the information and I will properly reply to your questions.

Secondly, all these details are not with me. These details are with the State Government. The State Government is actually in control of it. My difficulty is I cannot say that you cannot ask these questions to me. Very politely and humbly I have replied to your questions. But all these questions should have been directed to the State Government rather than to the Union Government.

MR. SPEAKER: Precisely, that is why such issues should not be discussed here.

14.17 hrs.

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at Seventeen Minutes

past Fourteen of the Clock.

(Mr. Speaker in the Chair)